

मांझळ

राजस्यानी माथा गाहित्व एव गरशति अवारमी वावानर ग् पृरमेराज रागीह पुरस्वार मृ पुरस्कृत उपावास

onqua

87

कृष्ण जनसेवी एण्ड को., बीकानेर



सस्करण 1990 पूल्य 35 रुपये मात्र लेखक रामनिवास शर्मा मुद्रक माखला प्रिन्टस

च दन सागर, बीकानेक

म्हारी वात

<u>भारतीय वित्</u>वास माय <u>अठारवी सुदी अ</u>न्तित्व री रक्षा रो मुग हो। गढ़ा राष्ट्र आपर अस्तित्व न राराण सातर जून रयो हा। वी बेळा तन्ता री ने हासत हुय सन इ री तो क्ल्पना ही करी आय सक। इ प्यास री नायिका भे<u>तनी आपर अतितत्व री</u> सात्र माय भटकती एक गाँँ है।

राजस्थान रो सम्बृति वृवानी रो है विलदान री है जौहर री है। इ राज राजस्थान रो रमणी लाम तौर सु क्षो मान मुस्तव चाव।

समाज अस्तित्व रों लोज माय भी जिल्म री भूल न मुलाय कोती सक है। धनकी जिल्मानी भूल मू अनिक्त ही। या आपरी अस्मिता री लोज गाय सामानी ही। पण समान वी र अस्तित्व न भुनाय न वी रा एक हम्मदास्त रूप ही रामणी जाव हो। पण गुननी आपर परम्परागत रूप माय शापरी नवा करों मा ूरी थीय करावको जाव हो।

प्रीरत री. आ महती "चढा रव व वा पत्नी भी हुन अर सामै-सामै सा भी । जे ननाम मा नी बच नव तो मिनल र सामै सोवणो अनारक मान । बामनी तो ववाचा चान । मा बच न लायरो समद्धा अस्तित्व मुनावणो चाव । परवार रा बूनी वडरमा मू सुहागण भागच री वृषा न्हाचो अर पूता पद्धो री आसीस पावणो चान ।

धनकी एक समस्या है। यो समस्या रो समाधान नीं तो धनकी र कन भर नों मुमाज री ब्यउन्या जन, पण धनकी पथय माय साम्योटी रवें। 1 म आपरा अस्ति व सोयन अस्मिता न राजः।

इण माय मन किती सफलता मिली इ बावत तो बिन पाटक ई बनासी १

हा सत्यनारायण स्वामी अर श्री भाणव तिवाडी बन्ध रो धणी काभारी ह जिना रो पूरो सहयोग मिलण सु ही पोथी छपाई जाम सनी।

थी कृष्ण जनसभी अर शी दीपच न सासला रो घणी आभारी ह जिना र उत्साह र नारण आ पोधी इण सोवण रूप मांय छप सरी।

आवातीत स 2044 प्राचीय श्रीक जीवनकेर —राष्ट्रविद्यास गर्मा

पणमानीता आंदरजोग हिन्ने जर राजस्थानी रा स्थात विद्वान

आचाय भी असपचार गर्मा न 13 वें जलमदिन र मौक धणमान समपण



बात पसवाको फोर। नूई बर पुराणी। पसवाह साम नूई बाता ह्रपर का जान कर पुराणी वार्ता भीष वह जान। पसवाह साम नूई अर पुराणी वार्ता भीष वह जान। पसवाह साम नूई अर पुराणी वार्ता रा क्रम इसो बात ने कान री नूई बात काल पुराणी अर काल री पुराणी वार्ता काल क्यांत री नूई बात काल पुराणी आरा साम ने रोह बोत जान। का कारावाद साम नूई कर पुराणी बाता मिल ने रोह बोत हुई बाता। एक जा समझी बाता भेळी हुव न मीटी मात विरक्षों सतावें। या बाता न बार बार कु वरने नेवाणी पह। व समझी बातां काल री सी लाग, पण बारो नितहांत बड़ी हो लाबी हुव। एण सारल इतिहास री होटी अर मोटी बातों काळ म मटक्यों हो रज्यू पिसरी री हाडी में बात रा भोजा। इलिय रो सक्ट उतरणा पछ मीटी मिती हाल का कर बीन परीछ्या भी सीरी हुव वर्षा रा साम न कुत मिन। दुण सीरवर साता र पावा न हुवरपों जी सीरी हुव अर सारमा न सुल मिन। दुण सीरवर साता र भोगी हुत कर री ही सुक सर ही

अ समझी बातों बहोत बरसा पक्षी री है। यम अ अयण आप ही यां र दरवाज कर आय न दाय न सहस्रहावण लाग जाय । हार न लारली बाता न हुन्द न सार करणी पहा न समझी बाता हरी हुंग न आश्या र लाम न कुन्द न सार करणी पहा न समझी बाता हरी हुंग न आश्या र लाम न कुन्द हुंग प्रमता पुमता प

रा राज सियासण दृष्ण लागस्या हो। फिरम्या रा नृष्टै उमरती ताक्त अक सागद दोना काची काळ्या चलायी जिल गृपराठा रो पाटलियो मरम्यो अर मुक्ता रो राज पराणी दृहं पडणी। राजपूतान रा राजा चीय देवता देवता कराल हुम्यमा। बासमळा री आस फिरम्या स अटक्योडी ही। अ समक्षी बाता काल री सी लाग है।

हृक्ठ भटकच्या । सुनताना छार भराठा छार रजपूती छार। अ सगद्धा पाणी र बुळबुना रीतर चाडीक ताळ उभरा पाद्या विसूजस्या‴ जिया बान्को स चाड।

भर बाद ै लाव बीड आदमानी आहु मुज़ाव होळ होळ गिगनार सी जबो बुदही। बादळा रा बीळा थोळा बुद्धी बीट र साव जिवबाड कर हा। बुदो है व बुज़ा बाट माण का बाद अर कण है बहाबाड वसवाड मार हा जाम नृहें थीनपी कण है बुदारों का दे जर कण है मूगो खबाड। बाद सी क्या ई सगर मुद्ध विश्वरों एउटी लाग हो पण विस्तवाद करती हो और है बुभावणों साग हो—गुहानराव रो सो। मचरी बातवा पून सुतर स्वार रो डांडों सु बुदुरीमुणी राम ही। खाण दक्यों हो तह म हास ब्यानी साळी जान बच्चों ही। है सो बाद में स्वार र स्वार जाव हो। सवार कम है या का नो नोव हो तो कण दे नामन उपस्ती का हो। सार का निर्मा हो। पत्योदो रोही सामन हो। पोहर लेक रात बसपी हो। सवार र सिहार माप पिता (री हुळ्की हळागे लोका मढ हो जिल्दर हो। वो बेग सूजियो दूगरी वन पूराणो चाल हो। सोच से मरघोटो घोडो योडी ताळ पछ आप री दारो साथ हाप पेर हा जाण जाय र पुराण दिलों न वर है जीव हो। उप री सांत दुव रीज वर २ळल साथारी हो पण चाल हमा हो जाण के त री मारग हुव । सारता पोड पिटला कोनी उप सूज पा पा छो आपर आपरा पीड और माह देवती। उपवासत को बेलो पहाह रो-सी हो। उग न को भी बेरो हो व उग र सवार ने कठीन वठ वावणो है। इस वासत साब केव बाल मूकाळी हूगरी नानी चाल हो।

बात धणी जूनी है। सतजुग री। जण राम वनवास भोगता हा। रावण सीता न हरन लयम्यो हा । सीता न वाछी सावण बासत राम वानरां-भालूवा री सेना बणायर नना माय धाबो करघो हो। धाद म लक्ष्मण र शक्ति बाण कामग्या हो। हडमान सजीवणी बूटी सावण जासत हिमालय पहाइ माथ गयी हो। पण सजीवणी वृटी री पचाण नी हुवण र कारण वा सगळो पहाड ई उठायर ले जान हो रण भरत सोच्यो क थी कोई राक्षस है जवी राम माथ नावण वासत पहाड से जाव है। आ सोचर बी बाण मारची। बाण सीघो हडमान र गोड माथ लाग्यो। हडमान र बाण री सागीडी लागण सु हाच र सहारे मुकाध माथ राख्योडी पहाड हिल्यो। इण हिलण र साम ई पहाड रो खूणो भटक सू ट्रटम्यो अर पून रा ववेडा झानतो कावती अठ आम पश्चिमो । जिन निन र पछ अर आज र दिन ताई आ हुगरी इडमानजी री इनरी र नाव सू जाणीज है। इसरी री चोटी माय हडमानजी री जेन बाती मण्डी । वनवी माथ साल-सास घवा फराव हो। पूर्य र दिन होणपुर, सरदूत्री कोट अर वदेरी सू जातरी देशिया करण बासूत आव । सिमानी रा बाव अर बाली रात जायण देव । दिनून पाछा दुर जीव ।

मुतर-सवार कठीन ई देस कोनी हो। सीघी वालतो जाव हो। इत मं विरावा में हुगरी म त्रवणवाली नाळी आयम्यो जिल राहोनू किनारा घोरा बा जावती इण नारण निरसा ढस्या पछ नाळो आ समळा फाड फासा सु भरधी रवती वर जिल नामत नाळ न ठावा ठावा पण मेसर पार करणो पत्रतो । थोहळी ताळ सूत्रत सुतर ताळ चेत चेत क्यर नाळो पार करण साल साढ रो होससो वयायो । योबीज ताळ स सवार नाळो पार करण भासरा जागण माय आयाया। वहरी सावळ टीकण

वती ही। टेचरी माथ री धाळी बगली क्लासपित र चाद जिसी सीव ही।

बारटभा, करा, सेजडा अर कोरों सू अरघोडा हा। नाळी मारग सू ज्यार पाच हाम नीवो हुय न बबतो हो। विरक्षा हुवती जण ढूगरी रो सगळो पाणी मसाडा मारतो नाळ मे समा जावतो। पाणी र साग गळगिवया, सुरी

नाळो पार करन भाकरार भाग्य भाष्य आयम्या। दूवरी सावळ दीवण सागगी ही। कोसा ताई साथी चौडी दूपरी उणन खाती सूणी भीत सिरखी साग ही। चादण स् धूप्याडी इनरी समदर स निकळत कलास ज्यु जगमग ्रिक्त है। दूसरी ही नहां से पूरण सामायो हो। वससी र सामै रुगत जोगन री सरा मुणीनम सामगी। मधन हुयोडो आर्यामधी इससार माप गाव हो बर सार-सार समळा सुणीनबा टेर सार हा। जायमियो आग आग माग हो —

> लका मोहे जावण दे, मोहं नाम जरूरी। रामण इजी री सीता नारी हर नीनी रावण बळ भारी। पतो लगावण दे, मोह नाम जरूरी लका मोहे जावण दे।

स्देश के प्रमुत्त माथ याप लाग ही, कीम्या साथ बाज ही। हरजस सुणता मुणतो मगन हुपाड़ो सवार प्राहर रो भारप पार करन आपूण न बालण लागमा। होळ होळ हुगरी री चडाई आवण लागमा। साढ कभी रासर, पलाण री चूटी फालर कावार सद्वाया अर हुठ उत्तरन मोटी भारर आप प्राम चालण लाम्यो। यणी ऊचाई आवण लागी अप गुणा री चडाई सक हुयी। सबार साड क जबार प्रमुख्य अर हुठ उत्तरन मोटी भार साई सक हुयी। सबार साड क जबार प्रमुख्य उत्तरन खेगडी र सार बढ़ी करियो अर मोरी रेडी र बाप दी। चार स्वाय अर सोरी रेडी र बाप दी। चार स्वाय अर साई र सार बढ़ी करियो साइ रासप प्रमुख्य कावी हुत्योश बोरो साइ र साम बरण साइ रासप अप गुफा कावी दुर्च्या। सबते व वृत्ति अर अप अप अप अर हुई। सबार ठावा राम मेनती चल्या चाला है। सोल स्वार स्वारी व्ययो जण साम बीस-तीस हाप खुली वालळ ब्यू निजर आई। हाय हुएस बनानी खुली जल्ळ ब्यू निजर आई। हाय हुएस बनानी खुली ता अर सोई। हाय हुएस बनानी खुली ता अर ही। मूल राप परकार बोरा प्रसुत्त व अभी ही। मूल राप परकार बोरा परवास हो। पुणा दन यहा ही। सूल राप परकार बोरा परवास हो। पुणा दन यहा ही।

योर अर छाणा अन नानी पडया हा। साली आसण विष्रपोडो हो। अेन नानी वमडळ पडयो हो। यूणी मं अेन चिमटो हैं रुप्योडो हो। यूणी म उठत पुत्र सुचण री चेतनता सालग पड हो।

सवार पगरक्षी कोलर पुष्पार वारण नन राखी खर नमडळ सूहाप पोवर पाणी पीयो। सलारो नरन पाछो <u>जायर</u> रती रो सिराणी सेवर सोवय्यो। हरिसजन रीलरोर साम नींट ई पतना बाथ उतरण सामगी। चुप्पी। मौत सो चुप्पी, जिनी जायपियों सूह्य ही का सुसाडा मू।

असे अस्ति हुवस्यों हो। बांद लायून न जावण लानायों हा। उत्तर सहर माप आली रात र जागरण री उदासी निजर आव ही। तारा दिश्य सागाया हा। ज्योरना लोभसारिका लाली रात सुरति सुन लेवन पाढ़ी घर जाव ही। पून री लाल म ठराव हो जाय जावती वेळा दा पाछी सुत हुढ न लार देल ही। कोण्य र पत मू अहता पूल घर रो मारण बताब हा। रात पोळी दवा मागारी ही। जायोज्या परमाती यावून लायया हा।

सवार पत्तवाशे कार न उठयो । हाय मूटा थायर वाणी सीतो अर दूगरी माथ जबन लाग्यो । दूगरी माथ षडक यो मारत तुनो हो ने हो । अंक मारत तो हो तुका र सार है खाती हुणो— जिका गुजारी रो बगर हो जबत सु भरपोडो । दूजी भारत हो दूगरी र ताकन बातरी सोता ताक— लाहो, यादो सीरो वण उजव-जायह । जातरी दिन रा है तूम मारत ग्र् दूगरी माथ बढ जावता अर वितृत गाधा तानी मारत म् हो नीन आय जावता । अंकलो बोन सो आदमी दूगरी माथ बढल यो हिमत है न करते मुख मारी। जदती अर उठयती बेठा पूरी प्यान रावको परतो । अंकर है पूज पूक अर लगावळ मू कियो रो पा वितळ जावतो तो बो सनद हाथ नीन भावतर में पर रामवारण हुय जावतो । बेन स बोकन जातरी माथ पूनता करता जरव स माहाह पायो बोठा देवता । इल वासता बातरी टार्स सवार मुका बनती हगर सू जरल व्यू हगला भरता भरता हुगरी माप बहायो। समली सामे लेक होटी धोक तिवारी हो। पवास जैन जातरा चोक में प्रवाद जातरा चोक में प्रवाद जातरा चोक में प्रवाद जाता है। मीठे तैल रा दीवा हो। साहे तेल रा दीवा हो। सही तेल रा दीवा हो। सही हो। हिन्दी ही जिनी सिंदूर लर मालीपाना साम-सागर लाप रो लाकार ई कोवण कागी हो। चारी रा लेक छतर देवळी माप चटक हो। दीव सू निकळत कालळ वगला म मांग स्काळी कर राखी हो। छतर री मोळी लाप रो रा प्रवास पुकी हो। धीम कन सूपियो रावयोडो हो। सामै पढ़ी वाली म चूरनो जर चिटवया चारयोडी हो।

अगूण आम में सफदी चमकण लागनी ही। जानता अधारा भागत भूत क्यू लखान हो। हाळ-होळ सपेंदी गरी लाल हुवण लागगी।

सूरज री पक्षी किरण सीघी व गती र सांव यहण लागगी। जागण बह हुयाची हा। सगळ श्रेष साग ई अब योगर व गता लार कुढ हा वठ पाणी पीवण साक जावण लागमा। जातरघा र पीवण जातर ई हो वण कुढ रूर् पाणी। सूरज री किरणां दूगरी माच बेक्ज लागमा। बावडो शुक्रा हा सूर दूर ताई पतरपांडे रोही वाजक म सिवान चर हा। स्वया चर म, चिह्न र मसुत रा टीमो लागमर जातिये टीळा व दरण लगगा।

भीड हुवण सुसवार <u>वाल कन</u> हो, <u>निसकारो जालर</u> उरम्यो हा। जयू-जयू भीड बिडण सामी, तो जान विरुत्ततो गयो। पुजारीजी इक्तारो सामै राख्या आंव्या गांच्या मुस्ताय रया हा। छमछीमया कन पडपा हा। कन पुगर सवार जयकार करन पण काली हाथ करपो। पुजारीजी महाराज आगी खुळी आक्ष्मा सु पुछुपो—कण जालो?

'नीच ता पोहर अंक रात गया ही पूगन्यो हो' सवार आग कयो— 'अठ अवार ई आयो हु।

सूरज बोहळो ऊचा चढायो हा । सगळी डूगरी तावढ में रमै ही । पून रा फटकारा जोर सूसाग हा । जातरमा रो टाळया नीच जावती दीख ही । डदा पोर सूदूगरी मरी ही। इन्ही दुकी श्राडक्या ई कभी दील ही। दूगरी री भाटपाम तळाव कन कमा आदमी बळप अर दूजा जिनावर गरमीगणा मा दील हा। पुत्रारीजी उठन इक्तारां छमछिमया, अर आसण जनती म रासर पटडो कर ॥ भाग लगायी। ताळी बजायर परसाद री बासी बार कर वर वरणो उबयो। सूह कन पडी, तुबी न ठावी रासर क्यो — पासी नीच हाला।

दोर्ने जला दुर पडधा।

भात बळीरा वयत हुयन्यो । दोन् जणा जीमर आप आपर मध लागम्या । सवार सान न पाणी पावण वास्त नीच आयम्या । पुत्रारीजी गुणा म जायर आहा हयग्या हा। सवार साढ न पाणी पायर पाछा आयो अर गुफार बारणे कन जायर सूनो सो दस्यो क बोहळी सारी चमचेडां गुफारी धात सु टिर ही। यो मूता-सूतो देखतो रैयो क नर क्यां काम विञ्चल हमन माना कानी आग सिरक है नादा न स्थ है अर उच्य से काम जाग्रत करन किया जबरदस्ती उणरे साग भोग कर ह । आग आपर सबध मे सोचण लागम्यो---हुआ स्तनजीवी चमधडा सुचणी बेसी शामी हुका प्रेम र वशीभृत हमरई ओ सगळो नाम नकह। ओ आखी ससार नाम रोही परिष्ट्रत रूप है। अ जीव गतु मिनखा सु ही मेळ साव । मिनल जीवां सू मिनता जलता है का सुघार रो साग सथन आपरा चैरी बणावटी बणायन राख है ना सगळी जीवण ही था सगळी बाता रो श्रेक छोटो सस्करण है। हुपाप करू हुतो पुष्य काई है अर ओ पुष्य है तो पाप काई है ? पाप कर पुण्य री सीमा निर्धारण रो ता व्हारो काम कोनी पण सगळी बातां करता धका पाप री सीमा में वडण रा विचार कोनी। तो ऐंद म्हारी इण र साग काई रिस्ती है जन मू ठावरा रो समाचार सुणता पाण मिलण बास्त बहीर हयन्यो । काई ओ आक्षण है ? आक्षण री व्याह्या कोनी । आ सोचता साचतासवार रो मायो पाप अर पुण्य र विच अचभेडा लावण छातस्यो । हारन सवार पसवाडो फार न आस्या मीच्या सोवण रो जतन करण लागग्यो । जीवण श्रेक विद्रम्बना है का सावा श्रर उळक्योदो मारण । जिता बो छावो है बितोई उळमणा सू भरपोहो है। श्रादमी वित्तोई रहस्यमय है जितो जीवण । <u>रण वास्त श्रादमी रो इतरो नाव है रहस्यमय, श्रर जीवण इण रहस्य रो रहस्यम्य पटळ</u> है।

सिहया परण कामणी हो। पुजारीजी थीया बाती करण वास्त गया परा हु। शवार वस्त पी पस्तवादा पेर हो। हाळ होळ रात री पादर साथी हुए ।। शवार वस्त हो उड उडर पुणा र बार आवण-जावण लागगी ही। क्षेत्रम रो चाद आग्र म उमरपो गोगी हा, क्रगता है आवणीजायी हो। पुजारीजी आरसी नरन पट बर पादा आवा।

राणा " पुजारीजी कवी की बाबवोडा सा लागी हो।"

नोई बतावा? मायको मन आवळ वावळ हुय रयो है।' राणा यद कुर दियो। झाम कोस्या— आयन् सत्ताह मुद्र करण बासत ही। झायो हो। यण पुन्त हुवण र कारण आयन बलत नोनी हो एण ज्ञारण बात नोनी हुय मकी।

आसण माथ बठता पुत्रारीजी नयो- अब आपा वावस सू बाता

पुजारीजी र सामन बटती घरो <u>राणा बोल्यो</u>—मन सनेसी मिल्यो है इक ठाकरसा <u>पीत सलम्या</u>। मन वेगो द गांव युनायो है। सूड माच समस्या री लगा मड ही जण वी आग वोल्यो—'आग थारी काह विचार है?

इत म बावाजी पूणी म खाणा नाखर पूक मारन आगी चेतन कर दी। छाणा होळ होळ जगण सामध्या। साग साम पूढी इ निकळ हो। खाणा मू निसरती तो म बाबा राजा रो मूढो पूर पूरन देख हो। उण हैं नारी भरपा— हा । घोडी ताळ ताई नाची भीत री छी मून बावरती। पछ बाबाजी बाव्या— बार जीव म नावडो है? इण बोल राजा र साम केक

जीवता-सो सवाल सरका दियो, जिल सु उलरो जी बाकळ बावळ हुवण सागम्यो । लारली समळी बात नृव सिर सु आंख्यां र साम नाचण लागगी । वान, जिक सुक्ण लागम्या हा, पाछा हरधा हुयग्रा। राणा कोई बोलतो। आप कमाया कामणा विणव दीज दोष। राणा मूर्ने हो, माठ सिरली। जोण श्रो सवान उणन नइ विणी और न पूछ्यो हो। खाणां री श्रोग बधगी ही। बावाजी री निजरा राणा नानी व्यान सू देख ही । बाज सू केई महीतां पसी री बात है जम को लेक लुगाई न लेयर खरबूजीकाट जावती अठ ठरन गयो हा। बाबजी क्षेक गरी हैंकारा भरधी- हूं।

सिक्या पहनी ही। नाव छोटो ई हो। कोई पचास घरा री बस्ती ही। ठाकरा रो गाव, वरसा री बस्ती। गाव र च्यारूमेर ख्वो छावण लागग्यो हो। रात जाप री लाबी चादर न सपेटणो सक कर दियो हो। पछेरू नीम-खेजढा री बाळवा र जिप्या बठा हा । भिगसर रो महीनो हो । अधार पणवाहो। दाफर की मोळी ही। टावर राली ओडर क्युडा म सोयग्या हा। लुगाया सासरा न छान म बाध दिया हा । राणो बासळ म चूतरी माथ बठी धूणी सप हो। भायला कन बठा हा। हनाया चाल रयी ही। इत म रावळ सु हलकारो मिलण रो सनेसो सेयर बायों। बावण रो पढ्तर सेयन बो पाछी गयी परी। पण राण रो मन कोनी लागै हो । होळ-होळ सगळा जावण लागग्या । राणो चीपिय सु घडी घडी राख फफडे ही क किया ई बीग मिल। राणी सूनी-सो बठपो हो। घूणी ठडी पडण लागगी ही। हार नै राणो चठची अर ठाकरा स् मिलण सातर पाल्यो। सीयाळ री अधारधुप रात, अर ऊपर सु क्राफर री मार। राणा कुकडो बण्योडो चाल हो। रावळ रो बारणो खुलो हो। माय बहता ई चौकी ही जठ दशेगी बठी घुणी तप हो। अधार मे माय बहती राजा जिन-सा लागै हो।

> कुण हुसी ?' पाळियो बोस्यो । भारो हैं राण कयो ।

'हाप तपायन ठाकुरसा सूमिल को । व यान बोहळी ताळ सूथडीक है।' पोळिय पेक बाल्यो। पडसाळ म बहत राण नथा— तपता ई लाया हा। यसी मिल हो सा। आग और म जावती बोस्यो। ओरे म बीबट माथ तेल रा दीयो पत हा। ठान रसा दोलडी शामळ ओडमा डोलिय माथ बठा हा। राणी दोनू हाय जोड पणां सम्मा चयने जावम माथ देवल शाम्या। ठान रसा बोत्या— अठ महां मर है। सार सिरनता हाय सू जाया बतावता बोत्या— अठ म्हार कन सठ। तू न्हारा मितर तो है ही साग साग सनाहनार ई है। बन बठतो राणां बोल्यो— अग्र बेवनल दिया याद बरघो?

हू तन नर्दे न्ति सूजडोन हो। बाहुळी बाता बतावणी जाव हो। पण दिन से जण हो मिलता नोर्देन नोर्देनन अठो हुस्ता। इस कारण अत हुसी ई नोती। जाग नाळओ टटोळता ठाकरसा बोस्सा— नोर्देमन री बात हुसी हिलास सामन बतावण री नोता। इस नारण हारन एंकड रात ग मिलज न सुलायो है।

आपरो हुकम हुव तो आ जान इ हाजर है। राण पूरी अपणायत सू कया।

ठाकरसा बोल्या-- इस विश्ववास सूई वा तन बुलायो है। आ तो आप री महरवानी है क आप मन वनु माना हा।

कोर मानण सु ही कोनी हुन जनो आप रो है सो आप रो ही रही।
परायो तो परायो के हुन। इण बात र नवण र सारी सारी ठाक रहा री छाती
री भार हुकते हुनतो सो लाय्यो। मूढ माल छायोही किराहा री रखावा
जडण सागरी ही जाण गम्माठी चीन वाछी सामग्री हुन। जागा छोडोडा
नाळनो जागासर जावण छाययो हो। कन सिरफ्डा ठाव रहा बोध्या — जी
री बात नवू हा। हासी मत करफा। बारो हासी वरण रो घ्यान घणा रव है।
इण बात माय गेराई स सांच्यो है।

इमा काई समळी बाता न हासी म चाडी ई टाळू हू । हासणजोगी बात माय जरूर हासू हु। राण कवो । ठावरसा मायल दरद न जुनाबता साथवण साम्या- 'आ दात नोई छत महीना पती रोहे जद आपा वयराणीसा ग्रन्थाय में भेजा हुवण सार दिवरसपुर नया हा। याद दिरावता वना ठाकरसा क्या आपणो देरी छुना सार दिवरसपुर नया हा। याद दिरावता वना ठाकरसा क्या आपणो देरी छुना सार र ठावरा र देर वन ही हो। व आपणा यहा विरदार है—आ। तमें टाई है। विरागर र दर में आपणा आपणो नावणो पणो ही रयती। वहा विरदार आपणो माणान न देशी जब ज्ञा परी विचार की गरी हुमायी हो। आ बात आपणी माणान न देशी जब ज्ञा परी विचार की गरी हुमायी हो। आ बात आपणा साणान न देशी जब ज्ञा परी विचार की में हमायी हो। आ वार स्वाग साथ साम माणान माणान न विचार की भी बीह्या मी। आपार दशान हुमण र पत्न दिन प्राप्त में माणान साम की। मन है, मनजूरी र कार न मने ई हा महार कन सं साणान साम की। मन है, मनजूरी र कारण, हा भरणी पढ़ी। राण न साण भरण साक वन्नावता बका ठावरसा

हा, स सगळी वाता तो म्हार सामन ई हुयी ही। पण इण सूजी री बात री गाई लेणो-देणो है? —राणो आळपण स्वील्यो।

बोल्या---'तन क्षा समळी बाता दो चान है ई।'

ठाव रसा उण र भोळपण नाथ मन मन म रीसा बळपा अर ऊपर सू हामता पवा थोल्या— सूँ समक्ष कोनी । याव र पद आचा उण न वठ ही छोडन पाछा गाव आगम्या हा। जा समळी जाना न परवा माथ गिणता पवा ठावन्या बोह्या कोई सादी पाव म्हीना हुया है। जक र पछ आज ताई ना तो रान न पूरी भीद आज है अर ना निन रा चन पड है। आख्या चाहता फाडता है रात अर दिन रोजी न निवळ जाव। उगर विना ना तो कसूबो ऊप अर ना मान्य मेमदासा हुव। विरह री वेदना सूच्छेडीजता डाक्ससा थोराई स केन नावी निसकारी गांच्या

उणर काई लुबा लटक हा जिका थे ताह लिया करता? राण कया।

ठाकरसा राण री नासमझी माथ यत मसोजर रयस्या । सावाणीज भोडा साजन बरी री गरजपाळ। उणारा वळपतो वाळ वो बार आव हो— 'ल सुण ! तन सगळी हीय री बात बतावणी ई पटसी । तन को मालमई है म्हार सासर आळा भाटी सिरदार अपण आपन घणा ऊचा मान है। भटियाणी आपर पीहर रो गौरव लेयन आपर बाप मु ऊची पढ है। भाटी सिरदार कोई म्हांस् रिसतो करणो थोडो ई चाव हा, पण अंकर अद व धाडो मारन पाछा जाब हा, उणा र लार बार ही। रात दिन चालता-चालता वत सवार दोन ई पाकस्या हा । उण आपत्त मे म्हारा बाबीसा रातवासी देगर छणा न क्वापा हा । उण उपनार रो नतीजो व्हारो रिसतो हो वण जीवण मे जमगार अर रिसता "यारा यारा हव है। आ दोना रो आपस मे कोई मैळ कीनी हव । योदाक सुसतार ठाकरसा आग कवण साम्या- दोला र दमाक म्हारो भाटी परवार स रिसतो हयो। खेक मजबरी खेक रिसत न जलम दियो । उगरो फळ मन भोगणो पहचो : भाटी सिरदारा री योथी बहादरी र साग-साग जात रो भुठो दम ई मनियाणी खापर साग लेयर आयी । म्हारा बाबोसा जीया जिल तो भटियाणी उणार उपवार स दबी दबी रयी पण उपार बाम पंधारमा पछ अर साग ई राठोडा अर भाटिया र भगडो हुय जावण स् उण रो मन चोट बायोडी सरपणी सो हुयग्यो । म्हारी भीर राठोडा कानी र्यी अर मोक मोन आदिया न मैं सागोपान वृह चटायी । अ सगळा कारण इसा बणग्या जिका सुम्हा दोना र जीवण में अळगाव उपजण सागवी ।

मूड मुझवणो अर गड़ा रो पढणो साग ई हुयो । आपा जद बीदावाटी कानी सूआमा हा । गाव म सीयोदाऊ जोट सू पत्थोडो हो । मन ई जोरा रो साद बढण लागम्यो । तू पाछो मोरच माच शयो परो अर हु अठ ई रवायो ।

जीवण-बोध

सगळो गाव सियोदाऊ सू मरतो हो। नुखार आयतो जण श्रील टूटण लाग जावतो। यो-दा सीरखा जेक साथ श्रीक्या ई सी को मिटतो नी। काळ श्रो क नापण लाग जावतो जाण सी काळव में बढतो ई जाव हो। शो तोना पह हु इमी ही हासत रखती। श्रील जाव सू निकण खाण जावतो। होळ होळ ही लागगो कमती हुवतो। यसीनो आवणो सक हुवतो बर साव जवरण लागतो। केई दिना साई बा ही हासत रचती। नीम जर अजवाण रो वासी सेवता खेवता मूढी मीठ रो सवा ई भूलम्यो हो। जीम जहर जमू बारी रचती। सी महण लागमी जण सीयोदाऊ रो जोर कमती हुवण लागमा। केई दिना ताई हुई इण रो फेट म रमो हो। श्री दूबको ई सीखण कालम्यो हो।

इण सीमोदाक मन तन सू ईं नी मन सू ईं मुडवाळ बणा दियो हो। भटियाणी र दादब सू ईं हूं उपय्योडो रवतो। हूं ठकराई छोडर छेक मामूली छादमी ज्यू म्हारी बण कन रवणो चाव हो पण म्हारी ठकराणी म मैं माव ईं को हो नी। रात दिन रो मनमुटाव म्हार हेत री हेती न खाली ईं राखतो।

आ खाली हेली निष्णीन को बही। यदियाणी र साम अने डावडी आपी ही जिकी बकत र बायर सुनिकरण लागगी ही। डावडी माणत रो बानो पर कियो हो। माणन नाई वा घननी पहर केक रात गया कुमूबो लेसर आपतदी जग सामतो क मदियाणी मे क्सर है। उल्परो नक्सरो भारी पढतो। हुन्हारो आपी मुतायन उल्परी पचका में को जाबू इसी मोको उल मन कर ई कोनी दियो। वा खागर खहकार सई हुस्योडी रवती। इल दूषट किया म म्हार मन कमूब सुसामीडी हेत पाछ निया। गुलाबी ठड पन हो। हू सोवण साक गयो हो। धननी बन्मो तेयर आयो। दो यही पनी सील बोडो मारी हो। बन सिरहो। तुस से ली ही। इण बाराप हुएती आंदों वमकण लागवी हो। बन्मो देवर पाडो करों लियों नावण लागों जय मन न्यां मासम पढ़यो जाण काल री घोरी आज री बागणगरी हुपगी हो। उस री बाल मे भरवण रो हा आवचण हो। ठारवां म क्सात हु। अरपो नरी दाह सो दोग हो। बागळे री दूबमां मन नृतती लागी। हु भूलम्यो अपन आवन जर उसन भी बोस्यो—'शैल टूट है थोडो हवा द मी। मा जटोरो राजर वाही अरपो अर मन दबावणो सक करफो।

ओर म अघारी भगावण सारू तेल रो दीयो वस हो पण दुत्री कानी इसबो अधार न और गरो गरण म साग्योडा । हू सीरख ओडमा मूतो हो जिल कारण उपर सुदवावणी साथ कोनी लाब हो। मैं सीरल में हाथ पालन दबावण सारू कयो । घनकी म्हार क्यां मुजब ढोलिय माथ वठर वयावणी सरू रूरचो । जग मन इया लाग्यो जाय डोल सु क्षाय रा मोळा श्रेक साग ई निकळ है। जा आग आग र सायर नृ यडवानळ ज्यू वध ही। म्हारी आंख्या में सुरली दौहण लागगी ही। उण री कोचळी माय हाथ राख्यो जण बा सरम स् भेळी हुवण लागगी। मून भाषा म बोली- इया नाई करी हो। अर बा हिरणी क्यू क्यारूमेर देखन सामगी। सन इसा लाग्यो जान महारी जुगा री भूख भाज अठ तृप्त हुसी। जको स्हारी सन सदा मुरक्तायोडी रयी है यो आज मुळकसी। म्हार सरीर म चेतना रा सी सी विच्छ अक साग ई दीइण सागम्या हा । धनकी न मैं क्या महार कत सोबाय ली पतो ई कीनी चाल्यो । आधी रात बळपा पछ जण वा जावण लागी में क्यों क तन रोजीन ई वायणी है। भटियाणीजी माणस रो भाव देखर सार रयग्या। यलत ज्यू ज्यू बीत हो माणस रो मोल मुघो हुवतो जात्र हो। दारू सू सौ गुणो उणरो नसी हो। माणस र आयां पछ तो अफीम रो टसरियो खुरुतो ई मीनी। नसूबी कटोर र माय पडयो पढयो ई पूरी मादकता दे देवतो । उणरी सादकता र आग कस्वो भीको लागतो । वन आया पछ इया मालम पहलो क जाण उण रा सरीर उण रो नीं हुयर कोई दूज रो है—सभीय-सुन्य रो उथ न घणो चाव हो। दुकराणी पाळ-सी ठडी ही ता आ रांत सिर्व्यी अरम। घनकी आपर अस्तित्य न म्हार अस्तित्य म मिलायन अेक्जुट हुम वावती। मते इमा सामती जाण हु अेक सामारण आरमी ज्यू उपर साम जीव हु म्हारो आपो मुलायन। ओ मौनो मन दुकराणी भी देशक ही एण दियो नवर्ड केनोनी। इता स्वता संस्कृत माम रो नाय पसीज ही जिकी मिटण नामनी अर घनकी रो क्य कुण्य मी निवरण सामयो हो। दुकराणीसा म्हारी उपेसा। नवराष्ट्र सू मकता रया। पण उण मन अेक आहमी रो सो जीवण दियो।

ाकर सा बोहळा स्वाचा हा। जमान रा घणा ठडा ताता दिन देख्या हा उणा। मिनवा रा स्वभाव जाण हा इण वासन थनते रो ल्याम पना ह रचायमा हा। क्षवहा स सनळा नागा हुन है पण नवाह म कोई नागो कोनी पिर। मैं पनने न पातवान वणावणी चाव हो पण भीटवाचीजी र स्वभाव सूबाकफ हा। कोई मोनो देलर काम बणावणी वाद हो पण बो मीदो कदई सामो है कोनी। उण स्पन्ना है विक्मपुर सूबाईतार स्वाच रो नता सामायो जण लागा साळा लेळा हुवर गया हा। पण भारी हुवण र नरण मिटवाणीजी साम पमारणा कोती हुए। उणारी मन हा जोट सूमरपोद्या बर मिस विमा दुनो है। साम रो समझी बात तन मालम है है। उणार विमा महारा मन कोनी साम। दिन्नी तर उणन पादी छाव जब उच ठीन हुव।

राणी सोश समभर थीरज सू बोस्या—'सगळी बाता ठीन है। राज रजनाहा म न्ही थाता हुगा ई नर है। पण धनकी बिना धारो सन कानी साग सा बात हहारी समभ की कोनी आयी। जुलाई जिसी जुलाई आपर कन है पछ जगर कोई एक बोसा ई सायोहा है।'

भा सुणता ई ठावरमा टडा पडम्या अर बोस्या—'क्षा बात घार समक्रण री कोनी। घारो काम तो च्ता ई है उलन पाछी सावणी है।'

नमकः। राजाना। चाराजाम ताल्ता इ. ह चणन पाछा स्वया है। राण हुजारो भरताकयो---- अण ठील है। उण सूमिलर रूप्पी वात जरसू। हुजम हुज तो अवार ई जाबूपरा ।'

राणो घर कानी रवाना हयग्यो । यन मन म ई सोच्या जाव हा--ओ भाई डो जब रो जिलन रात्यु नीद नी आव । बाव री गळचा सोयगी ही। राण भाटो लोलर ललारो करघी पाछो माटो लगायो। भपड रो बारणो ओदाळघोडो हो। मांय वहर दक लियो। सोवण साम्यो जण घरिघराणी

'हा ।' ठाकरसा ससतायर बोल्या ।

पुछचो--- आज तो भाई इनन बोहळी हताया नरी । काय री हतायो करी राज पड्तर दियो 'उण न धनकी विना नीद कोनी आव । धनकी क्सा फल देव ही ? आ बात म्हार तो समभ में को भायी नी । ह तो अक ई बात समझ्यो ह क धनकी न पाछी सामयी ।

रावळ री बातो व जाण अर बारो राम जाण। यसवाडो फोरती धणियाणी बोली कर पासी मोवण लावसी। राणी आली रात सोचतो रयो-जुनाई खुनाई म चलो करक है। पण

जणर समभ्र से की की नी आयो ।

धर कूचा धर मजला

पतरासर छोटो सो गाव है। थोडी सी बस्ती । माब में एक मीठ पाणी रो क्यो कर क्षेक खार पाणी रो। अन जोड़ों हो जिक में बान साई पाणी रवतो । करसा री बन्ही हो । गांव सु थस घडी र मारग माथ भाटी सिरदारा रो राज हो। छह घडी माथ राठोडा री घरती ही तीन यही माथ बीदावाटी ही अर्बार घडी माथ विक्रमपुर हो । इण तर पतरासर च्यारूमेर स् धिरघोडो गाव हो जिक कन सुभाटी सिरदार निकळता। राठी हारी मार पहती। राजपता री तीन च्यार गवाडी ही जिन रात दिन तलवार री मूठ माथ ही हाथ राजता। व विजमपुर र राजा री सेवा मे लाग्या रवता। रेव चाकरी जिती भी बावती उण स गुजारी चलावता । ठाकर दुवनसिंहजी बढा ई जीवट आळा हा। आपर पराक्रम सूपतरासर न ठाकरो री सूची म प्रधान पण दिराय गियो हो। भाटी सिरदार ई बखत वेदखत आसरो लेवता। सुजानसर रा सिरदार घोक्ळसिंह रा खास ठाकर हा । युजनमिंहजी र साग वातीन लडाइया मे गमा हा । वठ चोली ईजत हासस हुयी ही । बाक्ळसिंहजी र बाम पंधारचा पछ दुजनसिंहजी विकसपुर जावणी छोड दियो। दुजनसिंहजी र अन कृतर हो जिण रो नांव भगवतीसिष्ठ हा । भगवतीसिह भी आपर बाबोसा जिया तलबार रो वणी हो । पर पराणो रजपूती री योगी अकड मूनीचं ही पडतो हो । मूठ री मार र नारण सगळा मान देवता पण रिस्तो करण री वेळा सगळा नान म सळ धालता । इण कारण भाटी सिरदार भगवतीसिहजी सू आपरी बेटी रो रिस्तो करघो। पण उण रिस्त में बरावरी रो माण कीनी हा, अहसान रो तवादो हो। इण तवाद म भटियाणी रो गरव भारी पडतो हो अर बेहसान उठावतो अगवतीमिह।

कुबर भगवतीसिंह राषणस्रा वरस बीदावाटी म बीत्योडा हा। उणरो सास भायनो राणो अनुपर्सिह साग ई रगो। बाबोसा र बाब पषारघा पछ ठासर भगवतीसिंह न केई कारणा सू गाव म ई रवणो पडयो।

क्षो जमानो बठारवी सदी रो हो। रजपूती रो मूठ ढीली पढण लागगी ही। आल राजपूतान म मारवाड रो बजार मरम हो। काळा रो पौजा बारबार जयपुर जोभपुर अर उदयपुर माय वालो मार हो। विजमपुर केक कब्ल पड हो इण बास्त कठोन आवणो उला रो सक्ष कीमी हो। वी सा मालवाटी ताई जगा रो यालो चालतो ई रवतो। देवलिया र लार-लार विदारी है पाड़ो मारता एवता। इल बास्त वायावास करसूजीकोट कर

वित्रमपुर रा लास काल पाणा हा । येलावाटी सू आवणिया पाठैतिया न मारण म रैरोक अर बीदाबाटी माथ वित्रमपुर रो अधिकार राल । राजपूत लोकास हुवता जाव हा। राज राज म यवदय चाल हा। अर्थ भाई दूव भाई ने मार न राज हृदयणो बाथ हो। भाई भाई रो दुसपण हो। आपर स्वास्य री पूरती साक राजा विलिण्या न अर्थ रिवारिया नवद वास्त नृतता रतता। रण लालव मायकर राजपूता रो कोयण हुवतो आप ही। व सन स् अर यरम सू ई मिरता जाव हा। राज वरवारा मे रातदिन वास कर पातरिया री जमयट लाग्यो स्था। वाजिय कसी बाह वाह्याह स्थाम

हा । महिष्का जमती रवती । यहयत्र वासता रवता । वर राजसिहासन बन भाई अर वापर खून सूभरमा स्वता । पण उवा कन सोवण समभण रो यक्षत कीनी हो । समळा दाक मारू रादास आर स्वारण रा सीरी वष्णोडा हा । घोटो सो ठाकर भगवतीसिह वातावरण र सान चाल हो । गुनामा रो अंक सावी कतार समळा र साम चाल हो । दूणा जुनाम क्या गोला रो मोई ईजत आसक कोन. हो । उचा र ठाकरा रो मरजी सद सूबडो बात ही । उचा री वन केने ठाकरा रो मरजीन हतती । सरकी रो केक रूप करघो। आ सगळी बाता न पाच सात दिन हुयग्या जण अके दिन दोपार ठाकरसा ताबह में बठा अठीनली बठीनली बर हा. राण कन जायन जमाताजी री करी। ठाकरसा इण रो भरम समभग्या अर साळ मे बैठ न बात करण रो नेय न उठग्या। ठाकरसा सगळी बात सुणी अर हुनारा

राण दा तीन दिन सोचण विचारण मे लगाया। चुपवाप विकमपुर जावग री त्यारी करी । राइक कन जायन टोडियो लायो । घी पायन त्यार

विक्रमपुर

मुलतान मू टिल्ली जावण रो मारग रातीघाटी सू दो सौ क्षेत्र पावडा भाषूण उतराद हुय न जावतो हो। रातीयाटी राख्<u>देहा</u> भाषी साल पाणी स् भरघोडा रवता । घोडा बर बळना सारू मारग नाथ सेवण रा लावा-चौडा चीहड हा । मारय नाथ धार्डेतिया रो भय कोनी हा। विज्ञारा सूघ मारग रात दिन आदता जावता रवता। इग्यारवी सदी पछ पुगळ रा भाटी तानतवर वणतः गया । हेन डो ई ववणा बद हुयस्यो हा । जाट मारग म धाडो मारण लागग्या जल बिणजारा इल मारन न निरापद नी जाणर मुलतार सुतवरहिंद (अटिंड) हुवत दिल्ली र गारण आवणी जावणी सरू कर दियो। होळ होळ भाजागळ देश दणस्यो। जाटा रा गाव वसण क्रागम्या । पूगळ रा भाटी रातीघाटी ताइ धाडी मारता रवता । इण वासत रातीपाटी जाटा अर भाटी सिरदारा र ऋगड री खास जागा हुमगी। पण जाट स्याणा अर समभदार निकळ्या । राजपूता न राजपूता सू भिडाय दिया अर आप अळघा रयग्या । राजपूता भाटी सिरदारा न पराजित करन रातीयाटी माथ विकमपुर वसायो। मितर देवरा बणाया गढ बणाया। होळ होळ विक्रमपुर तरकी करण लागग्यो। बस्ती स् गाव अर गांव स् शहर बणण लागम्यो । धरती रा भाग पुरम्या । अठारवी सदी लाइ लगीलग बधतो गयो । विश्वमपुर रा राजा मुगल राजधराण म् चोला रसूनात राख्या । मुगला र दरबार मे पचहजारी मनसबदारी रो ओहदी सियो। उत्तर सु लेयर दिलग ताइ मुगला री सना म सनापति रया ।

समप र प्रभाव गुसुस सुविधावारी स्रोज हुवण लागी। किली छोटो पटण सागम्यो। भ्यारूमेर बळात री जावा देखर नृव क्लि रो निर्माण करायो । खाई वणाई । रात माट माय कोरणी करायर महल माळिया वणाया । चानणी रात में क्लि कचन सी जमकती । खहर री बसती बामण वागिया री ही । व्यापार दिनादिन वचती जान हो । मुगताँ र साम दूर दूर तांद आइमम गरणन जावता जण व्यापारिया न आपर साम से जावता । कठारवी सदी र आवता बाता विज्ञमपुर नामी खहर वणाया । मुसतान सू ई सीपो मारण हक्षण सु व्यापार री मही वणण सामया ।

दीया बली रो बलत हुवग्यो हो । ठड पडण लागगी ही । मिटर म आरती हवण लागगी ही। भालर री भणकार दूर दूर तौंद सुणीज ही। रात शहर -न आपर आयळ र ओळ सोवायण लागगी ही । गळी कृषा म सोपी पडग्यो हो। इह री माटी परत चरा री खना माथ आपरा पग राखर शहर म उतरण लागगी। राणो दिनूग रो र्वान् हुयाडो आस दिन चासती रयो । आलर बेळाबी गणेशद्वार कन पून्यों। सहर कन पूनण १ पसा राण आयस काळी टोडिम रा दोन् कान उतारन मूज म वाल शिवा हा। शहरपनाह री पोळां डमीजण लागगी। सिया भरता भोग भरां मं भेळा मेळा हुव हा । डाफर लोगारा गाभालपेट हो। राणो होळ होळ गणेशजी री अमेची कानी चाल हा। बा और बीध में पिरघोड़ा हो। च्यो रूमेर बाढ छाप्योड़ी ही । सामन अन भाटा ही जिका खुलो हा। माय बढताइ डाव हाथ नानी बिरखा रो पाणी कुड म लवण वासत काकर नाखर पायतण वणायोडा हा । जीवण हाय मानी जाळ ही। जाळ र हेठ घूणी ही। सामी साम गणेशजी री पनी मिदर हो। मिदर रै सार ई पाताळेक्दर गिव पावती रो मिदर हा। गणेशजी र सामै दीभी अस हो। पुजारीजी महाराज साधना कर हा।

राण जाळ कन साढ सू जवरन जवान जकायो। पलाण जसारन जाळ री पडी र सार राख्यो। मोरी खूट र नायर टाडिय र साम सनण रो बोरो रास्पो।

इस म पुजारीजी बार आयग्या । चुपचाप काम हुवता दखर पूछघा— कुण हुसा ⁷ अवाणजूनी अवाज सुणर राणां वा यो — ज माताजी री। आता मैं हूं। ज माताजी री। वण आवा अवाणपुक ई ? पूगण भ बोहळो मोडा कर दिया ती ?' पुजारीजी पृथ्यो ।

पुनारीजी अन साग ई पणा सारा सवाल नर नास्या। राण मूर रो दाटो खालता उपछो नियो— थाडो नाम हुवम्यो। दुरियो तो येगो ई हो पण मारा म पोडी ताळ ठरम्यो हो। वन आवता राणो बोल्यो— आप सोगा रा दरसण नरपा न बाहळा दिस हुयम्या हा। सोच्यो मिसणो ईहुय जासी अर छोटो योटो नाम है विना ईसवटाय सेवा।

शी तो चोलो करघो। पुजारीजी पाछा माय बहता बोस्या।

गणवाजी र मिश्र सार अन और। हो। आर म दा माचा पश्चा हा। श्रेक ता लाली हो अर अर माच औडण विद्यावण रो सराजाम पश्चमी हो। राण सराजाम लायन माच नाच राख दियो। आटो ढवन वाछो आयो अर सारणो डकन सोनू जणा वादां करण लगाया।

भक्षावटी हुवताई थोन् जणा उठर जररी वास सलटाय न आप आपर वास कामया। पुत्रारीओ पुत्राधर मबटया। राण साढ व वाशी वायर नोळ कामयन गणेगजी री नगवी र सारज बीहड स चरण साक्ष्य छोड थी। बूची साढ चरण सामगी।

शहर मं मिलल भिटल सारू गणेश बगवा संवार निकळघो । डांडी~ डाडी दरवाज कानी चाल्यो । डाडी र दोना कानी सुकी सेवण डागरा री षायोडी कमी ही। कठई कठई पोठा बर भीगण्या सवण माथ पडी ही। रात न ठड र साग भीणी भीणी घवर पडी ही जिली सेवण माथ मोस्यारा दाणा ण्यू चमक ही। घवर री उण ब्दा मंसी सी सूरण ओन साग ई निजरता दील हा। तावडो चिलक हो पण पून री ठड स् उण रापम निमळा हा। ठर ठरन भारती पून स् गामा क्षील स् लपेटीज हा। हाय ठढ स् ठर हा। आगळचा रा पक ठड सु अवडीज रया हाः राणा गणेश दरनाज सु सहर मे यडधा। क्यार छव रुखाळा माच माथ बठा तावडो लव हा। दरवाज रजीवण हाय कानी दो मूण रो कूचो हो। नाळी कूचो बाद हा। बेळचा पाणी सू भरी ही। मिस्ती मसक भर भरत याणी लंजाव हा। कोठ सुपलाला भरीज ही। पणिहारपारी भीड बूब बाय ही जिका कुमारा जाटा अर माळपार थरा री हो । सासर घेळपासु याणी पीव हा । सूरहा अठीन वठीन नाठ हा । गिडव तावड मे पडमा सिसक हा। रामच द्रवी र मिदर वनकर हुसतो राणी बजार म आयो । बजार री दुकाना खुलशी ही । धान री दुकाना आग सोठ, बाजरी, गवार श्रद मूगा री त्रिश्चा लाग्योडी ही। चिडपा अर कबूतर वर्ठीन-वठीन विसरपोड नाज रा दाणा चुगहा। डिगसी र विच साठी राप्योडी ही। तावडी बाट लिया दुकानदार धान तील हा। सासर प्रिता पिरता थान म मूकी सारण न खम हा। ग्राहक थान खरीद हर। थान री दुनाना र सार पसारमा री दुनाना ही । पसारमा री दुकाना र सारकर हुयन

अचाणचुनी अवाज सुणर राणा बाल्यो—ज माताजी री। आता मैं हु। ज माताजी री। यण आया अचाणचूक ई? पूगण स बोहळी मोडा े नर दिया नी? पुजारीजी पुछयो।

पुनारीजी श्रेन साग ई पणा खारा खबाल नर नास्या। राण मूढ री ढाटो बोलता उपळो नियो— योडा नाग हुयायो। दुरियो तो येगो ई हो पण मारत म योडी ताळ ठरायो हो। कन आवता राणो श्रोस्यो— आप कोगा रा दरसण नरपान बोहळा दिन हुयाया हा। श्रोच्यो निमणो ई हुय जासी अर छोटो मोटो नाग है जिको ई सन्दाय लवा।

क्षो तो चोक्तो सरघो । पुजारीजा पाछा माय बहता बोस्या ।

गणेशजी र मिदर सार अन औरा हा। ओर म दा माचा दहया हा। भेन ता तासी हो अर अन माच ओडण चिद्यावण री सराजान पदचा हो । राण सराजान सामन माच माच राख दिया। फाटो दक्त वादा आयी भर बारणो इतन दोनू जणा बाता नरण लागया।

भक्ताबटी हुबताई दोनू जणा उठर जरूरा काम सकटाय न आप आपर नाम लागमा। युजारोजी युजापर मंबहत्या। राणकाढ न पाणी पायर नोळ लगामा गणेवाजी री बगणा र लारन शेहड मंचरण साक छोड ही। हुन्यी साढ चरण लागागी।

गहर म मिलण भिटण सारू गणेश बगेवी सुबार निकळची। डांडी हाडी दरवाज कानी चाल्यो। डाडी र दोना कानी मुकी सेवण डागरा री लायोडी कभी ही। कठई कठैई पोठा बर मीगण्या सेवण माथ पडी ही। रात न ठड र साग भीणी भीणी धवर पडी ही जिंकी सेवण माय मोरया रा दाणा ज्य चमक ही। सबर री उण बूदा म सौ सौ सूरज अक साग ई निलरता दीख हा। तावडो चिलक हो पण पून री ठड स चण रापम निमळा हा। ठर ठरन पालती पून स् गाभा कील सूलपेटीच हा। हाच ठढ सूठर हा। आगळचा रा परूठड स् अवडीज दया हा। राणा गणश वरवाज स् शहर म बडची। च्यार छव रुवाळा मांच माथ घठा तावडो सव हा । दरवाज र जीवण हाय कानी दो भूण रो क्यो हो। माळी क्यो वाय हा। बेळचा पाणी सू भरी ही। भिन्ती मसक भर भर ॥ पाणी ल जाब हा। कोठ सूपलाला भरीज ही। पणिहारपारी भीड बूच माथ ही जिनी कुभारा बाटा अर माळघार घरा री ही। सांसर केळपां सूपाणी पीव हा। सूरडा अठीन बठीन नाठ हा। गिडक तावड म पडचा सिसक हा। रामच द्रजी र मिदर कनकर हुबसी राणी बजार मे आयो। बजार री दुकाना खुलगी ही। धान री दुकाना आग मोठ. बाजरी, गवार अर मुगां री दिगरुपा साम्योदी ही। चिटपा अर सबुतर अठीन-वठीन विसरघोड नाज रा दाणा चुन हा। दिवली र विच माठी राप्योदी हो। ताबडी बाट लिया दुवानदार धान तील हा। सासर पिरता पिरता पान मे मुकी मारण न लग हा। ग्राह्व थान खरीद हा। पान री दराना र सार पसारघो री दुनाना ही । मसारघो री दुनाना र सारहर हथन मारग सरमीनायत्री र मिन्र जाव हो। मिदर पाटी उत्तरपां पछ पाछी कचाई गुम्प हो। पाटी री उतार सागीडी हो। मारग र दोनां कानी सखारां, विसायतिया **वर र**गरेजा री दुसाना ही जर घर हा।

दो घडी दिन चढम्यो हुर्। पट दनीजणआळा हा । दशनायीं खाद्या खाया मिदर कानी जाव हा। खातीसुणी घाटी दोरी ही। बहली रो क्षावणी जावणी मसकल हो। मोटचार-ल्याया री भीड तर-तर वधती जाब ही। राज रो मिन्द हवण सुधन रो पूरी मानता ही। वृष्टिमारिया रो मिदर हवण र कारण लक्ष्मीनायजी री दिन म दो तीन भावया हवती ही । चढत सुरज साग भीड ई बधती जाव ही। राजा ई इल भीड म सामस हवन ठेट तांई धना खावतो आग वधतो जाव हो। मिदर सातरा बण्याको हो। सगळी सकराण भाठ सुबणायोबी हा। मुरत्या मृढ बाल ही। सिणवार फबती हो। लक्ष्मी साचाणीज सदमी ही। सान अर होरा र बाभूयणा सु बणाव करघोडी सहमी पळपळाट कर ही। लक्ष्मीनायजी सामाच लक्ष्मी रा माय ई साग हा। राणी सोध हो-लदमी वारी माया अपार है। बार विना साओ जीवण ई अकारय है। चार विना ना तो घरआळा पूछ बर ना जात विशवरी आळा। राज-दरबार म भी वार विना मान कोनी मिल। वार कठण सागई सगळा बिराजी हुय जाव। दरसण भरन तुलसी चरणामृत श्रर परसाद स्पर वो पाछो बार आया अर ध्यारूमेर घूम किरन जिदर देखण साम्यो। रातीघाडी रा लेटा इता गरा हा क हाथी रा हाथी चला म समाय जाव अर पाछी ओया ई पता का चाल नी क हाथी कठ गया ?

राणा दरसण करन पाक्षा आयो अर जामर चित्तम सोची। घोडी ताळ हथाया करें। पछ सनत्वार देर बाली चत्यो। क्तील द सारे दार-चाल्या आव हो। यगदा दरवान कन मुक्सील ह्याइ र चूच वन हवती क्साया री बारी कानी हुयन हुक्यकीट कन निवळती हो। जा सगळो घारण भाइनया सू भरिया हा। चुणा म सूरवा बोडता रचता हा।

हकमकोट र साम दो सौ पावडा माथ अनोपसागर हो जिक माथ स्थार भूण लाग्योडा हा। दूव में अथान पाणी हो। राज राघोडा अर सासर अठ ही पाणी पीबता । कुब र सामन ई नुवो गढ खडघो दीख हो । सामन किल रा मुरज हा। नागी तसवारा लिया आदमी रात-दिन पोहरा देवता रवता। गढ री पोळ र साम ई नागी वलवारा लिया बादमी पोहरो देवता । पोळिया गढ़ मे आवण जावण बाळा रा पूरो ध्यान राखता। उणा री निजर स् बचर जावणो मुसक्ल हो। गढ र डाव हाथ कानी जगी तळाव हो जिणर पीद मे कदई पाणी हुवण रो आभास हो । गढ कन थोडी चल पल दील ही । अठ स् आग तो सवण, चतुरा, आकडा अर बोरटचा री फाडनवा ही। कठई वठई जाळ अर गदचा ई निजर आव हो। गढ र सामन जाळ अर खेजवा रो सागीडो भूड हो। गढ र जतरार्ने कोई क्यार सौ पाच सौ पावडा पछ सजनसा रो डेरो हो। राज रा ताजिमी सिरदार हवण स उणा र डेर सार दरीगा री दो तीन भूपदची ही। गोला सिरटारा री हाजरी में लाग्या रवता। दरोगण्या ठुरराण्या री सेवा चाकरी मे रवती । बायज म बाबबी बावबा देवण सारू इणा रा टाबर काम आ जावता । जवानी रो पाप उतारण म नाव इणा रो ई हुमतो । जर खरीद गुलाम ठाकरा र जीवण रो शेक खास अय हो । अ पाप भर पुन राभागी हा। फुठरी गोली ज नंदई ठाकरार चित चढ जावती तो भाक्षी जवानी ठाकरा र साम काढती अर बूढाप मे नाव र परण्याह कन आ जावती। उप सुपक्षाज भूत सुपय भारी हम जावता तो स्वसम र नाव सु सगळी पाप ग्रुप जावतो । ज कर्र पासवान दो पद मिल जावतो ता छण रो जीवण सोरो निकळतो अर बूढाप मे ठाकरा री तरफ सु पेटियो मिलतो रवतो ।

राणी क्लिन र पसवाड सृह्वता हेर कानी निकळ्यो । हर री सामळी भीत रोडा सगायर बणायाडी ही । भाठा लगायाडी बांग्रेस ऊवी पोळ ही । असवाड पसवाड री चींता काची-पाकी इटा सूबणायाडी ही जिक्ता माथ सारी पूनी लगायोडी हो । लारल छेड बाड लगायोडी हो । शेल भारी है हो । बहताई पोळ र मायन पोळियो माच माथ बठो हो । सामन बाखळ ही । बाखळ स आगे अंक लाबी चौडी चतरी बणायोडी ही। चतरी र सार ई क्मरा, साळ अर कोटडचा पड ही। आ समळा माय ठाकरा र रवण रा पोढण रा अर रसोवड रा कमरा, परीहो वर ओरा ओरडघा बण्योही ही। नीचला कमरा वर साळ आवण जावणिया र वठण वासत ही। ठाकरा र ऊपर स नीच बावण री मायन स ही पेडचा बणायोडी ही । महिक्छ जमती जण दारू रा चयक बठ ही ढळता। रात न पासवाना स् हेत मुलाकात कठ ही हया करती। चत्री र सार लार पहली दाक री जलगी ही जठ भात भात र स्वादा री दारू काढीजती । कारल छड चौक हा । मायन सका अर गुभारिमा हा जिका मे जुध रो समान अर दूजो अडग बडग राख्योडो रवतो। चौक र मोड बार लाबी चौडी बाखळ ही जठ गाया अस्या घोडा अर छठा री ठाणा ही। सेवण री दगरी ही। बळीला पडचो हो थपडचा रो पिरावडो हो। लकडी रा मिरडा हा। छदाव स् अण्योडा दूमशलो सजनसा रो डरो सातरो दील हो। बेर र ज्यारूमर जाळ गुधी जर बावळिय रा रूस हा।

राण कूटबा लाडुबा रो अक ठाठो कियो। लाधो बदळती बदळती संज नता र केर कन पूम्यो जल कूमरी ढळल लामगी हो। पोळियो सुस्ती रा पाठ कर हो। पूद यू हाळ होळ यूवा ठठ हा। पाळियो माथ गाय बठघो बठघो क्यानम पीव हो। गडो माल र सिराय पढ्यो हो। राल न पीळ र माय बढतो देखो कम रातारो करन पुछ्यो—

चुण हुसी ?

भी ती हू बळवती रामसरआळी। राणी बोल्यो।

आयो पघारो सा । ज माताजी री । आज अवाणचूक ई किया आसम्बा⁷

ठाठो रासतो राणो बो या— इया ई काम सारू आया हो। धनकी री मा दीवडी मेली है वा देवण न आया हा।

36 माभक

'श्रीतो आरखो ई नरघो । काम रो काम अरमिलण रो मिलणो ।

'अगही सोचन बायो हु। समान ई पुगाय देमू अर ठाकरसास् ही ज माताजी री हुय जासी।" खाली चतरी देखर आग कयो- टाकरमा अठ कोनी दीख, बार पधारघीडा है काई ?'

'हा ठाररसा थोडा दिना पली ई उतराद न रवाना हुया है। आवी, बठो ।' माच रो सिराणो खाली नरतो बोल्यो । पछ चिलम काडर गर्ट स् तमालु कादन चिलम पाछी भरण लागग्यो । जाग कदण लाग्यो—

> 'दो झेक फुक खाल लो। पछ मनसो कर नेमू। 'कर तो लाचाला ई। हेरी बस्ती स् अळघी पड।'

जिलम चेताय न दवती चनो पोळियो बोल्यो- सो सा ! ' राग 'हा भपर साफ रा पत्नो काढर साफी माथ सगायो अर चितम खाची। पछ हास भास पृक्षण लाम्यो । कूण कठै गयोडा है कद आसी । सगळा समाचारा रो भगतान हवण लागम्यो । राण री आस्या चयाक्रमर छोड लेवती फिर ही ।

पोलिय सनमो हेन्छन चाट्या । बापळ न पार करचा चृतरी र सार जनानी डघोडी । माय बहर हैली पाडची। माणस रा पाछा पड्टार आयी। धनशी रो नाव सुणीज्यो। धोडी वाळ मे पोळिया पाछो आया अर बोल्यो- आप डचोढी म बंदर पेडचा नन लहमा हुवा अबार आ आव । राणो ठाठो उटायन आग चाल्यो । राण री अस्या व्यारूमेर री जाणकारी लेव ही। पावनी कठ ठळत तावह मे घुड म सिट हो। रिसाल म बबतो बूनो हुयम्यी जण डेर मे पाणी रा ढावा डोवण

सारू छोड दियो । यूई माय ढांचा ढोवता ढोवता टाक्यां पडगी ही । सगळो ढेरो मूनो सूनो साम हो। मिनला री चल पल बौनी दीली। राणी मन में राजी हुयो। इपोडी में बडर भाड वन उपर मृ उत्तरती पेडधां वन सको हुसम्यो। अ जनानी पेडचो ही। वेडचा री ऊचाई र साग छात अण्योरी ही। चानणी आवण बासत पहणा री ऊचाई र हुँमाथ सू तिरही सीन च्यार भाठ मायू " राणी गळी र सार सार चातण शामम्या। गळी डेर र लारल बारण मन जायर वन्द हुनती ही। जो बारणी लुगायां सातर हो। बनत बेनलत माणता रो न ठकराण्या रो बठीन मुही बारणी जानणी हुनतो। सांसरां सारू पास चन्स बठीन सु ही बाहती। सासरा रो मारण वा ही हो। च्यास्पेर सुनवाह

असमजस

साहुवां रो ठाठा तेयर धनकी पाछी चढण छागी जण इयो मानूम पहची क बीरा हाय टूट है। हायो र साथ मन ई टूठवी जाव हो। पीडचां काटण सामगी ही। भार पूर्टको मन डीस न तीडवी जाव हो। मर पवा बारण कर पूर्गी जित न उपरो साथ जवडण सामग्यो। बारण रो सार तेयने उभी हुयी। उपर चर माथ बेन नृवो सवान चूनर पाल हो। तिमाह माथ पत्तीन री बात आवण सामगी। वी तिलाह साथ पत्ती फेरपो पण बठ की कीती हो। मन रोवम हो। बार अस्पियता री मा है। सामल कीरिय माथ पत्तीन री सावण मिठवोती बार आगी। धननो रा डार डाठा देखर बा माथी चाल सूँ उपर कर साथी। धननी रा डार बाठा देखर सामगी चाल सूँ उपर कर साथी। बोती—'इता-सारा साडू कठ सू सारी?

मा भेज्या है।

'तो इया सामणदूमणी कियां ?'

याद भावगी।

'मिल्यां न किता बरस ह्या है।'

'दो-तीन बरस।' घननी बाद करती बोली।

मन ई देश ।' स्रोगळघोर परवां साथ गिणती कोती-- 'तीन वरस तो मान पुत्रप्पां न हुम्मया अर उण गुच्यार क्रस्त पनी सिसी हो। रातवाग प्रेमियपो कोई मिलयो कोती । अर अव तो बीरो गपना स्रावना ई वरह वरमा है।' मिठवीली जेंद मोत्री निसवारों नास्त्री : कोटटी कन लागगी। अर वा परीट कानी बृही थी।
पनकी ठाठो उतारन आळ म राख्यो। बीन इया मालम पडयो जाग
की मुएन्सि छाठी रो बसे भारी भार उतारन राख्यो है। ग्या भार मे अर
मोह हा अक मिठास हो। गूटो हो जिक्क साथ की कोनो ही आर पावती
मोह शा अटपो राखको पाव अर कर नायचा दी हुआ ईराल। बी मे अर किंग्सिक इंडिंग्सिक से की की की की की की की मान भी सी
केंद्र विश्व की साथ की की
केंद्र विश्व में साथ मी सिक्स में जीवण री अर्थव माजक री रिस मर्सी में

धनकी म छोडती बोली - ह तो कठीन जावती कठीन री ई बातां म बवण

हो। होत बाती से बजत हुवायो हो। मिठवीलो शेवट मार्ग रीएगोड बीम् मुचांस ही। दूंकराणीं वा बेगा हो अरोगच करन शेवण कागाया हा। सामन चीन में पंग प्यास्त्री, इक नु देवार बनाये आपदी की नु है। से बार्ग्या, बीगा क्या आम म मित्री हो। पूर्त बनानकी अच्छा कु चुने हो। मन दी गाक्या आम म किंदरपांड़ा बारा ज्यू हो। च्याकसर स्कृता सरणान्य होस ज्यू वहास हो, देवे हो अर हो। हुटपोंड विचारा में। मदस्योवी। बनानी सोच हो ब्याप स्वस म आप जिसी आयोगे बना र विस स। अर बक्छा सु हेड वच लोगा र विस म निवार राजक में जुनावा जाया मर हा अर जुन स

विजयम विचारा री कथमा नगई टूट है। क्रेट नगई जुड होर्ग ट्रटती जुडती आग वस ही। वानकी विचारा री तर टूटती जुडती वसवाबा हर ही। पण आ सगळा में इतिहास इनसान न्याहों है है, विचान न्रकर नोम्योव जीवण रो मनन है अर जीवण वास्तविक पटलावा से वर 1 जरूरत जीवण री जबरी भूल है। भूल रो परिल्कार विचारा रो छेड़ो। पर्वकी अर्व जरूरत री अनीशिवार कर्यतानी स्मृति । इल उठक्रमण भी पनकी गोता जात हो। विजय पन क्रमण रो आयो हो। वा मह ठाट स्मृतिशव्स हीर्ग सास मार्च हुनी रणांस विचार कोनी करती प्रमार्थ प्रवार से पर सार जीव ही। यर कर्य के प्रमारी स्वार होनी करती प्रमार्थ प्रवार से पर सार क्षाण ज्यार साग्।की हुयोई कोनी क्षा केह दिना व्याह कोनी। करी तोग्वी विचार ई वो करयो नी विकार विवाधनिक अधिकित वर्णर रिवण पो सराजामिमा र साव करयो तो विरामवती कोली व्यार कीनो के कि स्वाह के स्वा

। [क्षायनकी द्रयह चिना में साम्योही होति ना तो किणी मैं।केंग सक अर ना संजा शतःकर। सक । याय ची :मायं वीसी। छक्डी। वयः (संसवती। जाव ही। प्र निणय ई जोखम स्भरपोटी हो। नहा अर ना हो सड तर सूब ध्यीवण री सुमिका ही। अठ मा सिडत कीडा । मायली लोक की बीमही । । स्वतंत्र सप म् उण्योक्तोई स्मस्तित्व कोती हो : १ मावण रो स्वाव निसाण ई मोनी हो । हकम् दी साबदार हो।। एण, चढ वा ।:धकेली हो।। ; इतदो ; हो।। निरी नारी दी जळणाही । देखाँ हीत दावाभवास्ताचीटी हो छा। कारली बातो कता अरवन खातपी । हा देखण कानगी। क्षेत्र छोडी द क्षा एमे । इकाराणी सा द्वामान सार किरवी । महमोडा,गामा। खोटा अर दीकावान । करना पहली। होळ-होळ पूरा,गरमा भावण, नागम्या । माळियामे,भावती-जाबती (रवती । याणी भन्तावती,। दस्रियो, ले जावती,अइ. तस्वाः वणायदः प्रयावती ।। श्रेक अल्ला हुवतो । त्यो, असास हुवतो । उत्पुरता । सु देखको । बावसी । । - बाता । सुराणी पावती । पुण पूरो, मोको कहर्र मिलतो, कोनी। यर हर म हछाता स. हवावती पण गर गाँउ वा अर गरील है। उथ से स्वाप अभिष्य सो में मिन्

नवराणीसा र सिनान नरती बेळा पूर्छ है।सेंबती' की प्रमापरिक्तिसीयी माम,मरूदिया दिया साम्या ,बण्डुसायळोत्माच ब मनाण क्रांय हा।है। आज तार्दे,तो अ क्रोनी हा, अब किया हुयम्या।। इसा अरेळपण (साम कदराणीसर, हस्या अर कर रसा न पूछण 'ते कयो । इण जतर सू या चुप हुयगी । पण जिजासा सात कठ हुयी है। ? अर सण्याण प्रान और पणा रूपों में झांग्या माम नायण अपार या क्योर साम नायण अपार या कोरत प्रकार से है अर पड़ तर मी । औरत प्रमत सदी है सर पड़ तर मी । बौरत प्रमत सदी कर पण ईप्या कोरो दिया मता । त्रिज्ञासा सु आप पी सायठों न देवी छात्या देती, हाय फेरन देवी क नठ ई नोई अवस्था रो सनाण दीस है कोई ? पण अपवाह रा याव हो कोरी हा। योळपण रो बात मास आज किती होती आव! । यात साथ आज किती होती आव! । यात साथ काज किती होती सह । योळपण रो बात मास काज किती होती काव माम स्वाह में सुब ई समक्ष लाव । असाठी बात साथ र लाव स्वाह में सुब ई समक्ष लाव । असाठी बात समक्रावण साक ना तो वोई कर अर ना वोई समक्ष लाव। असाठी बात समक्रावण साक ना तो वोई कर अर ना वोई स्वाव ।

बलत बीततो गयो अर संगळी बातां आपोआप ई समभण लागगी। भाज जण बा कासगळी वालान याद कर जण उत्तर काना माथ लाली दौडण लाग जावः। आस्या सरम सुम्भूक जावः क्वराणीसा जदकदई जळनवश बो सगळा सवासा न पाछा सरू कर क्षर बताव क ठा पडियो—अ सगळा किया हुया ? जण हेप स् जळण लाग जाब । अर अधिकार हनन सारू और खुलन सुरति सुख लेवणो चावू जिल सू बखत रो भाव बध अर पासवान रो पद मिलन बुढाप रो सराजाम हुय जाव । समय सारू मन मे अगजाण्या अर अणचीत्या भाव आवण जावण लागग्या। बील मे रळी पूटण लागगी। मायल मन मे बम हुवण लागग्यो क कठई उजाड मे मुरभाय नी जाव। गळी म बिखेरणी नीं पड़ । स्वाणी आदमी आग री सीच अर सगळी बाता रो पर्ला ई सराजाम कर लेव। अब उजन बाद आयो क ठाकरसा उणरी लाड साथ इग सातर ई याव रचायो हो। उणन बडो ही आसरिक दुस हुयो कओ नाटक किसो धरमहीन है। किणी न भोगण रो भारत है। रीस घणी ई आयी पण कर काई ?, बा जरखरीय है। उम रो स्वतंत्र अस्तित्व कोनी। उमरो जीवण सेन सणबुक पहेली सी है।

रात पछ दिन अर दिन पछ रात को ही ऋग बरसा सू जालतो आयो है अर आग चालतो रसी। पण इण ऋग र साग मिनस सुपाया में फेर बदळ कुटरो रूप पारण करन इण री आगळपा रो चूमी लेयन बेहोश हुय जावता।
भोरा रो जण कमूबी बळलो, बाटकी दूरी र अशास सू ही विपळण लाग जावती। रूप रो फुटरांगी किरचा माय सूक्ष्य मंदीखण लाग जावती। यतराह तो खिया बाई उणर लार-सार ही पूमती रैयती। बलत री जरूरत रो पेट शोबी बदाया सूकोनी मरीन । बर बसत सो मोल कुर्ताभायो हो होई दोख्यों कोनी। विको बसत रो मोल समक्ष्यियों हो सो अणजाण बण्योंको हो। इण कारण जी संक्षीक सर हैंच्यों बीन सग्यी-सार प्रतप्त ही।

हुबतो रव । आ जण सरोते सूबफीम राकिरचा बणावती जण किरचा ई

, राशे दरश संबा स्टास्ट ह्यानेय दर्शन्स बताती का शिद्या , the exhibit, within a tag to be for fages on the pair ाता है। का का विकास का का अध्यान की रिस्ती से रेन्था है र हा म रहति हते र जरवहर स महित्री हो ज़ु 1 16 P मीयाळो भरजवानी में हो 1 इड सागीड़ी पद हो। होफ़र बाजगी अरू हयगी, ही । पोरानेक , चार हुवनी । हावळ भासीपो लहाको ही । कुल राप्रीसा पुरा महीना हा । बीदावाटी कानी स क्वरसा न आया न दो अक महीना हुयाया हा । इत्यातरो भूगत न कथरसा योडा ठीक हुयग्या हा । कथराणीसा भाटी परवार सुहवण र कारण परवार ने नसा घणी हो। आपर लानदान न भगो ई मानती हो। श्रो रिस्तो जानदान ऊवी मानर कीनी हुयो हो पण क्षेत्र असान उतारण सारू हुया हो। जो सबळो नाम सिरदारा रो ही खुगाया नाती आ वातान समऋ ही अर ना समझण री अरूरत हा। आदमी आदमी र काम भाव । बाज हमा तो वास तथा ।

कबरता र कोवण रो बलत हो। सीरल ओवणां सूता हा। पण नीव असवाड पसवाड दे कोनी ही। आळ म बीमो जब हो। मचरो जगतो बीमो अपारो भगत हो। बाती र मूढ माच मुल हो दण कारण चोडो पूर्वो दिवळ हो। मूत पिनल न असात हुव बावतो क कोई ब्याद है। चनकी प्रमुखी लेपर आमी अर पगांच नानी संडी हुवर क्यों— बरावी सा। चोडी ताळ चूरी रपी। बारण क कोली— अरोबो सा।

हा अठीन था। उठता कवरसा बोल्या।

वा सिराण कानी दो अन पम पाछा । कवरसा उठन बठस्या हा । यग माथ सीरल नासर कटोरी कासी । आधळपा सुकटोरी कासता नवरसा , उन री आगळपा भो दवा दी । हाळ होळ पीवण साध्यमा । उन र दील मे श्रेक सर्पाद्रो होडम्मो । नदौरी प्राणी दिवता जील्यान-प्रीडो दवा देशी दील दुर है अमोड़ी शोड़ी ओदाळ दा जामी पुन क्यामाहै। कि कार पाए पाए प ३१ बटोरी राखरे मोडो। बोडेाळ माधनकी पाछी सीर्रविमाध में देवांबर्ण जाम रन्द्रा महारती। मार्गित सुर लाक पर स्थीय तर मीमा 1) । दिया सी क्षेत्रिस हिक्सीमी क्षीयेग इस रोसीर बंधर मीयने हो में घेलिरे देवां दे प्रस्ताकी कोरता पवर्रसा क्यो किए की मिगर का 1 110 1 11 10 15 भ मार्ग (१) राज्य देश विकास मार्ग । विकास के अन्य कर कर के स्वता है। अने का स्वता कर कर के स्वता है। अने का स् चनके मुक्त मुक्त देश विकास का स्वता कर कर कर के स्वता है। अने का स्वता विकास के स्वता कर कर कर के स्वता कर कर मंगर जिल बजत जुलने इया मालम् एक्पो जील हक्पा माय हम्हों फिर हो। बासरम स्भोजल्लानो । स्यळ बील म क्रिक अलंकाली बितना बापरण लागगी ही। भीरा होठ ना मैंबणी चार्व हा पण बे हाल्या ई कोनी। डर्णर किनोड नार्य प्रीति आयोग सिंह हुन्यों। ती से खळवळी मंगी। स्था १० सः स्थान अयोग से हिस्स सर्वे छळवळी मंगी। िर ता भीता जो है पूर्वा । अवदेशा बोल्या है । १८५ और १८ १४ ११ ११ । १ । ा ।। पण भनकी रह हाच क्षीला पढता ।लावता ६, अर इणर साव ई जगरी बावळी कसमसीजण लाग्सी। शहोळ-सीबा वोली--- श्री । काई । 'दिनता तो होदाः माथहोदः स्वायस्यः १०॥ १ (७११) । १ १ १०॥ १०० । १०० । १०० । 11 bir जठेर पांची गयी जनै रोत भाषी स् 'चली' ढळवी ही विदेश धर्में की सरमावती चंडी! जॉर्ज बंडी'भारी पांप कर मिंबी हुव । बैम रेबी क 'कंडि ओळमो देवला। आलो दिन सदेह रा छिया म बीतन्यो । किणी कयो अक सबद ई कोनी पण अंक गरी मुळकाट जरूर फेंक देवती आण सगळा रात री घटना स परिचित ै। ओ कोई नुवो काम कोनी हो। ओक न ओक दिन हो ओ हवता है। उपर गाला माथ सून सी ही। छात्या पीचीजती लाग हो। अर -जाष्यां काकडिम ज्यू फाट ही। सीघो चासणो ई मुसकल हा। आखो दिन सरम म निकळग्यो। सिङ्घा पछ फेरू कसूव रो हलो आयो। जिक दिन पछ वस्त वर बाटकी री ठोड धनकी रा होठा ले ली ही। धनकी री नसो चढतो क पसवाड पही कटोरी तुपी तुपी करती ईरय जावती।

फेर बसत पसवाहो फोरचो जर्ण विक्रमपुर आवणी हुमी। अर आयो एळ जावणी मुसकत हुवयो। पसवाहो पोरती धनकी सोच ही—अ सिरदार है जिंका दारू पी पीर जापन मदबा कर। जिंका पुदा दियो सहमा हुव बै जन में सदर नाई यान करसी। जिंका रो खुन दारू बर अफीम सू काळ वहायो है व आंचा हुमन प्रिचास पत्ताहो फीरचो अर मुकत कठा न पूक सू आता करचा। वा आयो नीद मही अर आयो जाग ही। उण्ण द्वां मालम पहचो जाण कोई यापी देव है। अर सुणी ज्यो — चनकी हु तन लेवण ने आयो हू। बा आरुळ बाकत हुवन चठी। बारजो लोकन देवथी—ऊप गिनम में सारा मुळन हा। बाकर परकारा मारती चाल हो। बार बहु बावण लागती। बारजो डकर पाड़ी सीरल में बहन सीवण सागयी।

सिया मरती कून की बणण सामगी। नीद बास्या री पककां सू बीफळ ह्यगी। पतवांको फोरला पोरला है मास फाटण सामगी। नीद री मिस करपा मूनी रसी। मनिय में मटी री धरषराहुट हुवण सामगी। गाळो मासगी बेसा पटी री पाट जेनर तो ऊनड सामड हुव पछ वी अपरी मचरी चासण छाग जाव। पीसणवाळी सुनाई री चूडघा चास साथ ठेनो देव। नीद पतनां माध जतरण लाग जाव बट जगरी होळ होळ नाक बीसण साण जाव। पाग री सप यप अस पुत्रक पुत्रक सुणीन वण वा हटबढार जाग अर बारणो स्रोतर बार सामन देस तो ताबडो आगण में रसतो निजर आव।

राज रो पानो

जीवण लेक खुलो पोची है। रीजीन रो काम पोधी रा पाना है। आपा
कौग रोजीन रा रोजीन बा पाना न भरता जाबी हा । आवाजकाळी सहान
जय पाता रो नूष सिर सु मूक्याकन कर। काम साक ही नाव अमर हुव की
तो दूब जाव । मरती काम आप कर काम साक ही नाव अमर हुव की
तो दूब जाव । मरती काम आप के ही सतार रो क्रत्य है । स्वारय स्
भरघो मिनल अपण जाव न करिस्तो समक अर बाकी समळा न पायी। पण
पायी अर करिस्तो किणी र सिलाड माय कोनी सिक्यों हो हुव । आपर
कामा सुद्दी आदमी री प्याण हुव । काम के बादयी रो मोल है। पण ओ
काम किंदी निकमी है इच यो वती हो कोनी चास । काम र लार स्वारय
दीते, योखी मिनल पण मूढ माय बालीना वीख, नम्रता दीख अर मीठो
उत्तर निजर आव इक समळ करव रो इतिहास बड़ो ही मीठो हुव ।

विकमपुर रो राज विन दूषों कर रात शौषणी वधतों जाव हो । राजपराण री पुषता र साथ शीखी सवय रथो । विरोध कर तो थाटो हुव । राज-राया रो कुपता र साथ शीखी सवय रथा । मुगला र आक्रमणा से सेनापति रा वहायक जणन विखण वाद जावता रथा । मुद खता करता अर धन परवारों ई विकमपुर केन देवता । इण सु खजानो अरीज जावतो । राज री खरनो थोडो ई हो । ज्याक कानी सकट रा मदान हा । बारता रा पाया वृदता कोनी । जैने बटख पढती विकमपुर सदाई सुरसित रखते । रयत योडो ही । वाळ दून सीज बरस पढती दे रखते । देख चानरी थोडो हो । मुगला री हालत विगडती ई स्वारणी सदी भ विकमपुर र वतमान राजाजी कर्रावहनी रो दिवार हुयो च मुपल राज घराण सू सबय तीवन स्वतंत्र राज बणाय क्षेत्रा। समद्धा सिरदारा न भेद्धा करन सका सूत करी। सगद्धा राजी हुया अर इण काम में पूरो हाव बटावण रो वादो करवी।

सिरदारा काषरो बर मुलायन राजाओं न योकों नीं देवण री कसम हामि। एतुलांकी प्रात दिन अने करन च्याक्सेर री यात्रा करीं। किसी री चौत्या री अर माणों री मरमत करवायी। सावधानी सूनीण रासण री पूरो बरोबस्त करयो।

पूरी बदीबस्त करपो। ११११ । १ ११११ । ११११ । ११११ १११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । ११११ । व्यविया जय कर्ण नाम्या । पण वाब तो मात्र ब्यायो अर होदो भाई प्रक्रिह बाळ । राजाजी सगळी बात सम्भग्या । मुरी वर्बानी में मर्वा सामा । जण आपर छोट भाई न अर विसवास सिरदारा न बुकासन वयो क है तो जातू हु प्रण आ, टावरा ने बार टाव्या व्यू प्राक्ता । ब सिर ही सोगनी छान्र विस्वास निरायो । राजाजी किता स्याया हा । सबद्धी बात न समभूर विद्या । राजपूता री सोननां दाक ज्यू हव जिस साम पीव हण, री, ही मुभ काममा कर । राजाजी र मरता ई क्समां सवळी रवनी । मोग हो देखाकी मगो ई करको । मूरत्विह्बी आपर आई र शाब सुराज बलावण,लागग्या। स्वारय भरवा पड्यत भी साग साग,वास हा । वन, जिकी, जवानी न ,पार करण भागमी ही उन रो भ्याब ई बीख र मारघोड राजा साथ करघो। ध्यारा कानी स् वेपिनर हुयमै नांवासिय राजा नै, मरावंण रो जंतन । भरघो । कई सिरदारा विरोध नरधी बंण बीर्न बागी शीपित कर दिया । गोर्त्याम सासर्थ दियों मारण वासन पण व भी इल वापं नः साव रळका व इनकार करायां। छेनडामूरतसिहंशी सुद ई खेक दिन हवामहत में सत नामालिय ।राजांकी न मार नास्यो बर मंरग्यो घोषित कर दियो गराज मे 'हाको संटायो । ह स्थळ' पुषळ मचगी । राजगादी खाली कोनी रंग सन इंग साहि वर्स रा सिरदारी र्कयों न आप ई नादी भाव विराधों । पेरन्धहाराज रूपसिंहजी रा डीकरी बासी जग वंगाम राजी वंगाव देसा । भूरतसिंहबी सो बा ही 'चावता हा।

राज्ञतिनम् हुयग्पोत्त_ा अज्ञदातात्ही १घणी घणी छत्ताताती । उदश्रेप रहृयग्यी । ह्मावहजी, प्रानिहमायतीनरात्यूरराताविकमपुर स्वीहर्द्रमान ख्रद्रमा । स्विका त्यम्यात्रमा वृत्ती कान्, ली. । राज त्ये काई विश्ववासासूई प्रवता कंगी। पर राजा ही से पाना दरनी। सनली विवदावा । काल एड्र हेम महद्यानिक उन मा भ मेराज र खुमे सूर्ण मिल्मी रीज सुन रो। नीही हुर हुलम्बी र विक्रमेर्पुर रिराजिसहासन हीतन सम्बन्धा । सून करना ता सारिही वन राजिस मेडिनी विधी दोरों। सिरदार नीव नाम विरोध करण कार्ना विश्वीस बर्ठावा रिवसी के लिए अपि रेडिकाण कर संगळा बाता क्रिक्स हा पण संग्रेका राष्ट्रीय है पीनी दिनीं जीवन री अर्जवा मंजूर करता जाव हा । कहे सिरदा तिलंक री खुसी में जागीरा ही। जाव बगस्या बपाया । नूबा पटा बाटचा । रीत रा रायता सगळा ही न रघा । पण काळण में बंबची सीमीवाळ निकळे ही कीनी हो।। राजीजी मीद बेंबर बार्फकी ले लियो हो । राज तो मिल्यो पण'क्षजानो श्वाली हवंतो श्वाच हो[।]। 'मोटी [।] पंकमा री रिसवत वी १ भागै।मिलावंण साक खरावा धनवाया । बातावरण रतं तंर विमंडसो।ई' जाब हो । इण संगळी ।हासतास् वर्ध वेरमच व पेरिचिंत' हों। राजाजी मामगळी बात बताबी। सगळी। बात समक्र ने बेद' घरमचे द नि राजांजी दीवान रो पद दियो जर सगळा अखतियार देव नैग्राज संगांळण दी भार मूप बियों। वह घरमचार स्यांको अर सम्भक्षा रहो । वेत रोई सूँ माने सियो । छोटा ठाकरा न आपर कानी मिलाया अर छणा नै राजबी पे कर्ना दुव दिया। धोक्छसिह नृवी परम्परा स् ऊची पर पावण बाळा माम स् अक हा। नीं तो छोट ठिकाण न मूत पृछ हो के? बसत रो फेर हो। मान अर रुतको बधम्यो । राजपराण मे पुछ हुयगी । सेना मे कवी पद मिलग्यो । भगवान सगळी चीजा लेक साम ई, छपर पाडर दी। आदमी सगळी पाय सक पण अकल तो आपर हीय राई काम आव । समळी वाता अचाणचक ई आयगी पण गुण बेगा सा कानी आया ।

साममा नजराणो देवचो वद कर दियो । रेस चाकरी आवधी वद हुयंगी ।
राज रे सजानी ठण ठण बोसण सामयो । हाय जोवा — मणण सामगी ।
राजाजी री फोजा दुटसी । समजी निषदावा श्रेक सा । ईमाम आय एडी ।
रीवान धीरज सू काम सियो । ठाकरा री फोजा स्वतम करण रो अलान
करमो और राजाजी री अलग सू फोज नणावणी सक नरी । इण सू बोह्ज फायवा हु। राज री फोज कठोरता सू ज्याक नानी हुवता उपद्रवान दवावण सामगी । इण सू राज रो कत्वो बच्च कामयो सर विरोधी ठाकरा रो बम निकळती जाव हो । राजाजी री फोजा राज दिन व्याक कामी आवदी जावती रैवती। राजाजी विरोधी ठाकरा री जागीरी हुटाय न सामसा रो बादेस करता जाव हा । इण सु ठाकरा री ठाउपई र साय-साथ जमीन ई जावण सामगी ही ।

दूर दूर ठिकाणा में उपद्रव हवण सागम्या। ठाकर स्वतात्र हवण

विणज रा मारण धाडतिया सू भरोजन्या हा जिक सू विणजारा रो सावणी-जावणो रुक्त्यो हो। कतारिया उरखा हा। इल सू राज न बहोत ही कुक्त्याण हुवतो जाव हो। राज माथ रोसदी मार वह हो। सेठ-सावक्ष इसार तीकणो न द करता जाव हा। गाव पवादी मे आवक्स पूर्वणो ही बोरो हो। विकमपुर रा दर्याजा विस्ता प्रकण र शाग ई बकीज जावता। शहर मे चौरा रो बर बबतो जाव हो। रसत बोना काली सूरीज हो। सेक कानी राज रा नृता कर कर हुन कानी चोर बक्त्या रो बबदवी। बोळ बोकार पाडा न डाकू आपर पुर सेवता।

अकाल री छिया

जण बात्रो विश्वह है भगवान ई सुण कोनी। राज र बिगडता ई मेह
पानी वर हुयरथो। पापर जकाळ पडस्यो। गांव उजडण सामया। कसवा
सासी हुवण साप्या। ठावर री फोज अर राज री कोज, जिनी रो ई बत
पडतो वटोह्या न लूट लेवती। घोळ दोकार ई सनळा न लूटीजण री डर
रततो। नात्त हुग्ध ई मुक्तान कानी सू टीडी फाको आपमधी। टीडी-फाक रो जोर इतो रयो क जटी न ई यो निक्छ जावतो सनळा खेजडा अर
रीहीडा न चट कर जावतो। सोन दिना ताई चरती फाक सू छायी रयी।
जागा-जामा लामा कोट खोवर, सास साग समार फाक न रोक हु राग बोत से कोडी नाळ हो बरावर जान बचाई कात हो। प्रजा बर राजा री फोज्या
दोना मितर पनी ई कोडीस करी पण उच्च री चाल से की फरक कोनी
पडसो। रयत हाम ळचा कर दिया हा बर भगवान सू प्राचना कर ही कै
मात र आस-पास सू माक र निक्ळ्या पछ ई रात पड़। वे रात पत्ती दती मा
सर डी साक पत्ती काम म इ रातवासो करणो पड़यो से दिन् गाव से भीगा
स्रा हरकाई कैनी छाप।

सवाणक हैं तीन दिना ताहै काळी आधी अर विरखा झावण सू रीडी पाको सरण सानयों। अर विकमपुर कन पूर्यो जण दणरो मांच है गांव रोो हो। खेतां में हण दी परता काय्योदी दीख हो। विरखा बक्त कुकारद हुयी। जीवण साक खान हुयो। यास रो सुवाव चोको रियो। वो स्वीह बात नी, मिनल मरता मरता वचन्या। सुसाहा मारतो अनाळो पुजरस्यो कर हाड दुखावती सरदी आययी। दाकर सामीडी वाजण सामगी। विकमपुर री रपत कनाळ म तो गरमी मू बळती रपी बरसीयाळ म ठह मूँ मरण लागगी। मेह-पाणी हुया तो हो पण इत टाळर। छोच मूखां मरता मरता मच्या पण इण जीवण में की भटरक कानी ही।

ाइट्लिंबर्ड फ्रेनीयेन हो क्यो अपसर पठानकोर जावती विक्रमपुर र सार-कर निकळ्यो । गोरवें रातवासी वियो । राजाजी मुरतिविद्धनी न श्री समाचार पित्रतो जप मित्रण वासत क्या । यथी बातवीत करी । वाधि कर जावित परित्रतो क्यो पेत्र वह वहातर सार्थ के नकोर कर दियो के बेवर्ड रेजीगट रा अवीर रंजवारों रेसाय कोई श्रीमंत्र क्या रेसी विवार कींनी रेसीम प्राप्त कार्य

ब एसा ≜संधी छारा

आ साम हर की तिराम हो नाम ने नाम भाषा वर्ष विकास साम है हो है स्वास के महत्त्वा का स्वास का का को स्थाप के क्षेत्र के स्वास का में महत्त्वा के स्वास का का का का महत्त्वा का स्वास की स्वास की किए महत्त्वा करता व्यास से किया महत्त्वा के स्वास की का का साम किया के स्वास की स्

ा (हाकर सुवानस्टिह राजाजी सुरतसिहजी रा बाळगोठिया हा। बखत री तकाओ चोली तर समभ हा। धावा मे ब्रामुद्रतसिंहजी र सामा रवता । नाम री योड़ो, पूणो प्रायको ६ हुवसो। बढेरा, रो, बणायोडो हेरो हो १ खर्खी दौरो सीरी सप-देवर चालसो हो। मीन दो इतुजार करे, हा। राजाजी मरण पुरविसहजी न भोळावण दी, जह दिन , फुरण दी आस , बाधी,। सील देवर प्रणा कन पूरण लाग्या। खुन रो नाळी चारमी, जुण पुर्क, भोड़ो नारो, लगाय दियो। सब पूछणो है काही, मूछ रा बाळ बुणाया,। राजाजी हा लास आवमी हुयम्या । दिन कुरम्या । स्वास्मेर पूछ नाम ह्वण लागा । देद में , निवाद आवल लायायो । हाकरा ही जागीरा कीनील ही पण शव हो जानी री बोद, मिली । मान-तान द साग, स्याणप बापगी, दो,तीत वाबा में सफळता मिली ,पछ तो पूछो है ,ता। हतबो दूणी द्वयापी | , छाती स्वा द्वाय वोडी हुमगी, । ताजाजी , अहसान, , रो पूरी ववळी। उतार दियो। ठाकरा न साजिमी सिरदार बणाय निया। 🖽

।। ।मामोहिनवाटी। शीदांवाटी करें बळी र घावां में बोलो पराकृम दिलायो । मंपूरण रो भीरवी वमजोरं पड हो। हैं के वासत इथा न आयूर्ण रो मोरवी मृत्यो । भीरेव मार्ये जावर्ता अविर्ता दीवार्न वद घरमवर्द दुसमण री रिटकी ही निकि नावी । चुगलंबीर राजीजी रामान रात दिन भरता ह रवता । बरी सोगी करण में क्हेंई पुत्र तो कीनी । जम है नाजी जी 'री हांच उठती, हंगों रो हाप साग स्वार निर्मतो । हेगो रो वरस करस हो राजाजी री हा में ही 'अर' ना में ना 'र हंगों रो चाम हैकारों घरण रों हो । दोजाजी दीवान पू 'नीराज तो हु। हो। इना ई बळनी में पूळो नान नियो। राजाजी चोसी सर दीवान सू नाराज हुथन राजानत रो नान छनायर मृत्यु दण्ड दे दियो। दीवान वेभीत मारघो गयो। रेसचाकरी सारू ठिनाणदारो सान कराई करो हो। सगळा ठाकर नाराज हुयग्या। भौनो देसद राजाजी रा कान मर दिया। समानत में स्थानत रो सुरम सागायर पांसी पढावण रो हुनग दे दियो।

राजाजी आष्ण र मोरच पमारचा जण आप र विसवासी अर जुमार सोगा न सारी लेखाया। डेर मे दो बेंक गोल्यां राणी बर पासवाना रयगी ही। इथ कारण ठाकरों रो देरो हाली-काली लाग हो।

ठाकर कठ हुवता जच देर में रात दिन चोकी चळ-पळ हुवती। आदि हित हुाजरियां सूचिरचा रवता कर दिन कळताई मढ में जाय पूरता। दाजाजी कर कळीनणी कठीनली करता दो माची दो कूढी करता। बच्च पूक सक हो पण ठावर चुगळी करण में पूकता की पा खी केर सात गया छावरा। जिल उच्चों रा भागता कमा बढ़ीकता छावता। जारती दिनों में मिक्त चुतरी माच जमती कर सरदी में साळ में। आधी घडी मिक्त चुतरी माच जमती कर सहती में साळ में। आधी घडी मिक्त चाळती पछ कम्मूबो खावतो कर दाक जमती। होळ-होळ बारला समळा लोग चच्चा जावता। ठावरसा और से आ जावता। गोल्या री पुकार मचती। पासता पो नवत हुवती। और स्टां से कप्ता हुवती। से सरदी हुतती। स्टां हो सर्वती । स्टां हो हुतती।

जद ठाकरसां कठ हुनता रूप साथ निलार हुनतो । रखेला, पासवाना आप र नाव रो इतजार करती। वदई कदई इतजार में आमी रात आक्या मांगर निकळ जावती। जे वोई नींद सं लेबती तो उपा री हानत ससता है हुग जावती। अ समळी वसता रो इतजार करतो क ठाकरा री निजर ठडो रव बर बुउए में हेर सूपेटियो चलू हुय जान। यद रो रिस्तो बेहोगी सूहो अर मदमाती री रिस्तो रीफ सुहुनतो। समळा आप आपरी चाल चालता। हार जीत रो निषय तो सावण साळो काल ई करळी। सवार ता दोनू जणा अक दूसरेन जूसणी ई जाब हा। उणारी निजरा मे धायर जालाको रैयती। पासदाना आप रो मान देवती अर ठाकरा रो मान लेवती। पण चनकी दण हालत स अपरिचित हो। वा चठ हो बठ वा लेकती ही का कदराणी। सो अलबूर्स ज्वाक्ठ उणन भावतो नोनी। वा चठ ही बठ उण रो मान हो। त्तसो हो। आप र अधिकार रो लेकती हो। वायज मे आयी भण रूप अर गुणार कारण ऊची पद पावती जाव हो। पण जठ तो उण सरीकी केई बठी ही। ठाकरा रो निजर माथ रवण साक अपण आप न कोयर नोसीस नरपी पड़ती।

धनकी स घणवरा गुण हो समय रो अक्रत सागे आया अर केई गुण भिक्त्य रो जरूरत र कारण वाहा वाहा मा ई जण री मा बताय िया। जरूरत एक्पा घनकी अधेलन मन सुजब उच्चा रो उपयोग करपाती उपना गीर सप्तता मिली। पछ तो वा सपळी वाहान नाय कर कर न पूरी ई प्राथदो ब्रह्मच लागमी। उच्चरो दिस्हो ठाक्ता रो जरूरत सु हुमो पण अठ उच्च रो रिस्हो सण्क सुक्क रो हो जिल सू वा घबरावती। उच्च री जतराई इल मे ही क ठाकरसारा काम ता बजावती रण पण यम भारी नी हुमण देव बर इण बात रो पतो हो भी चालण देव। उच्चन घो पर अंक सागे क्कासावणा हो। ठाकरसान भी राजी राजणा हा बर आवगे जीवण भी सरस्तत राजणो हो।

- याद मं जण वा विक्रमपुर आयी कर उण री बतराई कर रक्षरलाव देख्यों जण ठावर मुजानसिंहजी रो नी मन हुयन्या। घणी भात री छोटी मोटी मुम्ब-सवर री सुस देखर ठाकरा री इच्छा इणन कठ ही राखण री हुनमी। समक्षी जाणवारी लेयर ठावरसा नस में मोसली। जिवार कारण कवरसा रो मान हो उणा न व ना कोनी कर सवाय। जेवे जरसरीर म लावर आर रो ठिकाणी गमावणी वोई समझदारी कोनी हो। कवर स सोचण लाग्या व उणान क्या दिन पत्नी ईपासवान वजाय लेवणी चाहीज ही जिम मू कोई मांग कोनी रास सकती। उणरो परिचय साधारण रूप म भी देयर खास तौर मु बतावणी चाहिज हो। इण भूल री ही दुख तो उठावणी ई पह हो ।

पण अठ धनकी जरकारीद ही। उण री व्छा रो कोई महत्व कोनी हो। ठाकर री इछा ही सब कुछ हो। ठाकरारी जरूरत ई उणरी जरूरत हो। उणन अठ आयो न योडा ई दिन हुया है पण उणन नेई सुगाया र

सामन साच माथ जावणो पहचो । उण रो सन बठ कोनी काम्यो । उण म् बेहतरीन अठ बोहळी हो। उप रो अठ कोई मौत कोनी हो कोई अस्तित कोनी हो। उतार र भाड क्यु ही । गाव रा ठाकर न्या स छोटा हा पण उणी रो मात वर्णां मुबदो हा।व सगळा री वजत आवरू सार जाणता हा। वणा

गई स्वाई न मद रो प्याला कोनी समझता हा।

रावल रा हाल

ठाकर मुजानिवहनी रो हेरो दो हुआर पावडा जमीन न पेरघोडो हो। हैरो तीन काले मुख्या है कि स्वित्यान गोवा री ख्यार केल गडाडघा ही। वतर वतर सुवाह हो। तीना, पीपठ कर काडवया सागोडी फर्चोड़ हो। गोवा, पीपठ कर काडवया सागोडी फर्चोड़ हो। गोवा, पीपठ कर काडवया सागोडी फर्चोड़ हो। गोवा, पूरा अर कर कराजा रा विक हा। तीतर उडवा किर हा। माटो लगावर थात कर माडर्स साल आवण जावण रो मारग बणायोडो हो। यर यो पून-कचरो कठीन दे नालीजती। जीमास में गोवर मीपणा कर लीए चगर कठीन दे गैरीजती। रात दिन वध रो अभनो उठवी रखतो। मेह पाणी कर फड र दिना से को अमनो वणी जोर मारती। गेलो हो जिल्ही काण जायर वड मारग म ठळ जावता।

हर रै तीना कानी माय मुणी बाह लाग्योडी ही। बेर्क कानी सामो साम रोडा लगायर पकी मींत वणायोडी ही। वीवाबीच दूरी की बीरी वणायोडी ही। वीवाबीच दूरी की बीरी वणायोडी ही। की का लोडी रोज ही। को का लोडी ही। किया हाण कानी सजी ही। की का हाण कानी सजी ही। जिल्ला काना हो। विश्वी मुंधी लागा र बठल साल कानती ही। ही। वराम कानती। वराम कराम कानती। वराम कानती ही। विश्वी मुंधी काना कानती बच्छा हो। विश्वी मुंधी काना कानती बच्छा ही। विश्वी में तीन क्यार जनानी बठला ही। वरणा र सार सार कारती ही। काना सार सार कारती ही। काना सार सार कारती ही। काना सार सार कारती ही। सार सार करामा ही कान की सार हा र सार्ट्-रिसीट ईसामद कारामी हो। साराम पर र सार-सार पेटणा री नाळ ही जिली बालळ में निल्लाती हो। हुन राणीसा

र आवज जावण रोओ ही मारण हो। अध्यक्ता लगाव सामर बणायोडा हा। च्णां र माय माळिया हा। पेटचो जठ पूरी हुवती वठ अंद मोडी हो। मोड र सामत बामळ हो। सावा चोडा गफा हा, विवर्ग मे जुम री समान जीण वगर रवता। सारल छट गुमारिया हा जिवां मे मूस-पानडी रवते। यान राकोतीस्या अठ हो हा।

सारस बारण मृ निरुळघो पछ गावा ऊठो रा छपरा हा । येपडघो रा पिरोबड़ा कठ हो हा । पास री बुगरी हैं कठ ही ही। दो तीन वेजड़ा कर राळ सारीन ही जिसान सिरस्या नृ विश्वार सांवो चौड़ो फूपड़ो क्या राह्यो हो। को बिरसा पाणी म सासरा न बायण साक साम आवतो। पोळ में बढतो हैं बाव हाच नाजी दो कोरा मिलायर जन्नी बणायोडी हो। दाक मान्य राज हैं मदसा अपन राज नवता। नीमान म सिन्या रा चूनरी माप जाजम विद्यायर ठाकरा रोज वठक कठ हो जसती। सीयाळ म बरामनी माम आवतो। हागर चालती जन्न ठावर सा साक वे विशासता।

ठाकरां न नयां दो ब्यार न्नि हुं हुया है। इस कारण वेरो लाली माली दीन हो। घोडा रा खुर हाल तांई स्ताठी साम्या पछ ई मिटपा कीनी हा। डाय हाथ कानी खुल आळी आळ मूनी सुनी साम ही। डळन पूरक रो तावडो जभी र सामन पड हो। पोवलो ऊठ खुड म सिट हो। कोन म बबती बता दूरी हुं प्यापी जल ठाकरां दुल न पाणी रा डाचा डोवस साक देर में छोड़ दियों हो।

लारस फळस सू येनो दो सौ पावडा चालर सीच मारण में मिल जावतो हो। शो मारण योडी दूर चाल्या पछ दो वाली पट हो। शेक तो गढ र सामन हमर राज र कुब वाली जिवळानो हो अर दूरो मारण सीची देवी नियर कानी जावता सायाग्य अध्यवित्व माताजी सू आवजआळो मारण आयर मिल जावतो हो।

शहर मे

राणा सो दिन सहर री ऋाकी वेकती रयो। सहर छोटो ई हो पण हो सदो ही फूटरी। अरवार उपास्तरा में भणाई री पोसवाळा ही। न दवा दाक री क्षास मी करता रवता हा। महाजना कानी सूची अंक चटनाळा ही जठ पुत्र भुपत में भणावता। सेठां र चद खात सुनुक्वी रो भरण पोसण हुय जावता।

शहर म जात जात र लोगा रा, जात र नाय सूबास बस्पोडा हा। दीवान बद हा इल बास्त कारी जबती रा दिन हा। राणो दीवानजी र दीवानबान म मिळण सारू गयो। बठ बेरो पबयो क दीवानजी र साग ठाकरसा ई 4 5 दिना पत्नी ही भटनेर कानी गया है। बठ ही राण सगळी सबरा की अर को पत्नी लगायो क उल र ठाकरा न बुलावण सारू हुक्त भेजा दियो है। राणो धनकी सूमिलण बासत बेर कानी चाल पक्या। सिस्या पडवा राणो केर जाय पत्नी।

पीळियो सुस्तीरा पाठ पढ हो। राण न अथायचक देखर हडबडाय्यो। बणतो ठड र साग पीळियो पाळ डकर गुरडा स बडणो चाव हो। मन मे सीच्यो, भी कुचेळारी किया आयो है फठ ई हताया स बैठय्यो तो तिया मारसी। राणो कोल्यो— ज माताजी री।

ज माताजी री सा । इण ठड में किया पधारधा ⁷' पोळिय पूछधो ।

काई बताळ ठाकरा । 'धूणी कन बठतो राणी बोल्यो — काल तो पाछा गांव जावण राविचार है। जिल्ला साक आध्ययो ।

गटो समाळण रो साग करतो पोळियो बोल्यो-- चिलम मह ?

काई करसा? पाछो बनाई जावधा है। ' भेर कयो — सनेसो कर दा तो मिलणो हुय जाव। पाळिय राजी सोरो हुयम्यो। बो सनेसो करण सातर सामा सामा पग उठायर पेढमा कानी चाल्यो। सनसो करन पाछो आमा जित तो बो हापण सामम्यो।

आरपन मृबठो राणा बोल्यो। हुआप ई आयर मिस संसू। कवतो-स्वतो राणो मिलण सारू चाल पढयो।

चिलकारो दिन हा पण जिलकारो ठब सुदकी योडो सो लागे हा। ठड बधती जाव ही । बापर सकता कानी हथी ही पण पूर म बाफर री भलक दीलग लागगी ही। रागो पेडचा कन आमर खडी हमम्मी । पेडचा री माळ म अधार री छिया पडण लागगी। जाळी नाय सुचानको पेडचारी सनाय ई बताव हा । पण पून पसवाड रा नाभा जरू र उठाव ही । थोडी साळ पछ धनकी पेटचा सू अतरण लागगी । यगा माथ पहता चिलको इया मालम पह हो जाण रित रा स्वायत अरणन कामनेव जुही र क्ला री प्या मे निछरावळ कर है। पीळो पोमचो ओडघा धनकी होळ होळ उत्तर ही। रजही बाध्योडी ही। रशही नीच मींढी सोवै ही। नाना म पती सुरिक्या हा। नाक म नाटो पळपळाट कर हो। गळ मे गळपटियो हो। अक सब दोनू छात्यां न अक कर राली ही। बुक्या माय टडा हो। हाया म सास री चूडपा ही। आंगळपो म बींटचा सीव ही। केसरिया दूढती माय सु सुढी गराई शे आभास देव ही। आयो कदाडो परल नाय स् हुयर पटलो साथ साम्याडो हो । मघरी चाल स् उत्तरती विश्व न अकिंपत करण रो अभिमान कर ही। आस्या म घाल्याही काजळ रति री पलका न छेड बठाव हो। काळी भवर कामदेव र बाण रो धाकपण निया हो । काचळी म फाटती छात्या कुढती स कसीज ही । जोवण रा पुनतो रस सुठी म रसीज हो भरीज हो। पतळी कमर रस र भार स बळ साव ही। छाती आग पत्नो रासर पाछो हाथ नीच करती जण इया मालम पडता जाण धण सुरति-सुख देवती देवती पाछी सिरर ही। पर्गारी 'आगळपा म बाजवी बिखुडी अभिमान सू जावती ,जुबती रो मारण बताय ही।

कामणवारी रा, आख्या राकोबा ऊचा हुयन नीच क्रुक हा। राणां चितराम सा हुयोडा ऊभो धनकी न देखता ई रयो—रित र आवण स् आण कामदेव चमपुनो हुयरबो हुव।

कन क्षायने कयो—'बाबो राणाजी । बठीन चाला।' अर वा मारग बसावती सारकी वासळ कानी चाल पढी। बासळ म साचो पडपा हो। उण कानी देखती डोली—'बठ बठो। समळी बाता कराला।'

राण साच साच बठर सगळी बात बतायो । धनकी बोसी बोणी सुणती रसी । अधारो बधतो जाव हो । ठक सुकडती जाव हो । सगळी बात सुणर धनकी बोली---

क्षाप र साम सनको आर्थापछ ना को भूख लाग है अर ना नीव आय है। क्य पालणो है 9

राण बताया— सकरायत र दिन पोहर श्रेक रात गया पछ लारल फळस र सामन जाळ नीच ऊभी मिलसू। चणसूपला सीतर री श्रवाज करूता। जण सुवार आ जायी।

बात करन राणो पाछा आया जित तो पीळिया ऊथण लागयो हो। राण पुछ्या— चिलम पीनो ?'

पोळियो बोल्यो—'ब ई पीबो ।

राणी समझम्यो म पीळियी शीद मे पूज हुयोडी है। औ तो की और ही पीती। राणी चिकम भरत पीवण सायमा। कण ई बाक मू आर कण ई बात सू मूबो काढ हो। उळदबोडा निचार पूज साथ बार आव हा अरठड र भार सू दबता जाव हा। चिलम भाडर राणा उठया अर पीळिय सूज माताओं री करी। पीळियो चमकर बाल्यो—'बात हुययो ? पेर कर आयोजा?

राण मुठकर मूढो सांत्यों—'देसो, कद आवणो हुव 1' अर राणा पाळ र सार तिकळण लालायो । राण आशी रात जवाळो म वो री। मसावटी हुवण साम्यो जण उठर साम कानी देखते। आभी तारों वू मैंनी भरचा हो। अवार दलवाड में तारा चणा सोवणा दोल हा। पुराणी यादो सा विवरचोड़ा तारा भावा विरखा मीठा साग हा। यून प्रकार मारती बाल हो। आखी रात वरस्योडी ठड लमण साणती हो। आगळचा तकात ठड र लाग जमती जाव हो। अभ्या कार्य तकार का मती जाव हो। सुण कार्य कार्य हो स्वर्ण कारती जाव हो। सुण मोळात में कारती हो हु एप हो। विश्व होळ गरी हुवती जाव हो अर साळात मिटलो जाव हो। राण लोगो मार्ग वाड न नीरी अर आप जरूरी कामा सुण्यार हुवन जावण री त्यारी करण सालायो। स्वाण कहार पूर्व त्यार करन हाम तथावण सालायो। इता न जुवारीजी उठर बार आयाया। त्यारी देवर पुष्टों विष्ट पुष्टों ने विश्व का बार है।

हा, सवार स्वान हुवणो हो अर आप र जागण न अडीक हो। राण जयळो दियो।

'पाहर श्रेक दिन खडेघा पछ दुरता ? पुतारीजी बोल्या — ठड सासी है।

तावडो आवणकाळो है राण पढ्तर दियो— अर पडो ई सासी करणो है। पछ पुजारीजी न डडीत करन मोरी सोलर साढ न ऊमी करी अर दुर वहीर हुयो।

यगीची सूबार निकळर साढ न जकायी अर सारल आसण माय वठर ठाकर मारन चठायो। टिचकारी देय न मोरी दो सडकायी अर विकमपुर र बार बार ई गाव कानी टुरप्यो। अपून आम म साली गरी साल हुयर निलस्ती जाव हो। जड़चा में घोळ मृद रा मुरज दीवण सामध्या। होळ होळ सुरह लान हुमर चमरुण लागप्या। लाली सिरवची जाव ही। किरणा आमो चीरन विलस्ती जाव ही। पण राण रा ध्यान मारण कानी हो। साढ अंक चाल सु बालती जाव ही। तावडो चळतो जाव हो। सुतर सवार र साथ री गामळ पायड कन कर हुवती खासण माथ सायगी। पण साढ ढाण पड़ी चालती हैं जाव ही।

सूरज सूब विवाछ जावन काया जग रागां रामसर कन पूर्त्यों। कूबों जातर वस्ताया हा। बळट चर हा। कुगाया पाणी से जा चूनी ही। सारर वैळ्या म पाणी पीव हा। ब्रोरा गट माथ बठर 'हात हा। पणचट खाली हो। मास म पाणी पीव हा। ब्रोरा गट माथ बठर 'हात हा। पणचट खाली हो। माश बठर रोडी खाय मर बिलम पीवी। अध्यक्षी जुसताय र पाछो सात माथ वठर रवान हुयो। आपती रिन सूरत र साम खान वालतो रयो। रिजून री ठडी पून दुमर हो। हो। तथा सात हो तथा है वाली हुत र पाछो ठडी चालन लागगी ही। पूर बता र ठडी वाल का सात आपती वालतो पित हो। या सात आपता वालतो पाल का सात हो। हो। हो। हो। हो। हो। हो। हो। सूर का वालतो वालतो चलर पित्र प्रवास का विस्ता म का हो। या वालतो वालतो चलरा वाल हो। या वाल सात हो। या वाल हो वाल हो वाल हो। या वाल हो। या वाल हो। या वाल हो। या वाल हो। वाल हो वाल हो वाल हो। या वाल हो। या वाल हो। वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हो वाल हो वाल मन हो। वाल रो वाल हो वाल हम हमारे हिस्स हो।

गाय, हाणी मारण माथ आव हा पण राणी सगळा न लार छोडती जाव हो। उगन ना तो कठई ठरण री फुरसत ही अरना बात करण री। धार पंडिय सो चातनो हो जांव हो।

पोहर केन रात बळणी जण गाव पविया सा उभरपा । उड ई लायी खापी पडण लागगी । सांड रा पग ई लाया खाता पड हा । गाव यूव र गोट म ऊपडतो नेड मू नेडा बाव हा । गाव री काकड बाया पछ तो नीमडा र मायकर कुव रा थोळा बोळा मरवा फाकण लागचा हा। पून र फटकार सू

हो ।

हालती डाळपा री सुसाड कनपटचा कन फटीड़ सा मारण शागग्यो हो। अधारध्य हवता बका ई भूपडा भलकण लागम्या हा बर उणा र बीचोबीच रावळ री मेडी अळग सू ई दील ही। आधूण कानी देख्यो तो सूरज रो कठई नांव निसाण ई नोनी हो। चाद सूरज सुपछा ई छिपग्यो हो। तारा भिल मिल भिलमिल करताहा पण उणाम नातो चांद री सीतळताही अर ना सूरज री गरमी । ठढ बंधण शामगी ही । ठढी पून चाल ही । राणी भूव माथ सांद्र न पाणी पायर गायम बडण लाग्यो। गाय रागिडर पुरधा माम सू भूसण लागन्या हा । घोरका करन सगळा न कराव हा । गाव में सापी पहायी

पर र कन पूनर राजा सांड सु सदूबर जतरया। माहो सीनण सांक हों । पूनरी सांव लाली पड़ी हों। पूनरी सांव लाली पड़ी हों। पूर्व में सुत सुत मुद्दों कावर देक्या कर निस्पृद्ध माव से देखर मुद्दों वासी पांतर सीयग्यों। हेली सुन्तर पर पिराणों स्कार सोवर बार आयों। भार र क्षार सीयग्यों। हेली सुन्तर पर पिराणों स्कार कोंडर बार आयों। भार र कावर सीयग्यों। स्वार कावर पत्नायन सांवी। सिरु प्रतास कोंडर सांव आयों एक सांवी। सांवर प्रतास कोंडर सांव आयों हो सांवर प्रतास र प्रतास कोंडर सांवर सांवी। सांवर प्रतास कोंडर सांवर सांवर

मे बोहळो मोडो कर दियो।

'दुरपो तो बेगो ई हा। बारण म कडई ठरचा कोनी। तू सीया मरती बेगी ई सोयपी दील, जिंक मृतन बोहळा मोडो लाग है।

'भाज री आस छोड दी ही ।' आज टह ठी सामीडी है।

129

हो। भूत नाय पर्दय क्राह माय सू गूणिय स तुर्वाणो पानी पानती बोनी— हाय-मुझे धायर बा बाना। अर बा बनणो नाय सू केनसी उठायर भूत माय राशी। राशा हाथ मुझे धोयण सारू बार आयया। यर-पराणो प्रतक्षे नोय मू बाठावे कार पारी मांच सू बाजरा हा झाटो सेयर ओसपन सानी। बीरिय सूंभारा बार कारर परदी सार कठाक सामारी। पूलो चोको चेतन हुवन्यो। ऋषदो जानच सुमरी बणो। रोटी पोयर हेल्की माद नाकी। दूसरी रोटी और पावण सायगी। इत न राणो हाय मुढा पोयर पाछो स्थायम् अर बेबणी कन गूणियो राखर तपण लागम्यो। या रोटी उपब्रह सेवण सायगी। पछ केलडी सु रोटी उतारत पूल हिगा राखर केकच सावगी अर पोयोडी राटी केलडी सु रोटी उतारत पूल हिगा राखर केकच सावगी अर पोयोडी राटी केलडी माच राख दी। वर्षाच्य राविष्य रो स्वाच कोरपो। रोटी केल रावे के स्वाच कोरपो। रोटी किल रावे माच साव ही। वर्षाच्य कोरपो। रोटी किल उच्चना। रोटी अक्षण्य हो। रोटी न वो केव बार कोरी। रोटी किल उच्चना। रोटी अक्षण्य राखी अर पिनोडी सु पी दुरस राण र सामन सिरकायो। राणो पसाची मारन जीमण सागम्यो। हुइधी सू साटो याहगी।

स्यू, धनकी मिसी ?

काई बात हुयी ?'

BT I

बोह्जी वाता हुयी है। या आवण सारू त्यार है। वो ज्यार दिना पछ पाछो जायर उणन लावणी पढसी।

रोटी लावतो लावतो राणो धनकी र विस स सोचण सानामी। सनकी श्रेक विद्ववना है ना समाधान ? इस रो हाथ कालणी समाधान है का अत ? दोनू बाता उपार सागर है हाथ है। ज इसर जीवल स घर घर घर कणी भी हुवतो तो इसन पुराणों पर होवणों है जो पढ़ती तो। आ ना तो पणा घर छोड़ भी है जो पढ़ती तो। आ ना तो पणा घर छोड़ भी है जो पढ़ती तो। आ ना तो पणा घर छोड़ भी है जो पढ़ती तो सबकूरों है। जेर मजदूरी सु सापरो अपमान तो नोनी स्थो जा सक। इस वासत सबकूरों में जेर आ छा अधिया साक पर प्रावत सबकूरों में जेर आ छा अधिया साक पर पर छोड़ से सो साम शिवदाना सबकूरों है सुने नाव है।

फैर सोनण लाग्यो हुन्ठ इण जनाळ म जाय फस्यो ? की लेगो न देगो। अधर जन में लटकतो नठ ईमारचा ती जानू। अने अदीठ अब री कल्पना सूचणर चर नाथ नुस्ती जानण लाग्यो। इसा नाई सोचो हो ?

'सोच कोई हो? बार विस में ई ।' चमकर चळुकरतो राणो बोल्यो ।

'म्हार विस मे का धनकी र विस म ?' काठडी घोयर छनेडी मे राखती घरधिराणी ठिठोळी नरी ।

'धनकी मे ल्सा काई गुण है? हु तो थारी आख्या री गराई मे गम्योहो हो । सोटो राखत राण उथळी दियो ।

बाळी माजण सारू ले जावती वा बोली- थे तपो। ह अवार वाळी माजर लाव्ह।

थोडी ताळ म बा पाछी बायगी। पल्ल सु भालर गुणियो लेयगी। हाथ मुद्दी धोयो धर पाघर री लावन स मुद्दी पछती पाछी आयर कन बठती बोली- अब बतावो थे काई सोच हा ?

सोच काई हो ? सीया मरत रा हाड वापण लागग्या हा । पळपळाट करत चर बानी देखर बोल्यो- ओ विलको कांग रो है ??

चूलो ठडो पडण लागम्यो हो। बेपढी भोभर मे ओटती बोली-घाली अब सावा।

वोहर-अंच रित चढायो हो। जाभो साण हो। सूरव की तेजी माम हो। डाकर ठरवी हो। टाकर तावड म क्रभा हा। वेह होरा रण विरंग टीपका ओडपोड़ हा कर वेह मानारा तोवा बणावर कोड रास्या हा। वेह हो तर पह निकास में कावी कर वेह मोनी हो। कावर को तोवा हो। कावर हो री विनोडण मोधीडो ही। कावर को मार्टिक्स वेहका के क्षण लिक्स पीयोड़ा हा। कावर को तावा हा। में अंच छोरी र गळा म हसली ही। छोरघो गोडो ताई मार्थिया पर रास्या हा। माप कर पाटी हा की हमारी हो। मार्क भी दस्ता ही। मार्क भी दस्ता ही। मार्क भी दस्ता हमारी ही। मार्क भी दस्ता पाता हमारी हो। मार्क भी दस्ता पाता हमारी हो। मार्क भी दस्ता पाता हमारी हमारी हमारी पाता हमारी हमारी हमारी पाता हमारी हमारी हमारी पाता हमारी हमा

सुरजी बाबा ताबको ई काढ चारा टाबरिया सीमा ई मर।

जुगाया चीक रो नाम कर ही। आदमी बालल में बताळी कर हा। सासरों न परण सारू बार कार दिया हा। तांव रा मोटपार जुगाई समळा पथ लायोड़ा हा। गांवा म की दिवान है न पूर्य कमानस अर इंग्यार र दिन चाली होनी फोर्डल विराज्यों मोनी हुव। इन कारण जुगायों रो वेगा अर मोडो ठठगो दिना माथ निमर नर—जिन दिन पीटो घणी काम हुव, तकक उठ जान मर निम दिन पीतथी विलोवणों मो हुव उण दिन सूरव उत्थाप पत्नी बठ जान। मिनल सदा ईंगूरज र साम ईं उठ अर पोहर राठ गांधा पक्ष सी जाव। राण सूरज ऊपता ई उठन बरूरी काम सूफारिक हुयर सिनान करपो पछ माताजी रो व्यान घरघो । घडी बेक दिन चढघो जण रावळ में ठाकरो सुमिलण न पाल्यो ।

रावळी क्यो वको बणायोडो हो। तीन वानी वाड लगायर रावळ रो रूप बणायोडो। सामन गाठा लागायर गोवर पीळी मिट्टी कर मुद्ध कृ नीप्पोडो हो। जीवण हाच वानी चीकी बणायोडी हो। चीवी माम की हो। सामन सांबी चोडो वालळ हो। बायल से लावड म वठी मोधी कठां र जीवां र कारपां लगाव हो। वावक्यात कठ कमा हा। सामन बृतरी माम बौनीन माना डाळपोडा हा। तावडो चडतो जाव हा। ठाकरमा माम माय बात हा। परवार रा दो केंद्र जावडो कर होळ होळ वाता कर हा। राण बातळ म पन्यारो करन जायर सावण रा मूवना दी। सावारी सुप्या सगळा री प्यान राण कानी गयो। राण सगळा सु ज मातावी री करी कर करो—'काई सला मृत हुव है?

'आयो राणोशी आज दिनूय दिनूस ई 1' ठाकरसा बोल्या--- कठई बार गयोडा हा काई?

हो, दो चार दिनां साक बार गयो हो।

मई आदम्यान तो मोरच माय मेल दिया है अर म्हार्र आवण री स्पारी बरतीज है। ठावरां हाचर इसार सूराण न मांच माय बठण री क्यो।

रानो मांच री दावण वानी बठायो । ठावरसा आपर आदम्या सूचोडी ताळ मना-मून वरता रहा । हुन-हुन वद पूनशी ठावरसा सीमा ई अठ सू रवाना हुन्य नीम सारग माय चन्या जानी विद्या विद्या आग्यी ठठ अर बळ्या नाममा हुन र साम हुनी । सन्छी बानो वरन समळा आप आपर किसम-सर जावन री स्वार्थ करण साममा ।

रावल मे

पोहर-श्रेष दिन चन्नो हो। आयो साफ हो। सूरत वी तेती माप हो। अफर ठरमी हो। टावर लावड में ऊभा हा। केई छोरा रंग विराग टीपला ओड पोड़ा हा अर केई मामारा लोवा वणावर ओड रास्या हा। बीसटी रा फुगल्या स्प्रयोड़ हा। कमर से बाळी कल पर डोरो री कानीड़ हा सामेडी हो। क्नीड़घा से मारदिळ्या, कोडचा वर कमलतीळ्या पीयोडा हा फिल सू टावरीन निजर मी लाग। पंगा ऊभाणा हा। वी लेंग छोरो र गळा में हसली हो। छोरघा गोडा लाई वायरिया पर रास्था हा। मास ऊरर पाटोड़ा ओडणा री छोटी लोडच्या वर्ग स्था हा। मास ऊरर पाटोड़ा ओडणा री छोटी लोडच्या वर्ग स्था टावरिया पाट से स्था

सुरजी बाबा तावहो ई काढ षारा टावरिया सीवा ई मर ।

लुगायां चौक रो कान कर हो। आदमी बालल मंदताळी कर हा। सासरा क चरण सारू बार काढ दिया हा। बाद रा मोटपार लुगाई सगळा पर साम्योग हा। यावा ग ला रियाज है क पूर्व आवायत कर इत्यारत र दिन चाली कोती फोर्डल विज्ञालो कोनो हुव। इल कारण सुगाया रो वेगो अर मोडो जेठगी दिना माथ निकर कर—जिक दिन थोडो यागी चाम हुव, तडक उठ जाव कर जिल दिन पीसणी विज्ञोत्रणो नो हुव उल दिन सूरत उत्याप तो उठ जाव। निनस सदा ई सुरव र साग ई उठ वर पोहर रात गया पढ़ी जाव।

राण सूरज ऊगतो ई चठन जरूरी काम सु फारिक हुयर सिनान र रघो पछ माताजी रो ध्यान घरघो। घडी जेन दिन चढघो जण रावळ मे ठाकरा स मिलण न चाल्यो ।

रावळो कचो पको बणायोडो हो । तीन कानी बाढ समायर रावळ रो रूप बणायोद्यो । सामन भाठा लागायर गोबर, पीळी मिट्टी अर मुरह स् नीप्योद्दो हो। जीवण हाय कानी चौकी बणायोदी ही। चौकी माय ओटो हो। सामन लोबी चौडी बाखळ ही।बाखल म सावड मे बठी मोची ऊठाँर जीगा र पारचां लगाव हो । पाच सात कठ कमा हा । सामन चुतरी माम दो-तीन माचा दाळघोडा हा । तावडी चढतो जाव हा । ठाकरसा माच माथ थठा हा। परवार रादो अके जणाकन बठा होळ होळ बाता कर हा। राण बागळ म खबारी करन आपर जावण रा सूचना दी। खखारी सुण्या सगळा रो ध्यान राण काली नयो। राण सगळां सु अ माताजी री करी अर कयो--'बाई सला सत हव है ?'

भावो राणोजी, आज दिनून दिनून ई । 'ठाकरसा बोल्या---'मठई बार गयोडा हा काई?'

'हा, दो चार दिना सारू बार गयो हो।

ने ६ आदम्यान तो मोरच माथ मेल दिया है अर म्हार जावण री रयारा बरतीज है। ठावरा हाय र इसार स राण न माच माथ बठण रो क्यो १

राणी मांच री दावण बानी बठम्यो । ठाव रसा आपर आदम्या सू घोडी ताळ मला-मूत वरता रया। कुण-नुण वद पूससी ठाकरसा सीधा ई अठसू रवाना हुयन मीघ मारग माथ चाया जामी विता विशा बादमी, ऊठ बर बळपा गारपां कुण र साम हुसी। समळी बानां करन समळा आप-आपर रिकाण-सर जावण री श्यारां करण सागम्या ।

पोहर अेक दिन चढायो हो। आयो साम हो। सूरज की तेजी माय हो। झाकर ठरमी हो। टावर तावड मं कमा हा। केई छोरा रण विरता टोमला ओवसोडा हा सर केई मामारा खोगा वणायर ओड राक्या हा। बोबटी रा फगल्या प्रयोधा हा। क्यर मं काळी कम र डोरो री किनोडा साधोडी हो। कनोडघा में मायिक्या, कोडचा वर कवलोळ्या पोयोडा हा जिंक सू टावरों न निजर भी सारा। पणा कमाणा हा। वो जेन छोरो र गळा में हससी हो। छोरचा गोडा ताई वाचरिया पर राक्या हा। माम करर प्राटीडा ओडणा री छोटी कोडच्या वणायर नाख रासी हो। गळ में देस पाया पणित्या चाल राज्या हा। भेळा हुयर सगळा टावरिया पाव

> सुरजी बाबा तावडी ई काढ षारा टावरिया सीया ई मर।

खुगायों चौक रो काम कर हो। आदमी वालस म दताळी कर हा। सासरा न चरण सारू बार काढ दिया हा। गाव रा मोठघार लुगाई सगळा घर सारावाहा। गावा म भी रिवाज है के दू यू अमावस भर इंग्यारस र पर चानों मो फोर्ड विश्वाचिक के तो हुए व क्या बार मायाया रो बेगो अर मोडो उठगो दिना माथ निमर कर—जिक दिन बोडो घणो काम हुन, तडक उठ जाव वर जिल्म दिन पीसची दिलीवची नी हुव उच्च दिन सूरज कराया पत्नी डठ जान। मिनस सदा ई सुरज र साग ई उठ अर पोहर रात गया पर हो जाव।

राण सूरज कगता है उठन जरूरी नाम सू फारिक हुमर सिनान करमो पछ मातानी रो ध्यान घरमो । घडी लेंक दिन चढमो अण रायळ में ठाकरो सू मिलण न चाल्यो ।

रावळो क्यो पको वणायोडो हो। तीन कागी वाढ समायर रावळ रो क्या वणायोडो। सामन माठा लागावर गोवर थीळी मिट्टी वर मुरड सू नीप्पोडो हो। जीवर हाय कागी वोकी वणायोडी हो। जीवर हाय कागी वोकी वणायोडी हो। जीवर हो को हो। जीवर हाय कागी वोकी साथ से हो सामन बूतरी माय हो लागायोडी हो। सामन बूतरी माय हो लीम रावर हो हा सामन बूतरी माय हो लीम गावा डाळपोडा हा। तावडो चढतो जाव हो। ठाकरता माय माय वडा हो। परावर रा दो जेल जगा क्या होळ होळ वाता कर हा। राम बाल के सकता है। परावर रा दो जेल जगा क्या हो हो हो छा वाता कर हा। राम बाल के सकता हो। राम साम का हो। परावर रा दो जेल जगा क्या हो सुनता हो। सलारो सुन्या समळा रो ध्यान राण काशी मधी। राण समळा सुंवर वाताती रो करी झर वरी—'काई सला सूत हुव है ?

'आवो राणोजी, आज दिनुस दिनुस ईं!' ठाकरसा बोल्या---- 'कठई बार गयोडा हा काई ?

'हो, दो चार दिना साक्ष्यार गयो हो।

मैई बादम्या न तो मोरच माथ मेल दिवा है अर म्हार जावण री स्मारा बरतीन है। ठाकरा हाथ र इसार सूराण न मांच माथ बठण रो मंगो।

राणो मांच री यावण वानी बठायो । ठाव रसा आपर आदम्या सू घोडी ठाळ समानूत वरता रता । कुण-कुण वद पूगसी, ठाव रसा सीधा ई अठ मू रताता हुपन गीध मारण माथ चया आणी, दिता विता आदमी उठ अर बठाधा गावधा हुण र माण हुसी। समठी बाता वरन समळा आप-आपर ठिकाण-सर जावम री शार्या करण सावया।

रावल मे

पोहर-अंक दिन चढन्यो हो। आभी साफ हो। सूरज की तेजी माध हो। डाफर ठरपी ही। टावर सावड म ऊमा हा। केई छोरा रग विरसा

सुरभी बाबा ताबडो ई काढ मारा टावरिया सीया ई मर ! सुरायां चौक रो काम कर ही । बादमी बरलल में बताळी कर हा ।

सासरात चरण साक बार काट किया हो। गाव रा मोटपार लुगाई सगळा यस सामोडा हा। गावा में को रिवार है के पूर्म अमासस कर रूपार सर दिन पात्री कोणी मोई कि विश्वालों को बीहु वा इस करण सुनाया रो मेगा अर मोडो उठणो दिना माथ निमर कर—जिंक दिन थोडो पणो काम हुव तडक उठ जाव कर जिंवा दिन पीसचो विलोवचो नी हुव उण दिन सूरत ऊम्मा पली उठ जाव। मिनस सवाई सूरव र साथ ई उठ अर पोहर रात गामी पछ सी जाव।

राण सूरज कवता ई उठन जरूरी काम सु फारिक हुयर सिनान करघी पछ मातानी रो ध्यान घरचो । घडी बेक दिन घढची जण रावळ मे ठाकरां म मिलण न चाल्यो।

रावळो कचो-पको बणायोडो हो । तीन कानी बाड समायर रावळ रो रूप बणायोहो । सामन भाठा लागायर गोबर, पीळी मिट्री अर मुरड स् नीप्योदो हो। जीवण हाय कानी चौनी बणायोटी ही । चौकी माय ओटो हो। सामन लाबी चौडी बासळ ही। बालल मे तावड मे बठी मोची कठा र श्रीणांर कारचाल लगव हो । पाच मात ऊठ ऊना हा। सामन चृतरी माप दो-तीन माना वाळघोडा हा । तावडो चडतो जाव हा । ठाकरसा मान माय मठा हा। परवार रा दो शेन जणा कन बठा होळ होळ वाता कर हा। राण बायळ में लथारी करन आपर बावण रासुबना दी। खखारी सुण्या सगळा रो व्यान राण कानी गयो। राण सगळा सु 'ज माताजी री करी अर ¥यो--'वोई सला सुत हव है ?'

'आवा राणोजी बाज न्त्रिय दिनुस ई !' ठाकरसा बोल्या—'कठई बार गयोडा हा कोई ?*

'हो, दो चार दिनां सारू बार गयो हो।'

'ने ई आदम्यान तो मोरच माम मेल दिया है अर म्हार जावण री स्पारं बरतीज है। ठाकरा हाथ र इसार सुराण न मांच माथ बठण रो **ग**यो ।

गणो मांच री दावण कानी बढम्यो । ठाकरसा आपर आदम्या सू थोडी ताळ सना-मूत करनारया। क्रूण-पूण कद पुगसी, ठाकरसा सीघाई झठ स् रवाना हुयन सीध मारम माथ चल्या जानी, किता किता बादमी ऊठ बर बळपा गावधी कुण र साग हुसी। सयळी बार्ता करन सगळा आप आपर रिकाण-सर जावम री त्यारी करण सायग्या ।

सगळा गया परा जण राणो बोल्यो-— बदन सेनापित बणायर भटनेर माय घाबो बोलण सारू केई दिना पत्ती ई विक्र मपुर सूरवान कर दियों है। मन आं जाणकारों बठ ई मिली।

'सगळी बात साची है [?]

'हां आपर रन परवानो कोनी पूग्यो बाई ?'

ओ तो बार जावता ई पूगन्यो हो । और काई बात हुवी ⁷ उत्सुकता स पुछयो ।

'बात समझी हुमयो । वा आवणन त्यार है । हु उथन लेयन सीमो काळी दूगरी पूग जानू । काप कठ मूई उथन बुलाय सिया । हू घोडा दिन वठ देरसू । बात मोळी पड जासी अथ आपरो सतती आया सूमधो मा जासू। मी तो मन ठाकर शुरजनसिह्बी सूबर रक्षी । ठाकर सुरजनसिह्बी क्यार बाय साथ गया है जथ ही बात करण रो सीको मिल सक्यो । सगळी बात त करन आयो हू। राथ सारी बाता खुलासा करन बतायी अर चुप हुयस्यो ।

होपाळ में ठाकरा र जिलाह माथ पतीन री बूबा आवण लागायों। स्विया री दिया है चौडण जागयों। बाळ्यों बन सू जावती लाग्यों। मिलण रा सुख लाबी हुरी सू पाड़ो बौडण काम्य्यों। बोडा मुस्त हुवर बीस्या— काई बताड, मन की काल है जावणों पदली। बीधों बठ है पूगण रो परवानों आयोंडों हैं। बा सम्बद्धांन वा बात होल तार्व बतायों कोनी हैं। हुतन हैं अबीज हों। सब तू आयम्यों, हु अठ सीधों पत्यों जात्। उचन बुलावण रो माळों बन्धों से स्वार्थ होताया रो साम्यों बन्धों स्वार्थ का

ये गुलाव न भेज निया। वो धनकी न तेयर बठ बर जासी बर पछ अपन सगळा समाचार मुगताय देसी। राण समभायो।

बोहळी ताळ ताई ऱ्याई बाता हुवती रयी। राणो बो यो → अब हू जावु? सिझ्या रा का काल दिनुग गाओ मिल लेगु।

72 माभळ

हा।' क्यर ठाकरका जेन गरो निसकारो नास्यो जाण काळन रा दो टुकडा हुवन बिलर हा। पणी मोठी बात हीय सू अळगी हुन है। हुकार र साग ई ठाकरसा री बोहळी इखावा उणा न इया छोडगी विया सुरित सुख मे इकरणी सा गरब र कारण उषान अवविचाळ ई छोड जाव।

चर री वमक होछ होछ मदी पडण लागगी हो। काछजो हो सी हाप भीच न्वती जाब हा। ठाव रसा सावण लागन्या—आपर विस में, ठुकराणीया र विस से अर पनकी र विस से भी जिनक मुमल सामयो जोर जोर सू। पूनर पूनर, इल चक में वो ई रवन्या। ठाव रसा हारन देख हा—ठुकराणी। पनकी, पनकी ठुवराणी। अंक रो जातिनक सहबार अर केक रो औरत गत विशेषता जिवरी आपरी अरूरत न लेबर जीवणी चाव ही, ठरक सू। ठाकरसा आप रो सगळी कम मुलाबर लंक मिनक च्यू दो बसी जीवणी चाव ! अर को जीवम उसन जठ आपरो समळी गरस गळाव न लेक हुव लाव अर महर्शी मूल सहरीर लड़ी हुव जाव। ठाकरा न यनकी जीतती सावी अर ठुकराणीसा आपर जह र साथ हारता सामय।

चदत तावह साग ठाकरसा र तिसाह साथ वसी। रा बाळा छूटाया। गमछ सु सिसाह एमह रणहर पूछ्या जाण आपरी सवळी उदासी न पूछ से सवी वाब हा। पण उदासी मिछाह माथ कोती ही। सा दूर फठ ई बठी बढी आपरा अनाण नागण नेत हो। ठाकरसा साथली सार सू पीटीज्यों हा हा। आस्या उपा पी खुती ही, पण सामन दोक की कोती हो।

माप न आरोगण बासत महोक है।

'जा, पाणी सा ।

पाणी आया पछ ठाल रसा आपरो मूढी रवड रगडर घोमी अर कुरछो करपो, जाण उदासी न धोमर पाणी साम बनाव दो हुन । अब उण माथ मूक है। टसरियो खोलर पाणी साम बुस लो । निलम मरण रो हुकन दियो। हो तीन पूना बांची जण मूढ साथ भाडाणी मुमनान सावणी ताथ आयी अर आरोजन साथ चाल पहणा। गांव छोगे हो। घोडी सी बस्ती हो। सीवाळ म सग्जा गांवमाळा मिलर लेक सार है कूवो वसावता। वगत वेस्तत कर दततो। इण बातत सीयाळ म दो तीन पढ़ी कूबो वस्तो। सगळी है जुनावा पाणी तिवण साल हुव जावती। किक परा म पणा पाणी लावता वाई गांणी सू प्रतो रस्ती। ज किणी न जरूरत पढ़ तो। जिल्हा मांची साथ सक हो। पण बो आम रिवाज कोनी हो। सगळा पाणी सावण रो काम पोहर वित पणा है पूरी न स्ता। सावरा सावर स्ता की सावरा सावरा

कूनो गाव र बार हो। पाणी कडो हा। साठ सितरपुरस नीच। नो पडोई सर नोठो हा। पडेधा नग छोटो जात बाळा खातर पडोई ही। नैठ र सार बार बेळी ही। बूचो च्यारा नगती तावळा सातर पडो बसायोडा हो। तूचर सार पोपळ जर नीम हा। इणा र कन सरदा सोटा साठा रारपोडा हा जिका माथ भाव रा मोट्यार अरटावरसिनान नरपा करता। नन ई अंचरा पडी रो सातरो खेजडो हो। खुवाया अठतेल ढाळण न आवती। नानडिया रा महूसा अठ ई उतारती। निवर रा उतारा अठई करती। इण वासत ठोड ठोड चतारा रा ठीकरा पडमा हा । छोरी छोरा इणान कावरा मार भारत कीडता खता। उतार रो धान अर मरूनी र बाक ठारे धान विचारण सुबद नोडी नगरो ई हुम्या हो। बेनड माय लाम करडा री भक्त जी री बजा पूजर साग फराद ही। अळग मूई उणत देम्या सोधान साव थे मनाण निजर ला जावती।

सूरज माथ मू बळ जूनवी हो। बाज ठह की कम हो। पणिहारण पाणी से जाव हो। बाज वासत कठ, जर बेळा वासत वळ्या गाडणा कुक कम खड़ी हो। बाज वासत कठ, जर बेळा वासत वळ्या गाडणा कुक कम हा। खुमावा सिर माथ पड़ा कच कचर से जाव हो। बेळ्या पाणी सू काठी पर खारोही हा। कुनो चाल्या न चोड़ी इंताळ हुवी हो। सातर पाणी मीव हा। गाण री काळी प्रवर वाची का वाची म बढ़ा वायर पीच हो अर कण्डे पू करन पाणी काळी मावर देव हो। सात काठी तेल-बी ही जर बीजणी इस माइर कर तो ही सित्त काणा म बेट विष्योदो सो, यूई दूगरी सी खड़ी छोटी पोड़ी री। जेंदर कवी सो हो। काथी सारस सी नाह हो। पमा री नळपा सुत्त ही ही। चावरो तीलो हो। बातर सार ती नाह हो। पमा री नळपा सुत्त ही ही। चावरो तीलो हो। बतास म काढपोड़ा पळसी रा माइणा क्स वषण मू मिटण लालमात्र हाण वारा सालप, हाल ताई गीर सुर्वे स्थान तिल देवा हा। बोरी साद री नाह माथ वही हो। पाणी कळपा कमी कभी बास्या कर हा। साद न इया करती हेशी जा यूछपो—

पाणी क्या चवाय है ? 'योडी चिकणास दियोडी है ।' किता दांत आयय्या ?

तीन ।'

इस न मुनी पाढतो कठ पाणी पीषण सारू जावतो धिडकती साढ न मूगर और जोर ॥ मुना नाडण लागम्मो । राण दाक्त करन छेड़ करण री भोसीस करी । गाढ ई लारको टाम्या और चीडी कर भी । युवकारो नावतो भगवानी भोट्यो— स्हार टोडिय कन छोड़ हैयो । आगल साल ताई बात। जित इ रो छोटा भाई टोडिया स्वार हुय जाव। बाई इण सु भिक्तो जुनतो है। या साल छोटो है। राणो बोल्यो— 'बोहळो मोडो हुयग्यो। बाक यर मोरी फालर साढ न लेयन घर कानी चाल पक्ष्यो।

कून र सारे सार नादो वणा हो। जाना जाना पोठा मीनणा मीनण्या मिलदपोटी हो। कह सहर गय रो भमको ऊचे उठ हो। थाद में बढता है कहरडी हो। कहमुरडी रो भमको कोमी तर नाक सारतो हो। रापी होंठ होंठ पर जाम हो। सारण में सासरा कर मानल र पणा सुरुणी उठ हो जिंग मू कणई कणई सासी हैं हुए जानतो। मारण मं लोग मिलता जण 'क इतनावजी री अर ज माताजी री कर हा। पण राणो तो आपरी यून में सीमी चालतो जान हो। यर पूगर साढ न ठाण र बायर पून रजनाय दियो। नायों पाणी पीर आयती ही जिनयान बाच डी। पछ चिताम मरन पीकण सामायो। ठनळी म कीचडो कोटीनण रा समीड अब ठराया हा।

साब रो श्रीवण केक सीचो मारण हो जठ जयविण्यास गरी विश्वास जागा म मरणी हो। केण दुज रो मान रालणो आप रो पत्नी फरज सममता हा। मोट्यार लुगार्ग दोनू मिललर घर रो अर खेल रो लगा करता। इन तर थेनू मिललर घर रो अर खेल रो लगा करता। इन तर थेनू मिलल आप रो परपरा कडिया हु भरी हो। बाह्यण अर राजपूता रो मान हो। बाह्यणा सू घरम र नाम तू बरता सर राजपूता न बरता थोलता। सो नी मिललर अक बर रो जीवण हो। सिसे हा लुक कर रो जीवण हो। से सिसे हा लुक से नाम हो अर सा जावतो जला सा रा प्रवास कर राजपूता न बरता थोलता। सो नी मिललर अक बर रो जीवण हो। से सिसे हा लुक कुलायर सारो भोलो समाधान काब से बता। बीवन फेर सीधो चालण लाग जावतो। छुनासुत रो पणो विचार हो। पण रासक में बळाई धनळाई काम करता हा। ठाकरान सिसेस मान देरा हु। पण रासक में बळाई धनळाई काम करता हा। ठाकरान सिसेस मान देरा हु। पण रासक में बळाई धनळाई काम करता हु।। ठाकरान रो सेसे मान भी करती। एस मुल पर से कोम भी करती। एस मुल पर से कोम भी करती। एस मुल पर से कोम भी करती। एस पुल मुल पर से क्यों नीची साम करणो पर दो। दिन गोस्या

ठाकरा रो निजर से चढ जावती उच रो दतवी बचा वस जावती। रूप र सार पासवान रो पद भी उचा न मिल जावती। यण उचा री सतान गोस्या सू ऊची अर भाईया सू नीची ही रवती। इच मारण पासवाना पोशी समझदार हुचती अर बस चालता गका सतान पदा हुचच रो काम दें ही राखती नी। मूळ जुक री बात चारी हुचती। ठाचर गोस्या रा स्थाव आपर गोसा साम कर देवता पच ज्ञा रो उपभीय ठाकर र करता। चनकी रणीज तर भटियाणी सा र साचे स्थाव में साथी ही। बखत र जोर सू उणारी रूप भोसो निकरपो। मोटचार कवारो मर सक पक छोरी गूगी गली किसी मी हुनो कदई कवारी को मर नी। उचा रो स्थाव छोर साग मी कियो जाय सक तो बाद सान ई करन कवारपो उसार देव। सममदार आदमी हुवा रो क्य प्रवार शान रो रस्तो काढ लेव। इसो ई रस्तो चनकी र मामल म

दिन वळण लागमो हो। राज घर भ आयर शाया न दूपी। बाछडा न छान हेठ बाध्या। गाया न ओटो देवर चेजड कन बाथ दी। साढ माथ भूल नाल दी जिंग सूरात न घवर पढ तो सी नी छाय।

राणो जीम-जूठर चित्रम पीर ठाकरा सू मिछण न चाहयो । ठाकरसा साळ में बठा होको गुड्कुडाव हा राणो कन जायर 'ज माताजी री करन बठणो । ठाकरसा री चरो चिता सू मुरभायोडो हो । मोको इसो हो जिको की करणो भी कोनो जा सक हो । ठाकरा कथो—-'तू तो जा। अर म्हारा आदमी काळी हुगरी कन गुण जायो। पछ तू सरकुजीकोट चस्मो जाय। म्हारो सुगरो सनसो नही मिल जठ ठाई बठ ही रथी नी तो यार माथ कोई आपत माय जावता।

राणा बोल्यो-- 'ठीक है सा। हू काल बहक ई चल्यो जास ।

धूबो कावता ठाकर बोल्या— बाग गोपाळ चार सू मिलतो रसी । वो चार कम मुजब काम कर लेखी । सगळी बात ठाकर सुरजनसिंघ न मालम तो पढ ई जासी। ब कठई ऊषो अरचना ले बठ अर बार म्हार दोना माथ आफ्त नी नाख देव । इण वासत काम बढ़ो ही सोच समऋर होसियारी स् करी अर सारत म पकडीजण रो अदेसो हव तो बखत मुजब काम कर लेगी। भाग हुसी जिकी देखी जासी। राणो मिलर पाछो घर भागो।

होळ होळ ठड री चादर लाबी हुवण सामगी ही। माव ठड सू हरन

गूदद्वा म बहण लागम्या हा । धृव रो परकोटो गाव भ क्यारूमेर सुधरण सागग्या हो। धुई बन री हताई बगी ई स्थिगी ही। बाळी रात ठड र कारण और ई भयावणी लाग हो। राणो काटो दकर कपट म बढ न सायग्या।

वित्रमपुर रा राजाजी प्रजा री ध्यान बटावण सास भटनेर माप आक्रमण कर दियो हो। इण आक्रमण सुराजाजी न दोलडो पायदी हुयी। में कतो राजाजी राजिता ई विरोधी हा उणां विरोध करण री खुली मौको कोनी मिल्या । इसरो, जनता री ध्यान भी राजाजी सु हटर भटनेर कानी चत्यो गयो। छोटा मोटा जिंक ई राजात्री र इण व्यवहार सुनाराज हुयर आप-आपरे ठियाण गया परा हा खणा माथ दबाद नालण रो मौको पिक्षायो अर छणा न विरोधी घोषित करन छणा माथ धाबो करण रो बहानो मिल्लामो । इता पामदा हुवण र साथ साव राज रा नुकसाथ भी पणा ई हयायो । जागा जामा छोटा मोटा उपदव हवण सामग्या । राज री व्यवस्था विगडण लागगी ही। राज रो खजानी खाली हुवण सामग्यी हो। चाट र कारण राजाजी चेता चुक हवण सागमा हा। योज यो वधतो लरच अर अपर स्पडतो काळ राज री जहा न हलावण लागम्यो हो। सेना री भावना बाखी कोनी ही। आ सगळी बाता सू परेशान हुयन राजाजी क्षेक नृको निषय लियो । राज री सेना री टुन टी बजावण री घोषणा करी । उन सना माथ राज रो अधिकार राख्यो-सेना राजा र प्रति पूरी वशादार रही । इण सना न राजाजी खजान स् मीतू देवण रो नेम बणायो । इल सुभः सू राजाजी री लेक सेना बणण लागमी । ठिकाणदारा री सेना टुटण लागमी, कारण ठिकाणदार सना म मीनू तो देवता ही कोनी । माफी म दियोडी जमीन भी स्थायी रवण रो कोई भरोसो कोनी हो। इण र साग-साग नेगार और लेवता रवता। बगत वेवगत घोडी बहोत नाराजकी हुवण सु देस निकाळी और दे देवता। आ समळी बाता सुठाकरा री सना चणा सुमन मन म नाराज ई रवती। भा सगळा नारणा सूठाकरा री शना टूटण सामधी अर राज री शेना री भरती बचण लागगी। मीनू मिलण रो लालच अर राज री शेना रा रतनी— दोलडी आवयण सोगा न आपर नानी आर्मायत नर हो।

राज रो लस्को दिन दूषो कर रात वायणो वयता जात हो। राजानी स्रो सगळी वाता न घ्यान भ राखर नृवा नृवान र लगावणा सद कर दिया जियो प्रावा र सर सार र सर वयर। का सगळी वातां तु जनता कोर रोगात हवगी कर विकास हवण लागायो। ठिकाणवारो राजानी र एगा करती रोपूरो कावदो उठावणो सक कर दियो। रात न मकावणो सक कर दियो। रात न मकावणो सक कर दियो। रात न मकावणो सक कर दियो। रात न सार कर कपर मू इपर माती। रात री इजत वचणी हो मुसकल ही। इण र साग ई विवासिया न मराठा लाक्ष वेयर जंकावारी कानी मेज दिया। राजाकी परेसान हवन मराठा न मूठी हवणा दो जर रिवासिया न मराठा न मूठी हवणा दो जर रिवासिया न मराठा न पूठी हवणा दो जर रिवासिया न मराठा न पूठी हवणा दो जर रिवासिया न मराठा न एठी हवणा दो जर रिवासिया न सार राज री साल जाव ही। यण जवाब नाई करवा आव। हार न मराठा रिवासियां न पाछा भेषणा रो निरण लिया।

राजाजी इनाम बाही म पटा देवणा वद कर दिया। रेल पानरी बरदाई सुज्यामणी सर पर थी। इस सु राज री हालत और मिनक लागगी। व्यवस्था र नान रो नी नीनी रया। जागा-जागा जपतव हुक्य लागया। वपतव लाजी हुक्ज लागया। चौमतो केठ सो निकल्यायो। आभी आल सो छोळो ई रामणी। सागीडी सुना बाज हो। आली रात जर आलो दिन बील बळ बेन रही लोरो सो सपता रखता। ओ पतो छागणो ई मुसनत हो क हुए राज रा कारियो है अर हुज लुटेरो। दोना रो अनेत सो स्यवहार हो—जनता न लूटणा। मृत लोग मोच रा कायदी उठावण म कर पुन हा। बा राज रा नारिया र सात मिनस सूट सवावणी सह कर सी। सिंहया पहता ई बजार वर हुय जावतो । दुकाना रा फाटक दिन में आघा उनयोडा रवता जर साथा धुला । उत्तर देवचो सेकदम वर हुययो हो । सोगा रो सेक दूसर माथ विजयात कोनी रखो । सरीददार अर सुटेरा रो नेद निजळणो ई मुसनक हो । राज री आय सेकदम ठण हुवण आगागी । विजन चौरट हुवच सामयो है। परा रा सारणा उनया ई रजता । जठ ताई दूरो विवसता नी हुय जावतो राज विराज वारणो ही नी खुळतो ।

राजरी सेना जागा आगा ठाकरा रै मलवा न बवावती फिरती। राज री सेनार आवण सूरेल जाकरी देवण राकोल करता अर उजार आवता है पाछा सुक्रर जावता। इण हालत ने लुटेरा री बणवी। विजय ता मारण लुटेरा सू भरपा हा। बोळ दोकार राज मारण में बावेती बावो नालता रवता। विणजारा आप र साम सठत विषो चालता। बाळदिया क्याला साग रालता। सगळा सराजाम साग रालण पर भी यांवेती बर लटेरा सूबचणो कोली हो।

विम्तमुद्वरो बनार सूनी साला भर हो। रात दिन वाकता चरना चुप हुपाया हा। तक्त्वा डेरिया सूना पड़्या हा। बढ़ी चुप हो। रगरेजा री आगळ्या जिकी रात दिन रमा में ई पत्ती सुनी हुक्य लागनी हो। लगड़ी छापणजाळा डरा पृड सू मरीज हा। छीट छापणकाळा पढ़ा सूना पड़्या हा। बसेक्स री आगळ्या रो रन कीको हुक्य लागम्यो हो। साल दिन हुम्या हुम्ड अस वज्ञास्या सूट हा। वनत साल मात्रे हो। क्लारिया रा बळाथ बठा ई बठा रक्ता हा। वान-सोलती ताकड़ी भेळी हुयोडी पड़ी हो। नगसाक्य माय परीरदार कोनी हो। इंड्य बात रा साहुक थना है हा पण स्टायर पुकान कोनी चलायीज । कार्ड के दिन रो हाम योडो है हो। रीजगार मूळ्यन सू पेट मरण रो नाम कोनी। हाम र सारस मूळ प साबर माय टावरा ॥ पळ्यो जर मूळ न सुरक्षित राख्यो पढ़ है। काळी पीळो चालती आग्या सू खहर में पूढ़ा रा घोरा तो बच्छा चल हा, अर भूख सू लोग मरता जाव हा। विक्रमपुर जनडूठ सहस्र री विचली मे साया हा। मारण को तो तो खावता करनां धावण देवते। स्त्रान री हासत बतावता अक दिन भारत्यसिंह सिरमाय शेक प्रसम्पद तो राज री रमम खाद है। राजाजी कर बोजन बार इसी बात हुयी जण बणांन सम विसवता हसपो अर बणां बणान करनेरस सक्सी काम राजांन सेपन

बुलायन मारग में ही जहर देवर मरवाय नाक्या।

राजाजी कान राकाका हा। वकात भरीज्यां पछ साम भूठ रा निषय पै कोने करसकता 🔐 । घणकरा ताजिसी सिरदार पै घरसक्द वद राजिरोयी

82 मामळ

विक्रमपुर रो खाको

राणो विक्रमपुर पूरमो जल चढी दो दिन चढरवो हो । डाफर चाल नोती ही। ठड की जमाव माथ ही। घूरी दरवाज र माय बढता ई मतरा री गदाही ही । मल पाणी रो नाळो मदो मदो बद हो । नाळ र सार सार यूथनी हलाबक्षा गळ-सूबर भागता फिर हा। नागा छोरी छोरा बार लार लार नाठ हा। आगै पालर लोहारा रा गाडा लाग्योडा हा। वारी धाकणी होळ होळे चाल हो। टाबर सुसिया रोटी बणायर खाव हा। छेणी माय द्वार कर हा। उपार आग खाली चौक पड हो। हजार अंक हाब चाल्या पछ नटण्या रा परिया हा। चणा रा केई बारणा वद हा अर केई खुला हा, जाग रात भर री रणत न दिनूग सुस्ती साग विकेर हा। इया र पसवाड मिस्ती रवता हा जिना पाणी री मसको भर भरत लोगों र घरा मे पाणी पूताब हा। इणा र पार्ख तेल्यों री भाग्यों चानती ही। बजार में मदीवाडी हुतण सू इणा री पाण्या दिन चढघा पछ चाळणी सरू हुवती । याणी रा बळण हारग्या हा । तत्यां र सार कुम्मारां री चाकां ही । कुमारा र मरा र सार नाया ही जिका मांव स् प्वी भिक्छ हो । कुभारा र पसवाड चूनगरा री बसती ही । सुवारर री बसती आ दीना बसरयां सू आगे ही । बसील री खट-खट अळग ताई सूणीज ही। राणो इणां र सार हुबतो यको गणेसकी री बगेकी पूरमो । दरवाजी ससी हो। भगेत्री र माय वडता ई डाव हाय नानी नृड हा । कूड र सार कांकर जनामर पामतण बणायोडो हो । विरखा म पामतण र पाणी म कर भरोजतो हो। भीवण हाथ कानी चुसी बासळ ही। बासळ म जाळ अर नीम रा रूस हा । सामन गणेशजी रा मिदर हो ।

दोशरारं पछ राजी बनकी सू मिसन बासत संपीत र बार बार वाल तक्यों । शहर रो कूछ जाने जागा प्रवास हो । मुगाया जगळ जावण सास्सिली रो सारो तेवती हो। ग्यू ज्यू गणी वर्णील छोड़ जा जावण सास्सिली हो। ग्यू ज्यू गणी वर्णील छोड़ जा जावण मान्य जाने करते हैं हो। जा ज्यू गणी वर्णील छोड़ जा जावण मान्य जावण करते हैं जो मुनियां रा बिल है तिजर साम हा। भावच्या र सार सार राग कावचां हा बाहा है हा। कदरों रा बिल ठेट ताई थील हा। कठई नठई मरघोडा जानवरा रा हावका पढ़पा हा। गिरफ्ता सास बूट बूटर सायया हा सर हावका सू रात न तोगा कि जिन रो बग हुन हो। गाणो उतावळा वर राखतो जात हो। मारग में यो केन तळायों ई थीली जिकी सूची सहाव पढ़ी है। याळ माय कप्योडा वरखता र नीच सासर कठा वठा जुगाळी नर हा।

बठ पूगर गमछ सू मूर्ग युख्यो। योळ में बहताई देख्यों क यूतरी माथ माणी वाळर पोळियों बठों बठों साबडों लेव हो। अर विमठी बनायर सुतती पडाय हो न सुगन मनावण रो जठन कर हो। यथ ताबड म सुसती और गरी हुबता जाय ही। शावशा म सुतती पे अलक निजर आवण छापनी ही। राज्य

राण न सुरजनसिंचजी र डेर वन पूगता-पूपता यही खड शागगी ही।

बडती देख्यों तो मन म गाळ बाढी शर होठा सू मुळकतो यको घोस्यी---

व माताजी री । बाबा, पंघारो ।

ज माताजी री। तावडियो लेवा हो बाई ?

हा। मानो लासी वरतो बोन्यो— आबो बठो ।' आग कयो — हाल ताई पाछा गाव यया कोनी कार्ड ? काल ताई जासू।' पाच भाष बठतो राणो बोल्यो---'मिलतो जाऊ अर समाचार ई सेवती जाऊ आ मोचर आपन तकलीफ देवण न आयग्यो।

'म्हान काई तकलीए है ? आपन जरूर आवण जावण री तकलीफ हुमी हुसी।

म्हान काय री तकलीफ । अंक पड़ी बेसी करघो सही जिकै सूआप सोगा सूमिलणोई हुय जासी ।

हा, आ बात तो लावी हैं। घर माथ जीवण र आखरी सास रो सामास लावतो बोल्यों— आपरो आवणों तो कदई कदई ही हुव अर म्हे अब किसा सदाई बठपा रसा।

इसी काई बात है ? थीरज बवावतो राणो बोल्यो—'हाल किसा पाच बीसी वरसा रा हवण्या ?

'बरस तो हाल ताई सोचतो सोचतो पोळियो बोत्यो-— तीन बीसी मन ई पूष्या है पण दम सूडील डीलो हुयय्यो ।' पछ जोस लाबर बोत्यो-— 'नी तो हु ई आन मोरच माच हवतो ।

मोरच राकाई हाल है ?! बात में रस बोळतो राणो बोल्या।

'हाल तो माडा ई है। पोळिय कथी—'बारयां में ई बगत गुजार दियो। चिलम पाणी रो पुछची ही कोनी।' अर वो चिलम भरण म उठयो।

योडी ताळ दोनू विसम पीयता स्या। अर्वे धनको न हेलो पाढदो।' राजकयो ।

ये ही नीच खडा हुयर हेली पाट दिया। आप रो नाव मुणता ई आ जासी। मन नयु फोटा घाली हो 7' पोळियो बोल्यो।'

कोई बाह्य भी ।' राणी उठर जावती बील्यो ।

राण जनानी डोडी क्न चायर दो तीन पेडमा ऊची घडर हेलो पाडयो । आवण सारू उथळा आयो । चौक म समळी सुनाया बठी हो । हेलो सुणता ई चनकी मिलल सारू मीच भावण लागगी । वेडचा सु चनकी सांपी लापी उतरें ही पण उन लयावळ में लेक ठराव हो। मैदी रब्योडी हाय जन बा भीत र लगावती उतरण लागी जग राण न इया लाग्यो जाण बा भीत ई धनकी र साम नीच उतर है। चाल में मधराई ही। बांख्या र भवारा माप कामदेव रो धनुष तक्योडो हो। कीया री चाल कामण कर ही। पेटचा सू नीच उतरती री कमर फाली मारती सी दीख ही। पेट ऊपर दूपिटिया छळकता हा। राणो फागण रो रसियो सो देखतो रयो।

धनकी री उत्तहती सांस राण र सागी जण उणर होस बापरचो । यूक गिदती राणी बोल्यो-- काल ह जास् । काई समाचार कवणा है ?

राजी खुसी रो कय दिया । काळ कोया सू की पूछती सी बाली ≀

राणो होळ होळ सक बुदबुदायो । सनळी बात बतायर खखारो करन जोर स बोल्यो- तो ह जान् । राजी खुसी राकप देस् ।

राणो मुक्द होढी र बारण सुबार आयो अर ब्लरी माथ जायर गट

माय स् तमाखु भाद न विलय भरी । साफी निचीयर लपेटा अर मीगणी फोबर तमाख माथ रास्यो । हळकी सीक फक खाचर पछ जोर स लाची। चिलम माथ मैंकर तो जोर री ली उठी अर पाछी मिटवी। घनो छोडतो

पीळिय कन भायो अर जिलम देवतो बोल्यो--लो थे ई फुक खाच को ।

'चे ई पीवो । मन घासी बा जामी । वोळिय क्यो ।

राण दो तीन वस सागीपाग लाध्या । तमाख बळर राख हुमगी ही ! चिलम भावती राणी बोल्यो- तमाख तो सातरी बणायी है।

'हां, हु आप ई महड-मूटर बणाव ह । राजी हवती पीळियो बोल्यो।

मोडी ताळ हताई करन राणो पाछो दुरघो । उच रापग तो भारग माय चाल हा अर मायो योजनावा माथ विचार कर हो। दित आयण लागग्यो हो । ठड बचन सामग्री हो :

अभिसार

हरें र लारल बारण साम घोडी दूर जाळ नीच शूची ओडया माणस लड़ थी हा। वन साळ जबवाडी ही। घोषी हाथ मही। पाइर रात री तीप सामिजगी ही। डाफर बाज ही। तह तह बरन वृत्त पढ़ हो। पुरस्की सी आह्या भाट वाली जाव ही। सुसाव वरती हापर, मरी सीयाळ री अयारी रात। घोडर केंच की त्योंडी रात ह्या साम ही जाज आधी रात ह्यांगे हुव। मक्त्यावत री सुनसाव रात। आभा वितृत खू ईंवाळ बादका सु भरी जायी हा। ठर ठर न भिग्रीमर छाटमा यह ही। मुस्त रातो वरसण ई नोनी हुवा। प्राच चाळ गंगीर अयारी ही। सिक्या दो वनी पढ़ी ईंवहनी ही।

हिमाळ स् चालती ठण विषमपुरन आपरी बावा प्रपर लियो हो। ठणन चीरती कोचरी बोली पण ठड रचार न उच्च री खाबाज लबगी। थोडी ताळ पछ माटर नीच मूजक काळी छिया उचडण लानी। छिया

हाळ होळ जाग भाव ही। तीन स्यार पावडा आग आयर राणा बात्यो— आयगी?

हा। पडतर आया।

जीण माथ मू घूपी उतार न दी। या उषा न ओन की। होनू जला साद माथ बटम्या। मोरी र न्सान स मान उमा हुयर भोजासर नामी चास पद्मा र प्राप्तर र स मारज बण बीच म आयो सान पत्नदा मारग छोनर बठीन परमी। या घढी ताद सीधी अब ई धान मू बानतो रवी। नत मातात्री र मिबर री मजा रीवण मंगगी। योन जणा मानाजी स मन मन म ई मिमगण करन विदर न जीवण हाथ कानी छोबर साव र बार वार ई क्षाम निरळाया। आग फेर सीचो राज गारण छाडर धाडती मारण ल लियो जिनो छोनो अर सीचो पडता हो। पण उण गारण में सतरो ई पणो रक्तो। रात निन मीत र मन रवण आळो न अ गतरा नोई नतरा नो ललावता नो।

पारिया कण ई जोरां चन ही तो कण ई मोळी यह ही। वण ज्यू ज्यू विज्ञमपुर लार रवण लाग्या बादळाई ई सार रवण सागांगे। वृत नाग दोहता बादळ आम न प्यांतो करता बाद हा। आसमानी आप म आठम रो अपविकारो चाद हार र साल-माग मुळ्यण सामानी आप म आठम रो अपविकारो चाद हार र साल-माग मुळ्यण सामानी हो। तारा छिरता जाव हा वण चाकच र साम ठह बचती जाव हो। ठडो ठार हुमोरी आगळ्यां प्रांप म सोरी वह, वह, हुव हो। वायहां मे पर अवडीजण लाग्यां हा। क्यां मू पूषर बणायोगी मोरी भीजी तो कोनी ही पण सोकी हुवण म विमठी वरण बणायोगी जाव हो। नाज मू साम लवणी मुसदण हुमयो हो। मोनू हाय कर पण बरावर हालना जाव हा अर पारंचे बोदी ताळ पण अश्री सामावता जाव हा। साह सार आग नम हलावनी तीथी गाम पासती जाव ही आण कार पोजी पण न्यां साल साह है। बोर कह सुध्यक्ष इक हम अरहर जब्द हुमयो हो। सवार बोछाउमान वठा हा जाव वणा रो अरह ई बाम हो आग पार पोजी स्वार अरह सामा हो साम वार से हम हम हो आग वार पोणी। साम पर मूचा धर मजला चालती ई जाव हो।

रात वधवी जान ही अर भारय कटती जार हो। सामन लाबी चौडी क्यां की जिन रही चानको रात म निमान करती सी साम हो। साह री मोरी पण पण गीती पड हो। साह हमा हुबती जाय हो। मात पूमडा सा उमर हा अर मिट हा। मुक की का वक्य सामच्या हा। हिस्स्वा हिमची हो। सम्बंदि पूबजी रा कर समावता सा वामर हा अर पर कर समावता सा वामर वा हा। हिस्स्वा दोहती-गेश्ती बसक पणी ही। साद आपूण न जावता जावता भो ही। हिस्स्वा दोहती-गेश्ती बसक पणी ही। साद आपूण न जावता जावता भो पणी सो सा क्यां के कर कोर पर सा वा सा का सा हो। सा वा हर हर ता है पूजा दो से हा। में भा कर हर हर ता है पूजा दो से हा। में कर हर कोर पा वा का सा का सा

अभिसार वरती रात थवर नावण लागगी ही। आग री जडपा म पूटती लाखी अंक नुवो उत्साह पदा वर हो। नूब उत्साह र साग केवी नूबा सवाल आहवा आग आव हा। आधी मविष्य छाती माण साप सी छोटण सागत्वा हो। राणो गमध्य सून्ये पूछर जाण आपरी सगळी विद्यावा मिटा वणी चाव हो पण गमध्य री समस्मावां और पणी भारी हुय न चर माम जमण लागती ही। पावगों तूब सो सूरज सामन दीवण नागायो हो। परभाती पूत वाकर न चववया देवर सुवाणती जाव ही।

धनको न जवास्या आवण सागगी हो। चुटको देवर या नीद री मुमती भगावणी चाव हो। पण बा और गरी हुयन आयः उत्तासी गावती धनको बोला—'और क्रितोक अळगो चालणो हैं?'

अब डूगरी आधी ई समझी। नीद आख तो । किरची देवता द्या-यो----'इणन गलाफ नीच देवाय ल । नीन उड जानी।

सूरज र सावक में कूगरी अळग गूं विश्वनती निजर आव ही। कगरें यार पून र साग हानती जगा रो स्वासत करती सी निवर आव ही। कगरों माध बगानी जागी अग वमक ही। बृत सु लाल पवा रणस्वती निवर आते ही। ठक हळने हचण कागगी ही। आगळगा में जान आवण सागगी ही। सीली पुषी पमवाक हुवती जाव ही। साव नूव जोस सू और साथी वालण सागगी ही। माठा रा ज्या नारत आयम्या हो। चेत चेत करन राजों साम न सत्त री विज्ञात सुतावचेत कर हो। पण क्यार्व साव को कर साम हो ताती ही। कूगरी री गुगा बिल जय साथ गीलन सातावी हो।

जक्या म पूर्या पछ साढ जनायर उतरथा। जीण उतारत सेज्डी र सार रात्री। साढ न बाधर थानू गुका नानी चाल पक्या। जायण सूपती माढ रा दोनू नान उतार ना रखी भ पाल तिया भर रत्नी नाथ राल ली। ठावा ठावा पन राखता होनू जणा मुका कांगी जाय हा। गुका री गढी आटी ट्टी भर ऊची नीची हुनण म चरण मे दोरी ही। दोनू जणा बराबर चढता है जाद हा।

वाडी कर्न

िन पड़ी अन चढ़ाया। वाबाजी पूली नन वठा हा। पूली हीळ हीळ धृणी माय म उठ हा। मीमणा द्धाणा कर इडा धीर रा टुकड़ा नागर वाबाजी वासनी जमावल री कोशीस कर हा। धीरियो पूणी म लड़ी कर रात्यो हो। तूबी कन ई पणी हो अन्य सार ई जिनस आडी मे योडी ही। रावाजी अवार अवार ई बलशी दलन नाथ आगर यठवा हा। धूणी वितायर हो बाटचा बचावल री विचार कर हा। उतन चैडा मांय मू ऊबी उठती सांची देवर सीचल साम्या क दूल हुसी। होळ होळ राल रा चरो सांक निजर आयायो। चरो पवाल इचरज करवी क साय आ दुल हुसी। सीठड मे सठ किया लाग?

पाय रुप्यू बावाजी । राणा बायाजी न बामण माथ बठा देग्रर को यो।

> तुस रवाः आज वटीन सू? विक्रमपुर वानीसू।

आसी रात चानता आया हो नाई?

gf l

साग बुण है ? आवा पली हाय तपा लो ।'

धनकी बाबाजी र पना स नास्कार करन पूणी कारी अपूठी बठती। राणी हाथ तपावण नामस्था। बाबाजी बोत्या--- हाथ तपा स। धनकी भी नाळ हाथ तपावर गुका वानी सुसतावण साक गयी गरी। राण समळी बात बतायी अर सेसाबाटी नानी हुवण बाळी नूई बाता री जाणनारी करी। समळी बाता हुवा पछ राण कुढ नन जायर कमडल र पाणी स् हाथ मूढो धोयर पाणी र मुटक सान किरची सी। यनकी न ईहान मूढो घोवण रो कमर पाछा आयन बठम्यो।

दोफार पछ राणा यनकी न लेयर पाछो टुरम्या । कोस आळ घोर कन राणो मारम छोडर ऊजड हुमम्यो । धनकी पूछया— अठीन सिधारू बालो हो ?

आपार रवण राजठ वधोबस्त है वठ चाला हा। ' साढ घोडी ताळ ताई घोर री जड़ा म चातती रवी। घोर र पसवाड लेक हरपो भूरमुट दीहवा। साइ सीधी बठीन चालती रवी। सिन्या पड़ण म आधी पोहर बाकी ही जित तो राणो भूरमुट कन जाय पूथो। याडी माय मूळा, कारा, गाजर मूझा पासक अर पोरीण री गाठड घार हो। जावण री त्यारी हो। सवार न देखता है बाडी माय मू माळी बार आयो अर पचाणर बोत्या— आयो राणा। हु ती जावण री त्यारी में है हो।

साढ जकायर दोनू जणा उत्तरचा। मानी राण न बाडी म लेजायर सगळी बात बता दी अर फूपडी देवायर रवण री जाना बता ती। चाव दिवायर ताजो गाणी पीवण री बात बता दी। बाढी ज्वरपार पाच दीपा म ही। बाढी र च्याक्षमेर बाढ नगायर सासरा सू बचाव करपाडा हा। बाढी म बढता है छाडी छोटी व्याप्ता बणामोडी ही। बाढी री ळचाण माथ बरी बणायर चाच कागोडी ही। गाडी री डावणी बाम्पीडी ही अर लेक लागी देतेक सर री आठी ठाम्पीडो हो। गाडी री डावणी बाम्पीडी ही अर लेक लागी प्रतेश रास्पाडा हा। बाढी में दत बार क्यारपा ही जिवचा म हरी सबकी मायो हो। मोळी सिंदबा ताद बाढी म काम करती, पाणी देवता सबकी उपाडती, मीवता अर कारिया मंत्रा चावरा म बावर घर के लावतो। दिशुग पर रा जुगाई टावर पान सट वेच आवता। माळी पाळी रिवृग अठ क्षा जानता कर सिझ्या समान ल नावता । सार सीयाळ ओ ही हिसाव रवता । चौमास क्षठ ई रवता । सेती ई नरतो । माळी न आवण रो क्या पछ राण धननी न भूपडी म चन मृरवण रो कथी ।

सार रो जीण उतारन पाणी पायर बाढी म पडी र बाध दी।

धनहीं भगदी म तोवगी हो। राजो पूजी वेदार वामळ ओडपां तव हो। अक अंक दाणो वर बोडी पोडी मुरक्स जरूरत मुजब उजम नासतो जाब हो। भुरक्स मान्वता ई अक साब जो जोर सु उठती अर पाडी ताळ पाजी हुवण सु ठड आग र तांव गुर्द वाजी बही। रात रो सोभ्रको डील म सुसती लाव ही। पून ठड र आर मुमबरी पहती बात हो। दूर दूर तार्द बोसता गारडा नीव री भेरचा न तोड हा। राज नीव उडावण साक टसरिय माय सु किरका बादर सब की हो। पाज निव चंडावण साक टसरिय साथ मुक्त पाज मुमको को स्वारी रात पु धारी ठडी पड़गी हो। राजा पूजी कन मुक्डो बच्चाडो वडचो हो। आयो रात एक धनकी बार साथी कर राज न दल र हासी अर जबन हाथ मरार संपडी में से जायन सीवाज्या।

तीन च्यार निन बाता बाना म ई निरुद्धावा ! राणो बूगरी माय जायर पता स्टर काम जावता पण हाल ताई बनी पूर्णा कोनी हो। सीजी बार गयो जायर की निती हो। गाडीबात सु सगळी जायर गो केर इसर ई दिन बेगों ई पत्तरी न संबर पाछो आयण रो क्यर पाछो आयो। धनदी न सगल निन बालण री बात बतायी बुर बेगो ई नाद पुगण रो क्यो

याद री दसतक

दूज दिन धननी न हुमरी वन कायर छोड़ दी। वली धनकी म सपर
रवाना हुमयी। राणो कन लही देखता रयो। जीवण र सम्याय रा शेंक पाठ
पूरी हुमायों अर अब नूवा पाठ सक हुन हो। आखी दिन बली चालती रयी।
पननी सोचती रयो। हिनकोळो र साग विचारा रा तालता दूठ हा अर जुड़
हा पण घनकी रो जारो कोनी छोड़ हा। यण साचच सूधनही और पर पुण हुम पा पनकी रो जारो कोनी छोड़ हा। यण साचच सूधनही और पुण अळूकती जाब ही। य्य उळ अंगड़ रो ना तो कोई आदि हो अर ना अत है हो। पाणी-पेसाव साक वळी वण है काई जूव कन ठरती अर पाछी चालण लाग जावती। धनती सोच हो को जीवण वली दाई है जिक न रात दिन चालणो है। चालता चालता अक दिन वळच बूग हुम वाती, तूबो इणा र खाध सू खतार म हुना नूबा बळाग र खाम माख राज दियो बासी अर बा बळता न मरण खातर खेता म छोड़ दिया वासी। आज यनकी कन रूप है, गुण है पूछ है काल बुढ़ापी आसी जण म्ह्यक में केन दी वासी बर रावळ री तरक सू पेटिया मिलती गुजार खातर। यस मन ओ कोनी मुसदाणो पड ज कवास

बुजो आवल सू भटको लाग्यो। जातता विचार हृटाया। नाल ठाकरा न औपता सामयो क टावर किंग रो है तो दोना रो जीवणो इ मुस्तन हुम जासी। इण भय सू वा डरपण लागयी। आदमी रोसमफ डर सूआपी हुम जाव अर डरन सामन देखर तो नाठ जाव। ज समफ नी नाठ तो सामल रोभय माठ जाव अर तुन्तु म ई सगळो निपदारो हुस जाव।

हा ब कव हानी क ठाकरतो मोरच माथ गया पराहुसी। दो-तीन महीना पछ आसी जण सारी बात हुसी अर क्लियन पतो चालहो कओ किण क्षा आवता अर सिक्या समान ल जाबता। सार सीयाळ बो ही हिसाव रवता। चौमास अठ ई रवतो। खेती ई करतो। माळी न जावण रो कथा पछ राण धननी न भूतडी म चन सुरवण रो कथो।

साट रो जीण उतारन पाणी पायर बाढी म पड़ी र बाध दा ।

धनवी भगदी मं सोवनी हो। राजी वृत्ती चेवार वामळ ओवपा तप हा। बेक श्रेक खाणो वर घोनी घोडी भूरकत जरूरत मुबब उन्नम नालतो जात हो। भूरकत नालता ई जब खाग की जोर सु उठती अर घोडी ताज उछ पाद्यो दव जावती। राज र सान ठड ई बचती जात हो। च्याक कानी पाणी हुवण सु ठड अगप र नाव सु ई बाजीज हो। राज र शे श्रेमको डील म सुसती लाव हो। पून ठड र आर सु अपरी पडती बाद हो। दूर इर वाई बोलता गांदडा नीद री भैरचा न तोड हा। राज मीद उडावन साक टसरिय माय सू क्रियी वाढर हो वह की हो। चल विर्ची ईठड री मारी ठडी पड़गी हो। राजा पूणी वन कुनडो बच्चोडो पडची हो। आयी राज एड धनकी बार सादी अर राज न देन र हांसी अर उचन हांच भावत भरवी मं ल जायन सावाच्यो।

तीन च्यार निन बाता बाता म ई तिरुक्तम्य । राष्ट्रो कृती माय जायर पता करन आय जावतो पण हाक ताई बैती पूर्ण कोनी ही । तीनी बार गयो जगे बैती मिली ही । गाडीबान सुंतगळी जायपरारी की भर दूसर ई दिन बेगो ई पनकी न लगर पाछो आयण रोक्यर पाछो आयो । घनकी न अगल दिन चालप री बात बतायों कर बेसो ई ताब पुगण रोक्यर री

याद री दसतक

दूज दिन धनको न दूबरी कन कायर छोड दी। वली धनकी न तेयर रवाता हुयसी । राजा कन नका देलता रची। जीवज र अस्पाय रो अक पाठ दूरी हुयसी अर सब नुवा पाठ सक हुव ही। आसी दिन वली चालती रची। धनती सोजती रची। हिक्कोळां र साग विचारी रा तातज टूट हा जर जुड हा पाण पत्नी रोजारी कोनी छोड हा। धण सावज सु यक्की और पणी अळू असी जाव ही। इज उळ असड रो ना तो कोई आदि हो बर ना अत ई हो। पाणी पेताव साक बळी कर्ण के नाई कृत कन उरती अर पाछी पालण लाग जावती। धनकी सोज हो को जीवज बली दाइ है जिक न रात दिन पालणो है। चालता चालता कर दिन बज्ज कुड हुव वाली जुबा इच्चा र साम सु जातर हो हा पाण साथ रात दिव वालणो है। चालता चालता कर दिन बज्ज बुड हुव वाली जुबा इच्चा र साम सु जार म इज पाल साथ स्वा दळारा न पाण सातर सेता में छोड दिया जाती। आन पनकी कन क्य है पुण है पूछ है काल हुडापी आसी जग अपक म नेता जोती अर सा स्टार सु पिटियो सिमसी गुना र सातर। पण मन जो कोनी मुगतवणो एड ज क्यास मार्गियो हुव जाव

दूनो आवण सू अटवा लाग्या। चातता विचार हुटग्या। कात ठाकरात आपतो सामभा के टावर किल ये है तो योना से श्रीवणा हूं भूगवत हुय जाती। क्या यम वृ वा डरपण लगागी। वान्मी रीसमा हर मूआधी हुय जाव बर कर न सामन देसर ता नाठ जाव। व समफ जीनाठ तो सामल से अय माठ जाव बर तुन्तु म इ सपळा निपदारो हुय जाव।

हा, व क्व हा नी व ठाकर तो मारच माथ न्या पराहुमा । टानीन महीनो पछ भामी जब मारी बात हुसी बर विच न धना चानमा रू वा क्रिय राहै। हू विज्ञागुर स दिन चढायर असी हूं। आज अर बाल म बाई फरव को मी जीव न च्यायस दियो। पण बाजजो बार बारा खागा खाइतो जात हो। ता सासरो गा पीहर अर जा नानाणो। राइ हू पण रहायो मोती। साजजो है पण को को मो। मन मा बानी भाष्यो। मा समळी बात समक है पण उण रो सारो को मी। वे सारो हुनतो तो आपरी औलान न कुण इसा वचणी वाव। हुया जण कोई नाथी हुयी न कोई बीठी। हावण हुया। अहर दी माय रहावर ज्यू पालण पोपण हुयो। कोई बार भी हुयी। अक्तो मा तो पदा कानी कर सक हो। काई पुरण नाव रो प्राणी अक्टर हुसी। पण उल्दाई वस्यो कोनी। आग र लार मा न ई देखी। या भी साना हा अहमी अपूभी रवती। थाडी यही हुयी अण रावळ म क्रिय खानागी। या न छोट माट काम म सारा देवण नाग्यो। उत्तरिया पुत्रिया गामा स तन दावण लागा। रात कर दिन भाजता भाजता ई निरळण सायग्या।

क्वराणी सा रो ब्याव मक्या जण मन वणा ई हरल हुया पण न्हारी मा ता जानी रात वम सुई रावती। उचरो वम साथी तिक्छपी जर मन क्वराणी र साम मेल दी। मन की बती काती हा। जीवण इती करही है रीटी इती मूची है। में मन म सोध्यों कमा रो रोवपो फालतू है। उस बीत दिता रा जठीन बठीन रवणो है इस म मन वाई चुल है। बीती जम वत बाल्यों कमा रा जी मैण सुई मुलायम है अर उण से अनुभव बड़ी ई लारो है। भोग्योड जीवण म पाछा बोनी मोग्या वाब ही अर ना आप री मीलाद न भोगण देवणा चाव ही। यण विधाता रो खेल बड़ो ई विचित्र है। उणरी मरजी र मुन्न खन न खनणा ई पड़मी।

अनुरही रो भन निखरण लागया। बीठी हुवी बर बनही रा गीत गांधीज्या। रातुरात ब्याव हुबग्या। बेल पढ़ी स वतळा तय-दत्तरू हियथा ज्या पती लाग्यो न म्ृारा मांसट र री हाडी शू ही हुळाही है। वत म में मोजे र मरंगी। रण र सल राहि हुवण बाळी हैं इण रो आज मन पता सोगी ही। और आग ई चानर हुवी। समय रो फायदो उठाया स्वरसा। मन अर्क नित ढाळ ली। धनकी तिलमिलाय न उठी। अर्किता कुबीवलाहै। आ पर स्वारथ सुसामल रो नास ई कर देव । साळा कुत्ता दाई गळी गळी भटकता क्रिर सर मन ई भटकण न मेल दी। इण मटकत जीवण रो झेक नुवी अनुभव हुयो । आस्या हुयो । आत्मो मार भी सक है अर मरत न बनाय भी सक है । राणो बचावतो निजर आया । साळा । घडी लेक खेल खेलता अर लात री देयर पाछी काढ देवता। व आप री तुष्टि चावता अर म्हा सगळचा न कुत्तढपा समभता । मजबूरी रो फायदो खठावता । श्रो पछ ही पतो चास्या क मोटियार लुगाइ आसी रात क्या क्न सोव? आस्मविश्वास अर स्थाग काई हव है ? थोडा दिन रो सरय हो अर उण सरय रो फळ पेट म लेयर चान् हु। अचाणचूक ई हाथ पेट माथ फिरम्यो अर पल सुपट न चोली सर दमयो। किसी यही विहवना है आज जिक रो पतो ई कोनी उण माध कितो इतिमनान किती सुखद करपना।

फेर विचार पसथाडो फोरण लागवा। जे योखो दे दियो तो ? आपणी माई लियो । आपणो विश्वास आपण साम है, आगल रो धालो आगल मन । शो घोलो भी बडो मीठो है। याद करता-चरता ई जीवण निकळ जासी। अत में बा ही तो काम हुसी जिको आज ताई हुबतो आयो है। आपणी आपण सागई लक्षम हुय जासी। अन नृबो सक फेर बेली क्सी अर उण रा पात्र हयसी आपणी औछाद अर उमा राज्यम । यण उण सुपक्षी पुराण क्षेल रो पटाक्षेप को हबण द नी। आय

वली चालती रयी बात क्रिती रयी। दो दिन अर बेक् रात विचारा म ई निकळम्या। गाव पूगी जण दिन चिसकारो मार हो। गढ म सरणाटो छायोडो हो । बसी र माग ही अक ईर्ष्या चेतन हुयर फिरण सहययी ।

बोध री छिया

दनकी र वसी म चढर रवाना हुआं पछ राणो वणी ताळ ताई नळमं र चुरा मूं इदती रवी न देखतो रयो। हुळ रो बुदारी जेनदम सोर हृदयों जण हुएर से वादों जेनदम सोर हृदयों जण हुएर से वादों हुए मानो चाल चढ़प्तों। आल दिन राणो प्रस्ताका पोरतों रवी। छरदी रो दिन छोटो हो चण राण न वाढ सो लाको सामी। बडी मुस्क सु सिहसा पढ़ी। बाबाजी आहरी नरण साक बगली म जावण सामा जण न बारती करण साक साम वालण रो कसो। राष्ट्र

हाल बोहुळो जीवणा है । अर आरती करण न गया परा !

राणी सूनी-सो बोहुळी देर ताई बृणी कन बठी रसो। हार न, उठर कामळ बोडर पुका र बारण कन सीयरणी। अवारी रात होळ होळ उतरण लागगी। सार हा हुए होळ उतरण लागगी। सार हो हुए हो अवार म विद्या । पून रो और वधण लागगी। साम वाहती ठ व ववण लागगी। हो। सूनी निदराही सुसाडा मारण लागगी। हो। तारा स अरघो आभी ससार र जीवा री वरणी न निरण हो। पुका र करार पुक्त हो। राणो आल्या पहड अपार में सोज हो पण हुण। दाणो आल्या पहड अपार में सोज हो पण हुण री निजर साली हाण देपाय साल हो। वेदा पुक्त हो। राणो आल्या पहड अपार में सोज हो पण वाल री निजर साली हाण देपाय पाछी वाही। में साल हो। अपार म राणो अपण आप सु ई हरण लागगी हो। क्या ई जगन दया सुणी-ता। राण न रात आपी सुणवीनी लाग हो। मन सालेजो साल बात हो। पण न रात आपी सुणवीनी लाग हो। मन सालेजो पाक बात हो। पण न रात आपी सुणवीनी लाग हो। मन सालेजो पाक बात हो। हमा हो पत सालेजो राणो पर हो। इसा सोच्या आल बातावी नीच आली र कोनी। बेक्स ल ई आपी रात रवणो पडड़ी। इसा सोच्या आला नी राण री गोट सामगी।

वावाजी देगा ई बारती नरन नीच आयम्या । राण न सूती देखकर बाबाजी पूणी म छाणा, मीगणा मास्तर वासती जगाया अर आटो ओसणर बाटिया बणाया अर सीरा माण सक्तण सावन्या । सिन्धां पछ बान वोभर मे ओट दिया । सिन्तता बाटिया री सागीडी सुगय आब ही जिली पून र फटनार सूगुका म ई गयी परी । राण री भूल चेतन हुयगी । अस्थिर विचारा न सोहर वो परती माण बायम्यो चठर बार बायो सर बाबाजी सूबोच्यो— भाज तो वोहळी जेज सगाय ही?

'नही ता, आय ता बेगो ईगया हो। तन सूतो दलकर बाटिया बणाय म योभर में सिक्ण सारू ओट दिया है। अबार सिक्ण जासी।

बाबाजी हाजा, मीक्या नायन दूढिय रो सारी नियो । पूक लगायर जमाय दिया । पूजी सु निकळती मळ सू राज रो चरो चमक हो । राजो जायरो मूढी चुनोक्यो चाब हो । यही पत्री विसाह माय हाय फेरती जाव हो लाप कियो मायोही चीज न जोवतो हुए । पत्र कर ता ता मूबा विदार आप हो लाए कियो मायोही चीज न जोवतो हुए । पत्र कर ता ता मूबा विदार आप हा हा राजा हो हा। या मूजो सो यही हो सा हा हो हा। या मूजो सो यही हो सा हा हो हा विदार मोक्या वरसार ए ताय हितहास रा पातिया सिलाह माय मह हा । राजो जणा न मिटावचो चाव हो पण ब मीर पणा उपस्तरा जाता हा। वरसा सु मेळी हुयोही चीज और सचन हुवती जाव ही अर क्या हुटर विसर वाबरा की रतो कोनी चाल ही। सैक विसर वाबरा की रतो कोनी चाल ही। सैक विसर वावरा की रतो कोनी चाल

पून भागता राजा बोह्यो— बाबाजी । काई बहाळ घटना पटमो अर हु उप घटनावा रो जेंक साक्षी मात्र हु। सगळी घटनावा न भेळी करणो षाषु तो भी वा सगळ्या न वाकी मेळी बोनी कर सक्। चणा न मेळी करणो षाषु तो भी व सगळी विकारणोदी रखी जर हु वा सगळी बाता रो जेंक कण मात्र ई रसप्यो हु। विक्रमपुर सु चाल्यो जण धनकी न आमक आसण बठायी ही। ठड तो कर ही क षडमू जिंकी आज ई पढसू। चालतो दाकर गाभा फाइ-पाडर काळन न चीर ही। मारस मे सो बार तुस लवानी पडी। आधी रात ताई पालता रया। गाळतो ठट सुकावतो जाव हा। मारी आपळपा सुसिरक न नीच पट हो। आधी रात टाळक सारू पास री दूनरी कन ठरपा। पछ उपन कारक आशक बठावर चाल पटया। नेई दिना बाडी भी राकी जक पत्तो चाल्यो क पनवी म नाई गुण है ठावरसा इक न वयू चाव है। लुगाई सुनाक्ष्म करक है। और

श्रीज म ई वायाजी ई वास्या — छी। वी परक को नी है। सन रो परक है। जरूरत रो परक है। सहनत रा परक है। सुनाई-सुवाई म की फरक का नी है। यार मन रो बस है। बात करण र खाग साव बाधाओं वादिया बोभर मांय तु कावता जाव हा बर भड़कावता जाव हा। यछ राण न वीटा सो मेरा — जिया भूक रो भाड़ा जल है उणी तर बोल रा भाड़ी बोरत है। अर वादाजी ई चादिया जावण जायन्य। बावाजी कोरी मोटी रोटी न इत बाव तु जाव हा जिन जाव सु राज्य राजसी भोजन कर।

राण भूला मरत अक बाटियो बवा बगो लावर दूसरी लियो । धाडाजी इतिमान सुभोजन नरपो बर कर्नराटयोडी सूबी माय सुपाणी पीयन मूडा पूछपी अर तायणा सक नर दियो। राणी छत्र महीनां रो भूखों सो बाटिया लाया जाय हो।

सावाजी शेल्या— जीव बाव वर्ष आप र साव लाव लोव। पण पाछो जाव जण वजन छाट जाव अर साव स जाव करम। जीव री मा तो की जरूरत हुत अर ना स्वारण। जरूरत समझो लोव री हैं—मोह अर स्वारण। समझा लोच न राल जीव न नी। जीव परमातमा रो बख है अतर है अमर है। लोवा री नास्मभी म अरु सम्भ है व जीव न कोनी रोव म्यूक सा अमर है शोव न रोव जिली मरणशील है। सरीर रा घरम है क मो जीव र साम पाल अर निरसेष माव सुपाय पुन री येशी चढ़। याय म जिल हुवन बार बार कर ता वा आवरण मू पिर। हुवोट पाय मू पाठ यह लेव सो पार कोनी। इण वास्ठ पारी पाय पारी बादमा री सुदरता माथ निमर कर। आ क्य न बाबाजी चुप हुयस्या । राणो आपरी आतमा मे फॉकल लागस्यो । मरीर, आतमा अर धनकी –आ तीना री आहृति राण र सामै आदण लागगी ।

चाद तुन विचाळ आयोरो हो। रात आयो कन पूगनी हो। पून में ठह क्यण सामगी हो। सुमादा मस्ती पून री चाळ साथी हो। तारा रूपसी रै अंचळ म पुराच नामया हा। बाबाजी गुरू म जावता बी या — हू समाधी सावाचन न जावू हू। राथा घोर काळी अधारी आयी में पूमण लातायो हा। बोहळी ताळ तार्क राया पूणी कुचरतो रही सोचली रही, यण माया की शाम काली कर हो। हान न नोवण सारू चाल्यो।

बोहुळी ताळ ताई राशा पसवाडा फोरतो रयो चछ पलवा माथ मीठ भीठी भीठी पतवा देवण सागयो। नींद र साय साथ चनवी रा सपना है आवण लागया: पेडचो बू उठरती दीली। योभच र पन साथ मन तरफार इत्या माथ बसीजत जोवन साथ दिल वमीजतो दीक्या। पाछी जावण लागी जण नसमा म मन बच्चोडी गीन्यो। जुगाई जुगाई म क्रक दीक्या। मुद्दुरा हाथ सावणा लाग्या। मैंदी लाग्याडा हाथ नृतो देवता साथ्या। आली रात कन सोधी जण दारू ज्यू भीठी लागी। बार बार पीया र बाग भी तिरस जिया निट बोनी बचती है जाव। डाकर माथी ही कद हा क धनकी रा परम पनकी र कर है है। उज स स्वीटिय आवरण है।

रत न पनशे री आवाय मुणीकी— वा सगद्धा र सून में बाक अर असीम रो इती मुश्ते रस अरपो है क बान निवीय बणाव दिया है। व बोरत में औरत ही नी समभ । उणो री तमग्रा दाक मी छिद्रती है उगम मोदियार री मीठी तम ना कांनी। कारण व तमग्रा मुख मरीनिका में मर जावता। पण सतान देवता ॥ नाकाम रवका। औरत सी को दयर पद्ध भी चाव क्रिका मन दत्ती सू मित्रन। मेरता कोंनी। बार मु मिस्सी यक मन को क्रतात हुयापो क शुवकन मुगाई क्षेत्रनी हैं जननी भी हैं। व्यक्त स्ववस्थात उटपो अर भोषण मोधी कर मन क्षावक रा गय के। राजा हेवकश्वर उटपो अर भोषण मारपो—मावाणीय वावस मुरकायों कोंगी। व ट देवनी रवा— हु जाम्। दिन ऊगण आळो हो। बाबाजी अरती हर हा। विषयो बोल हो। राणा उठर जरूरी कामा सु पारक हुयर साढ माघ जीण क्सन सारल आसण यठर नाल पढमो।

बाज सू तीन महीना पत्ती ही तू च्या ही बठ स उठर गयो हा अर काज उण बाली सवाद न लेपर पाछो बायो है। तू चायर है जुरु नित्त है। किनी बात तू क्षणी चाय हो जा क्य कोनी सक्यों अर जिकी नाम करणो पाय हो बो कर नीनी सचयों। इस बात्माहीन कादमी न सुनाह कर ही चाव है। मजनूरी अलग है। समाज री करकी रखाया र कारण का छोडर अलग कानी हुस सक्ष पण पुर पुठर जोवणो है नोनी चाव। आ क्यर सांवाजी उठधा अर गुका कानी जावता बोल्या— तू जिमनार आदमी बण। पछ सोच समफरकी कर।

बाजाजी न यहा न यहा पहचा गया और राणो पूचव विदार म कस्या रथी। सारता तीम महीजा शास्त्रहता यो तर बाडो अर ल रहुजनोट नन विदाय। सम मही मरायो। जुनाई टाउर वार्ष कोषदा हुसी। यननी नाई कबती हुसी। राणो हतप्रम हुयाडो होचला रयो। यो काटनी ही। तारा विसूजन नाग्या हा। चनचेडा वाछी गुकार बारच आग सेळी हुवच कातगी ही। पर रो मोह करन गाजा उठर गाव नाजी टूर बहीर हुसी।

अेक सवाल

ल बालती रयी, साढ भागती रयी। व्यारा कानी परुपाडी निदराही भोडळ ज्यू चमचमाट कर हो। ताबडो गामा मायकर दील ताई पूग हो। पसी राबाळावव हा। आल्या पूरी खुल ही कोनी ही पण सवार तो अनेड लगावती जाब हो बर नकली बाना जाळी साट भागती जाब ही । मोरी बान र कत पडी हो । साढ रो पसीनो भभको मार हा अजीव सो है । आख्या मे रावळिया पड हा। सामन बाळ् रेत रो मारग भूत ज्यू लाबो हवतो ई जावे हो। सूरज सिर माथकर धमनतो चमनता आधूण कानी जाव हो। पण सवार तो सुरज कानो देख ही कानो हो। निजर अकमात्र मारग माम ही। मण हो घोरारी चढाई शाव हो अर मण नै उळान । सवार न नाती साठ टुटण रो हर हो अर ना आपर मरण रो । साद ढाण पडी दौहती ई जाव ही । क्ण ई घोरा माथ सिणिया बूजा रा दरसण हुय जावता, इनी-दुकी क्षेजडी दील जावती । हरियाळी र नाव बस इतो ई हो । धीरा माथ नित हमेस नुवा मारग वण अर मिट । शेटी पाणी रा रुरसण भी कठ ई हुया कोनी । लोटडी म पाणी ताव रो हो । सवार न बम हो व कठ ई व्या तपस मे काळी पीळी आधी नी आय जाव अर बीच मारव में कठई त्वणी नी पड। इण दासत मागोलियो गीलो करण । पाणी रो बोडी सराजाम चाहीज । होठ सुक हा पण नामोलियो आलो हो । कामोलिय री सील ताळव साई पूग ही । साढ मृटो हुलाबर नाह रो पाणी होठा साई लाव हो । पून र साग इका दूका छाटा उडर सदार र मून माथ पढ हा। सवार और हाथ म लियाड गमछ सुमुढा प्छ लव हा ।

िन उद्धण काराम्यां हो। तावड़ी विमाई नैज हो। पून रो नांव निताण ई नो हो नी। उमस वधयी जाव ही। मबार रोवस वधनो जाय हो। वैद्यों ने मरघो कर मौसम संवद्धाव नो तथो तो जाय हो कि लो श्रीषी आ जासी। मगरा मंपसीन रा रीमा पाल हा अर मून हा। वा माम पहता राविद्धां पसीन वठ ई मूना नेव हा जिन मुंबुनतरी नरड़ी हवती जाव हो। मोळो रम मस्नेना हुबती जाव हा। आम रो जहफा म थीरिय हुयो। माव मन ई हो। बाद रो चाल और तेक हुयगी। वाई मम्म ही माव माव में पीवण न पाणी मिलसी अर चरण न चारा अर सूप। आसी निवरोही हथेळी ज्यूसाफ ही। बुवा राविद्धां न चार हा। बुई बर साट रा बगरा पून र साम जिरता कि रहा। साड चालती जाव ही। मारा परती जा हो। मारी ने मारा परती पर हा। साड चालती जाव ही। मारा परती जा हो। मारा मारा मारा साड सी श्रीव पार चरन सवार गाव कन पूर्या। गाव र बार मारा मारा मारा सी श्रीव पार चरन सवार गाव कन पूर्या। गाव र बार मारा मारा मारा सी श्रीव पार चरन सवार गाव कन पूर्या। गाव र बार

तून र जेन कोठो अर धो जेन घडोया ही। वाठ म वस्स पही ही।
कून रो पाणी हुटप्यो ही। कोठ में योदा सूधा पाणी हो। बिळी म विवास
अन पाणी ही जिनी काई अर धूड स अरघोडी ही। पाणी रा कमी तो कोनी
ही पण मुक्कायत ई को ही नी। मिनल जिनावरा न वीवण न पाणी थागो है
हो पण मुक्कायत ई को ही नी। मिनल जिनावरा न वीवण न पाणी थागो है
हो पण मोळण साक कमली हो। पणधर लाडी हो। थो जन माबा वाणां
भरण साक लड़ा हा। बूनो वावणां आठा नोगा न तेयर 5 छ लोग बाठ
माम बठा सुतावह हा। अये साव न अन सास भागती आवतीन देवर
की बम री निजर सु देवण साममा। अण्याली पी न पना करन विदित्त
हमा। सावर कन आवर साव सु उतरपो अर माठी दीजी क्या लोग हो।
काउर मस्य मू नाधर पाठ कानी होळ होळ आवण लागयो। आयर मून
रो देवार ई खोल लिया। पाठती रो मोडा बम हो जिन्नो की कम दुवतो
जाव हा। मू अधार मून वीय कोनी हो, वाल प्राणीजी कानी। कम पूपर
ज माताजी री करी जण साठा प्राणा करी।— ज माताजी री चरी जण साठा प्राणा करी।— ज माताजी री

104 ਸ਼ਾਮਕ

राण न देखकर बाराजी भी हो अर नराज भी हो। घणा दिना स् घर पुग्य न देखर मगन ही, पण माजीसा रा बोळमा मू भास्या रा तबर बदळना जाव हा। लुगाई लुगाई न देख सक पण सीत न कोनी देख सक, भर सीत र साग मूठा गोटियारा रा ओळमा । मोटियार वर वाळवा रो जेव इसो पको रिसती है जिको सदा इ साग रव अर लुगाया आ दोना सु सदा परेमान रहै।

107

नाद भानण नारणो हो। तारा विचारा सा निकरान सियोदा हा। जठ रा भूनो चाद पादणी सू मुक्तकरान हो। धोरा माथ पहचोडी चादणी सोन उपू नमन ही। दूर दूर ताई सोतिनया धोरा सोन र पाढ ज्यू लाग हा। ठडी चातती पुन सोन र पाडा माथ परस्या देवती चात हो। योरो माथ बच्चोडी लरा इया नाग हो जाथ सोन र समदर म तरसा उठती हुन। नितो आक्यण है आ घोरा म किती नि स्मुब अपनायत है आ घोरा में!

आपी रात तार्दै राणी सूत्री रवा। वछ उठर पाणी पीय न साड माप शीण नसी। सारहरी पाणी मू छलर वासी। अर दुर परुची। ठवी रात मे राणी हैत रो हुलाल किया चालतो जाब हो। मारण में दिन उनम्यो। आखी दिन चाल्यों अर पाछी विमुज्य न काम्यों तो ई राणी तो चालती ई रयी। पदी केक रात गया गांव वन पूर्ण्यो।

नुव माथ भीड हो। मोटियार लुगाया पाणी से जान ही। मोटियारा र सिर माथ पोतिया बध्योडा हा। ठाकरा न युजरधा न पनर बीस दिन हमस्या हा। अरेक महीन रो मान राखणी जरूरी हा। इच बासत गाव-माळा रात न पाणी भर लंबता अर दिन संघर रा छोटा मोटो क्याम निमटायर माजीसा क्न बठण न जावना । इण कारण कृतो रात न देर ताई चालतो । दिनूग सासरा र पीवण वास्त पाणी कोठ माय सु ई दियी जावती। गाव रो धणी गुजरायो हा । सगळा काम वद हुवाया हा । व्याव-सादी गीत गाळ गाव मंकी कोनी हुवतो। यन बेटी अर वह र पीर सासर आवण जावण माथ ना तो ओळपु गांभी जती अर ना नोई बधावी । बाव रा सपळा मोटियार भदर हुयोडा हा। लुगाया पकी ओडच्या ओड राखी ही। कूद कन राणी पूर्यो जण सगळा उण र कानी देखण लागस्या । राण न अचभो हुयो—ओ बाई ?सगळी बात रो पतो चाल्यो क ठाकरसा न गुजरधा थोडा ई दिन हुमा है। उगर पसी रासमाचार की काचा हा। इण वास्त उण भी आपर साफ माथ सोग री निसाण गमछी वाथ लियो । बूडो साची रोयो ई । स्रोगा धीरज बधायो । मूढो घोयर पाणी पीयो बर साढ न पाणी पायर घरा पृग्यो। घरधिराणी अबार अबार ई माजीमा स मिलर आयी ही।

106

माभळ

राण त दलकर वा राजी भी हो बर नराज भी हो। वणा दिना सू परेष्ट्राय न देकरमणन ही, एव माजीसा राजीळार्म मू आक्ष्यों रा तबर बरळता जाव हा। गुणाई न देव सक पच सीत न कोजी व्यासक धर सीत र साम फून मीटियारों राजीळार। मोटियार बर बाळमा रोजें कर सेता परे रिसती है जिको सदा इसाग रव जर जुणाया वा दोना सुसदा परेमान रव।

107

नूई समस्या

राणो दिनुष मदर हुयन अणमण मन सु कोटडी मया। मात्र रा मूडा बडेरा दो च्यार जणा बठा हा। परवार रा ई स्वाणा आदमी और बार सु आयोश मोदियार कठा हु। सपछार चचर माय मुरदानती ही। ठाकरा र बेट भवानीसिह न ठाकर बणाय दिवा जिको हाल कोई क्यार बर स्वार हो। पुराणो कामसार बन बठो ममाना सु बारवा कर हो। मन में केंद्र राषी हो केंद्र पूणो कामसार बन बठो ममाना सु बारवा कर हो। मन में केंद्र राषी हा केंद्र पूणो कामसार बन बठो ममाना सु बारवा कर हो। सन में केंद्र राषी हा केंद्र पूणो काम ममाळी भात रा कीन हुव। राजी हुवणो अर हुवणो साग ई बध्योडो है। सण कर दुसमण कठ जासी? अतो वठ ही रसी जठ दुनिया हुसी। राण न मूडो छतारमा बदल न देख्यो अप केंद्र या री झास्या मे एरस शायम्यो जर बेद्र या र आहू। अवानीसिह भी बाद र भायन न देखर राय कथी। राण वच न छातो मु सवायो अर सगळा सूज माताजी री करी सर कन बठायो।

दिणमपुर सू आयो को स्त्रो कागदार नन हो। बोल बतळावण ह्यारी जण हुने मामदार बोल्यो—जनवाता री हुन्य हुन तो हु अरज करू। धानानिहिन्दी कानी देखर बणा रा भून हुनारी जापर आणा बोल्यो—मिनमपुर सु हुन्य आयो हुँ के राणीओं न ठावर अवानिहिन्दी रा सरसल नियुक्त करपो है। अर राज कानी सू बाधावास र ठावर साम बीदाबादी री देखरेख करपो है। ठावर समानीहिन्दी राज हिनो कर राज हुने राज करपा हो। ठावर समानीहिन्दी राज हुने राणी हुने राणी हुना हुटत राण माम अरू नुई जिमसारी री बार पर्यो । यार पण्ड इनकर कर तो दिया न अरु के नीहिन्दी कानी हो। अर मजूर कर तो है विच र साम, अरु पण्ण बाळो हुण हो? नुस बादेस रो चाठण करपणो है—

जिको बो मरतो मरतो ई करसी । आल्य र साव हो मरमी । आ सोचर बो चुप हो ।

आलो टिन बठक में ई युजरम्यो । मिलण भिटण माळा जावता जावता रवता । नव आदेश स् वतवो और बघग्या हो । राणा आख दिन सगळी बाता मणतो रयो। सावतो रयो नृव जीवण र विस म। भायला गयो परा अर जावता जावता आप री जिमनारी उण र नावा माच नापायो हो। ना ता क्षत्र म जीवण दियो कर नामरण देसी। राणो चुप हो। घर न नेसर गाव न देल्दर अब रोव तो क्लिंगर आन ? राण र सामन घणी समस्यादा क्षायगी राज परवार री। राज परवार रा केई छोग राजी हा केई नाराज हा। यात लगाया जिक बठा हा व निरास हुयन कोई बसेडो सडी नी कर देव । राण न बडो साच समक्तर काम करणो हो । सगळा न साग राजर बीदाबाटी कानी जावणो अर राज परवार मू बोलो रिसती राग्नर ठाकरा रो मान ई बघावणो हो । इल वासत राण न आप रा विसवासी अर विसवास पाती दोना न परलणा हा । हाजरिया सु सावशान रवणो हो । सगळी बाता न गराई सुसीच समकर राणो इण नतीज माथ पूग्यो क ज सगळा न अठ बठाय लिया तो घर हाण र अलावा और की नी हव । सला सत करन जिया ठाकरा र साम मोरच मू आया हा उला न मोरच माथ जावण री सला दी। इण बात रो सनसो वित्रमपुर र राजाजी कन भिजवाय दियो । और बाकी रयोद्यान आप र साग बाघावस र ठानरा रून जायर बीलावाटी री सुरला रा काम सभाळण रो समाचार भिजवाय टिया ।

सिह्या पड राणे माजीसा कर मिलव वासत गयो। उणत पता साळ में बठायो। एण सगळी वासा माजीसा न विमतवार बता हो। सारी बाता हुयमी जग माजीसा नोहसा— प्रतुत्तवाणी न ये बळ वय मेल दो? स्पर सावता ई ठानरसा थाम पापारवा अर राड किमरो पेट राल राइने है, बा आएन और है। इल बाता इलारो इत्तवाम करो। गण्यो आ वात सुजार मरणाट में आवत्या। जूक विरुद्ध आवतास दियों व आप निणी वात री राणो दिनुण भवर हुयन अणमण मन सु कोटही ग्रामा। गांव रा मूडा बहेरा दो ज्यार जणा बठा हा। परबार रा ई स्वाणा आदमी और बार सु आयोश मोदियार बठा हा। धमळां र चरा माण मुरदानगी हो। ठाकरा र बेट भेवाभीसिह न ठाकर बगाय बिटा हो जिले। हाल कोई ज्यार बमरे स्वार रे हो। पुराणो कामवार कन बठी ममाना सु वास्त्रा कर हो। मन में के दिरा हो। हो हो। हो मन में के दिरा ही हो। हो माम में के दिरा ही हो। हो माम में के दिरा ही हो। हो हो माम मिळी भात रा छोग हुव। राती हुवणी अर हुवणो साग ई बच्चोहो है। सण अर दुममण कठ आती? अतो वठ ही रसी अठ हुनिया हुती। राण न मूढी उतारचा बवत न देखों जण कदमारी साल्या म पर सायस्त्री अर के क्या र आहू। भावाभीसिह भी बाए र मामल न देखर रोप पढ़िया हो। एवा न छाती मूं लगायी अर सगळा सूज नाताजी री करी सर कठना है।

विकामपुर सू आगोदो उनो कामदार नन हो। बोल बतळावण हुगगी जण मूखी नामदार बोल्यो—बनावारा रो हुन्य हुन तरी हु अरण कहा । मवानितिह्यी नानी देवर वणार प्राप्त नुहनारो जाणर आग बोल्यो— 'विक्रमपुर सू हुन्य आगो हैन राणोखी न ठानर भवानीतिह्यी रो तरसक नियुक्त नरपो है अर राज नानी मू बागावार र ठानरा साग बोशावारी री देवरेस नरपो है। ठाकर प्रवानीतिह्यी राजी हुनो अर देवें भाई सम बेराजो हुना। दूदत राज माय अंक नूई जिमदारी रो आर पहची। राणो उनकार कर तो विणा । अर नोई हुक्स देवण आळी है कोनी हो। जर पणुर पर तो देवर राज प्राण्य आळी हुण हो? नूव आदेश रो गळण करणो है-

जिको बो मरतो मरतो ई करसी । आन्का र माग ही मरनी । आ सोचर बो चुप हो ।

थानो तिन बठक म ई मुजरम्यो । मिलण भिटण माळा आवता जावता रवता । नव आदेश स् इतवो और नघम्या हो । राणा आख दिन सगळी बाता मणतो रया। साचतो रयो नूव जीवण र विस म। भायका गया परा अर जाबता जाबता आप री जिमनारी उण र काथा माच नालग्यो हो । ना तो चन मुजीवण नियाक्षर नामरण देसी। राणो चुप हो। घर न नेलर गाव न देखर अब रोव तो किंण र आग ? राण र सामन घणी समस्यावा भाषगी राज परवार री। राज परवार रा केई लोग राजी हा केई नाराज हा। यात सगाया जिक वडा हा व निरास हुयन कोई बसेडो लडो नी कर देव। राण न बडो साच समक्तर काम करणो हो। सगळा न साग राखर बीदाबाटी कानी जावणी अर राज परवार सूचोखी रिसती रागर ठाकरा रो मान ई बघावणो हो । इण वासन राण न जाप रा विसवासी अर विसवास भाती दोना न परसणा हा । हाजरिया सू सावधान रवणो हो । सगळी बाता न गराई सू सोच समभार राणा दण वतीज माथ पूग्यो क ज सगळा न अठ बठाय लिया तो घर हाण र अलावा और शी शी हुव । सला सूत करन जिना ठाकरा र साम मोरच मू आया हा उणान मोरच माय जावण री सला थी। इण बात रो सनेसा वित्रमपुर र राजाजी शन भिजवाय दियो । और बाकी रमोडों न आप र साग बायावस र ठाव दा बन जायर बीनाबाटी री मुरम्बा रा काम सभाळण रो समाधार भिजवात तियो ।

सिक्या पढ्या पछ राणां मात्रीसा कन मिसल बासन गयो। उत्यन प्या साळ में कठायो। राण सपळी बानां मात्रीसा न विनतवार चता नो। सारी बाता हुमगी जल मात्रीसा वो या— मुत्तराणी न ये ळठ म्यू मेल दो ? इपर आवता ईठावरसा धाम प्यारच्या कर राड विचारों पेट राख राख्ये है आ आरत कोट है। इचा वासत इचार वासन नरो। राणों आ बात सुजर गरणाट म आयग्या। चून निन्न आम्बासन नियो व आप विनो बात री िक्कर मत नरा समळो इतजाम कर नियो जासी। राण रो मन तो उचाट हुयम्यो हो अर का न्छा हुवच साधी क अवार दा अवार धनती सू मिनू। पण सारता सूथचण साइक को दानी वर सबयो। चुपदाप उठर घर आयमो। रात न धरियाणी घवाई घोचा वरघो क इसी नाई बात हुयी जिंकनू पारा चिंत न्ता उनस्य है ⁷ धानीता को वय दियो वाई 7 था राणा क्य तो वाई नव ? आपरी भूत आपन ^क सताब और खुसर कव तो लोगा म झ्साई हुव।

िन्य गया धनकी कन मिछण साक गयो । गौर म बीन जेर अपूपडी दियोडी हो जठ वा आपर भाग मरीन पडी ही । बखत रो इतजार कर ही । उत्तर कर माय पीळास लिया क्षेक गरी अवसान भनक हो । पेट आपर पीरव

मू ऊचा हा। भाग्योडो काल आज बतनार हो। योवण रो बास्म सतीय गरा निलरतो जाव हा। पण चिता रो उणीज तर श्रेक गरी रेला तगर चर माय रम हो। राण न देलर भूपढ र बारण सार ययटो कार दोकी — आया। राण रा पण परती सुधियण जागया अर शीभ ताळव स। युक

रागरा पन भरता सू । चपण जागणा वर नाम ताळवस । यून गिटर बोल्यो — आ काई?

ओं आप रो न्योबाहै जिनो मोगूहू। पण इतो ?

जं ठाकर रवता तो भार दी जावती।

, .

पग काय री? महारो नोई अस्तित्व काती। म्ह शुलान हा। म्हार क्रम रूप प्रत दित स्हारी कर रख अरब जब्द भूक स वट भारी हुय जाव तो मीन कन पुनाम री जाव का निराय नियो जाव। दानु व्हालत प मीत र सन जावना है। ज कोई स्थाना हुव तो विकान राज मद दव। नाव निजी रो चान अर भीय कोई! था भाग रा सेक है। सरीज द कोनी अर जीयो भी कोनी जाव । ऊपरलो जद सुणसी समळी बात हुसी । अर धनकी वसन्या फाटर रोवण लागगी।

राणो आम बघर उणन बोली राखणी चाव हो, पण पम उठर पाछा थमग्या। सोचर बोल्यो-- घबरा मती। सगळो व्याजाम कर देस् । था

कयर पाछो आयग्यो ।

सारी द्वारी राणो आवण जावण आळा म अर कामनार म बाता करनो रयो जरूरी काम सलटावतो रयो। रात न पाछो माजीसा कन आयर धनकी न पाठी भेजण री बात कयी अर लाग री सगळी «यवस्था करण री बात बतायी। माजीसा तो बाही चाव हा कथी पाप अठम्टळ। अेक

गोली ओछी ई सही । दो तीन दिना पछ अक दिन तहक ई उण लागी बस्ती म धनकी न

पाछी बाडी कामी भिजवाय दी।

अणजाण्यो मारग

हाथ लगायर तिनाइ अर जाल्या माघ हाय लगायो। आल्या आंगुडो मू
छलगी। बानी शंसी पाछी बठर हालण रो क्यो। क्ली बाल पदी। पत्तरी
आपरी छल्योडी आक्यो सूल्या जाज हो। रोपी तो कोनी पण बाली को
मानी रमें। मे पिनी रहत्यमध्ये हैं 'यदा कठ ई हुयी पछी कठ हो। आयी
विणी र साग हो। स्थान कामी हुयो पण साथ गोवण आळा बोहुळा जणा
निरळ्या। अर अय जाव करई हो। ना तो आग रो पनी अर ना सार गे।
कुण हुण आसी हुण हुण जानी कोई कयदी अर काई करसी? स्थान ता
हुया पता ना तो पीठी हुयी ना बनने वणी। च्यार सहस्या साग धूमी!
मादल म होशा हीशा | आल्य स सानु आसीस्था। रीत रो रायता हुयो।
अर पट स्थान हथागो। गीत घणा ई गाया है अर गानवी रमी। पण

गाव री सीव पार वारी जिल सूरज लाम से मांकण लागायी हो । धनकी बली रुकायर हेठ उसरी । सोव कानी देगर साव र संजक्ष री पेडी र

जर पट क्याव क्यायो । बीत चणा है शाया है अर शावती रसी । पण
आयो सता री सुबदी अ
तयो टीक्को साव सूटाल सीन्य बार्ति । रा सुबदी ना तो करन आयो अर ना वर्ष्ट भूण रत मान गुलस्या। जीवण वितो पर्णित है। नालो कै जिले रात दिन बबतो रव । मरजी म आव जिला पळू पणी यो नव । मा न वाए। पनकी र प्रात्मया फाटण सागगी। गलो पाडर रोय ईवोनो सती। बाळजो पाटतो जान हो। ना मा ना वाए। पुण छाती मूचिपाव कुण गिर माम हाथ भैर, कुण उणर दुल न बदावें ? ना जबरी आळा माटियार जिका ई छाता सूलगायर ६ळकी कर। सगळा मुलक्या यार है। ज धनकी तूपबाई नी हुबतो तो काई सामर सूनी रवती ? यार जिना निसो अवसरपा पडणा हा? ज म्हारी मा आ पूल नी करती सो कितो आछो रवती ? पण आ पूल जण री को ही नी। हरेक जुगाई चाद क दामा वण मोनियार सूमा वण। ज वो ससी करपी नीकळ तो आडोसी पडोमी सूवण। अद २ण स्वारण र नारण ई उणरी माटी पलीत हुंब। वासमळी बाता न सहन कर किण बासत, मात्र सतान बासत। बा सुरफावणी तो बाव पण पूल देयर।

धनकी सोमती जाव ही, गाडी भावती जाव ही। आ ही जीवण री विडवना है। आ ही भूल म्हारी मान री अर आ ही में। पट माथ हाय फेरती सोम्ब्यी। सरमावती पको उठायर पाछा छाती अर पेट माथ होळ नक रार्या। हुन र असहा बर से अम मुळन ही, जिकी मरपा पछ है सार रही। ना राखती। फलाणी री डीन री है, परणाणी रो बीन री है। किती घरत, किता हुल अगबुक्ती अपमान आ सम्ब्रा प्रावत पिकट आपरी बीनाद न देवची वाब राजी राखणी मान, दुला मूं वित्तमणी मान, अपण आपन पुनर्जीवित करण साथ । आ जात किती निकरी, दुल्या माम पळणआळी, परायाहा परणआळी, किती ओछी है। किती खुणिनजा है स्तीपी है, जे कोई थोडी सो सारी देव तो चण माय कुरवाण हुम जाव। अने हुई हिसी नोनी महार जिसी पणी ई है विका रो जीवण महार सु और ही घणी सराब है, नीची है।

मूरज रा घाडो दोडता जाद हो, वली रा पहियो चालतो जाद हो। बली र होक माय राम्योड घड रो पाणी मच्छकतो जाव हा। वली र भरक साम विचार दूट हा, ठर हा। सोर मारग साम पाछा चालण लाम जाव हा।

जलमी जण मान देखी। बाप रो नाव ई सुण्याका। जण नाव सार समभ्रमण लागभी ताकई नाव सुणी या। बसक्याफाटती आवाज सुमान वाप रानाव पूछपो जण दो च्यार गदीड पडणा। आस्या सृ आसू भरण लागमा। पूछ फोरन मा ईधीरज झोडण झागगो हो। घननी तू जेक सबाल है जिस्र राजवाब नातो चारी मा कत है, और ना चार स्ता देखारा रो उत्तर देय सक है, पण वा जन्म है। इस वासत चारा सवाल चार लाग ई जासी। अर तू विना उत्तर ईमरणी। किती वडी बात है स्ति ओछी यात है। और धनशो मन मन से बोली---धनशी सूबा सम्ब्रा सूपर है।

धननी साच ही—म्हारी औताद भी ह्या हो बायू रा नाव पूछती रसी

काई ? नहीं नहीं । हु ज्या रो पड़ तर देनू बतालू देखा सू मिलायू। ओ

है धारा बार । हू निरस्कत मोनी। हुम्हार बाम यू स्वित्य ती मोनी। निकास, भी

साम करपा है सोच समक्रफ रूपरों है। सेक नूबी सवाल फर उच्छर सामन

स्या सक है ? पण आगली इच बात न मजूर करया कोवी? अर सो ही सबाल

यण बार सामन इज कप न आयो स्वय तुप्तवार रोव ही। येट किण रो?

स्या रो पड़ तर आज ताई निजी न दियो नोनी। सामद लुणाय ही कोती

निज्ञ रो हैं गुळनर क्यो—कोई खुवाई हती सणवाण कोनी हुव। बा

माब सताव चा नहा जा बात हुसती है। होधा रो जाय है सम करणी, अर

द सम र नाव माय ई जीव। धर धनकी । तुक्य सक्सी? नहीं नाई। सु

दा दिना ताई वली चालती री । चननी बादा म बकती रयी । यादी सान पाणी पावती रयो । काळी दूषरी बन बसी पूणी जित तारा सू आभी तमात्रक मरीजप्पों हो । आख दिन री तबती मिटवी हो । ठडी पून चालण तागगी हो । जीव सोरो हुवण नामग्यों हो । जीवण सो ताबो मारग ठरती सा लाग्यों अर इया मातम पडण लागगी क बीवण रो विदाराम सठ हो है । तारा म उमरती आलाग गया पुण सो साबी हो । और धनकी विचारा म खावाडी हरारत मू वरैसान हुयोगी गुफा कन पूरी जप बावाजी पूणी कन वडा बडा रोटियो लाव हा । बतीवान सगळी बात बतायो, जप बावाजी बोल्या— बा तो हुवणो है हो । रात भर अठ ई विसरास करो । दिनुत बाडी नानी चल्या जाया । चोडा ठर न बाया— हाडी म आरा क्यों है, रोटपा बणायर सालो ।

नहीं मारगम लायर दुरघाहा।

धरम री भोजाई

धननी मोवणा चाव हा पण विचार सारकी घटनावा कानी दौड हा। ना तो बारो अत हा अर ना नाद ई लवण देव हा। आसी रात तबण्डावती रधी। वमवाडा गोरती पत्नी। साचती रखी। आज युवर्च नहीनते पत्नी जण वा अठ आयी ही जण जवानी न ठोवर घारती चाव हो। दिन्ती बहिमुदी ही। युद्धाम आक्ष्यण दीखती। आज आज बावणळी बातो मृनिती हर हुवती जाव है अतमुक्षी हुवती जाव है। कानांच सवळी आवाजा आवणी बह हुवती। वाण बार रा समळा हता आवणा बद हुवत्वा हुव। टावर दी हितकारी रात दिन नाना र कन गुणीज है। बावण्य भेळी हुव न पेट म बहाया है। ओ नीवण नुवो है का जीवण दी नुवे विवस्ता है?

काल रो भोग आज नृव ीवण रो मारय वयता जाव हा। वात ताई हा जिन काम न रात दिन भोगणा चाव ही उच सु हा आज मन मण्रत है। म्हारा वात लारती समझी बाता न भूकर तोतली अवात म सुवारी चाव है— मा तु वह है ? जा आल्परा म किता ममस्य है। किता आण्य है। किता से लाती है। आरामी एम मारण माथ चालती चातता लतन हुत जात पण आण्य कर्दर लतन कीनी हुत अर ना इण सु न वह पेट भरीज। आखी रात एम आण्य रो नार्र म मुचरणी। आरती री टाली टच टच मुणीजी जग धननी पाछी धरती माथ कात्मी। हार न उठी अर जीवच रो धारण स्वस्थ राया करण स्वस्थ रो धारण स्वस्थ रो धारण स्वस्थ रो धारण स्वस्थ रो धारण स्वस्थ राया करण स्वस्थ रो धारण स्वस्थ राया करण स्वस्थ रो धारण स्व

घोळ रापार ताई वास्ता रया। बाडी वन पून्या। बाळी बाळण मूळी, गाजर कादा सगावण सार अमीन साफ करन वयारघो सावळ कर हा। टाबरिया तबहरूत बारता फिर हा। आ सगळा न देवर अपभो करघो। अवाणवन घोळ-दोफार निया जाया? वितय समळी वास समफायी। राण र पाप बात दिना मुपूर्ण से समाचार दियो वर इता दिना साह बासो पायण से बात कथी।

धनके सूजन माळण री रात न बात हुधी बर पन भारी हुवण रा मासप परचो तो वी बाल्यों क पनकी दुदा री पोण्ळी है। खुगाई, लुगाई रो दरद समक्ष। आपरी घरम री नणद बणायर रात्नी अर हुती, जिसी चाकरी करण रो आवतासन दियों।

भागतो-सो थोमासा आयो। दो ज्यार बृदा नाथी अर भागमो। बापसि हिसाना मोठ बाजरी सवार भाग तागर खेता म नाथगे हो पण मुसादा मारती जारध्म वाशी त्रज्ञ म सगळी थान उठमो। वेदा रा उक्तरा है साक हुमामा। जेठ सो तपतो ताथड़ा भादव म ई दिन भर बाळवी करती अर रात न पड़ती सामोड़ी ठड़। सावण से बाध्या वाली कोमी रोहिण नवत तथों कोमी जण विस्ता कठ । बाळ ये हुस्ती साल हो। वर्षा इत्या उत्या हाता हो से रा पुरा इत्या जाता को काम हो। पण करचा काई जाव ? भगवान हो बरी हुस आद । स्वर पत्र दिन साहद अर्थी जाता हो। वाजळी तथी नकत्या है। साम तथे वाल साहद माला भागमी हो। बनत भागती रथी। भूसा परत करसा रा सरभोड़ा माईता रा सराब आयमा। जीवता ही जठ भूसा मर हो बठ परपोड़ा न कामोळ हण पण हा है।

नुष्ठै सुरण सामा है। ता है चारण वासती है। अैक को स्पारी, जिसी है मिलि विशेष हो। उरादी पड़ण कामारी ही अधिकारी अध्याण कामारी ही। विशेष वा कामारी ही। विशेष वा कामारी ही। हो कर की सुरान तो सगळा मनावण कामारी हो। विशेष हो। येद की सुरान तो सगळा मनावण हो। पढ़ती। मुन्दा नीपीवण सामाया हा। फाडण फड़रा लागी दो। पतानी रा दिन नवा आवता जात हा। की नो तो नवा का कर उकर मुं इस्त मा सो। रे विशेष यो सो सो। अर उत्तर सू मुबाड। राम निमाब जियो ही निमसी। धनकी पणोई कोनी नवाणों मातवी ही वण, केर दिन कप ही दियो। माळण चण पाझा पड़तर दियो क जहर सामार, जो जर से जल कर सी वात त्या दर है। वर से सा जल है। वरा सामार तो सा ता दो सार माई रा होग पात है। जर भी आर सा जल पासा है। वरा हो सा तो सार माई रा होग पोड़ सा तह है। वर सी मात हो सा है। वर्ष हो हो हो हो। है।

117

शरद पूर्य आयमी। मतीरा न भगवान ईतानता रवन्या। सीर ६ पूरी सी मिली कोनी। समै रो प्रमान जाणर समळी बात भूलणी पर। भगवान इणरा अपवाद कोनी। निन छोटा हुवण सायस्या रात बसी।

लान सी दूथी, सान थीया ई चस्या। सहमा यूजन हुया। मुसाझा म दीया चाली तर जनमपाया ई नोनी। मूचनास्त्र समळा ई रूप्या। मैदी सागी, तण उपरी महरू पूटी ई नोनी। आंघळ्यां रा पेरली मास ही लात निमान मांडर सूर हो। मोरयनजी नाय मूपूज ? बोरिया ना नाचर नी, सिटी नी। चपागीरयनजी जरूर पूज्या जाती चान की मा हुनी। शीयों भी चमला, साथ बाट आसी नरन ई चसाब। नाम समळा ही नरिया चया जीर कपर रूर। मनती र निज वयु ज्यू नहां आब हा चिता वयदी शास ही। निम करणी माई जात ? हुगी है जिनी हुसी। सराजान समळी है हुब हो, वण पनती र जी म सानी भी नी हा। समळ वितो मास है। नोई समक ही नोनी। सननी रा नाम पूजा नू घरता जाव हो। सब नोई सुख हो, वो नोनी। पराय पर म दुष्ट झं लातर नाज रासी है। विचार आपरा है चलो न कीया राख हा सारी ससार पोली शेल कर बुरा राल की समळा बुरा शैल है। नासा कीई बुरो है ना कोई भनो। समळा आदमी है। बीला भी सान, पण धीरज कीया सान नोनी चाल।

भेर निन राज रो भेषाडा आदमी पूछता पूछता आयो। समकी साता हवण मूरोटी लायन पाछी जावण री हाथोहाथ ही ध्यारी करता शोल्यो—मन राजा विशेष पर काम मू नेज्यो है। बांव तो विक्रमपुर गया न दा वाई महीना हुमणा है। मन भी काई दीयाकी क्रम अठ पूर्णणे ही पण जर री ना आवग मू लाय को सक्यो हो नी। यन मारप जावती के के पोहर नादर साथो हूं। आदी माय सूरोक्ड माडद दिया क बखत बेवलत आहा आसी, ज राजाओं नेज्या है। सवार चत्या गयो अर वो यनकी रो अंव मार उतारप्यो अर दुओ हाजी मोप नासच्यो।

बीदावाटी

राहुकम नियो। जठ ताई तळाव नी वण जिपया जप करण न लाग जाव।

कनाळी बीतमा। सीमाळी आयमो। बाही छाटचा पहण सू भी बणो । बादमो । का दिनां म ई सदेस मिल्यो क तब ई र लाट साब रा लास आदमी वित्रमपूर हुवतो पठानगेट जावलो । उण री मुरसा रो सगळे इसमाम कर दियो जाव । इण वास्त बीदासाटी गानी से गोड बादम्या न पाछावित्रमपुर दुनाय निया । राणो भी शाव हो । सागीदित सरदी परव लागलो जल लाट साब रो बादमी आयो । सरदी में उलारा दो तीन आदमी निया मरता मरप्पा हा। साट छाव रो बादसी हो वल सू वित्रमपुर रो कावड सू निकळर आग जावणो थाव हो । राजाजी आपर नियसपारी आदम्या साग हिसार ताई अग्न पुगावणे री स्वसम्पार दो । राणा नी आदस्य रोजे मारा गणक हो। हिसार सू पाछो वित्रमपुर आयो जिन ता पोइ रो महीनो उत्र एल लागया हो । राणो विक्रमपुर सूपांधा बीरावाटी हुवती काळी दूपरी र बावाजी कन पूर्यो ! बाबाजी कन कई बाता हुवी । दोकारी सगळो हुताया म निकळारो ! राखो रात भर बठ ही रखो । रीया वाती हुवा पछ रोटपा बगावर केवण सागम्या । बाबाजी बात सार खणायी क आज सुनू बोहळा महोना पती सूद्या ई बठ आया हो । छव महोना रा बीमार सो साग हो ! हा !

हा[।] भाजकी करकक्षाग है[?]

फरन काई हुता यणा अळूफता जावू हु।

अधाराकाम अळ्भ बाळाई है।

🛛 तो कद ई को अळू भता हो नी पण भगवान री गरजी।

मूडा चारा मरजी ही जण का सगळा नाम हुयो।

म्हारा मरती ? अवभा करता राणा बाल्यो — हू किसा विश्वमपुर स इण नाम मृही चाल्या हो ?

त् चाल्यो तो ठाकरां रो नाम नरण साक ई हो। पण दीच मधार मन मारग छाड दियो। आग बाबाजी बोल्या— व ठानर ना मारमा जाता ता घारी लाल उथक को जाता, पण थार आग सारा दे दिया।

कठ ? हाल ताई ता विधा ई सटकू हू । ज जो अन्मट नी हुवतो तो सन काई वायन आव ही क राजाजी र काम माथ इतो चूमता। सास साथर राणो बोस्यो— राटी-पाणी इ स्टन्ग्या।

यार मन म सुधार ना हुनी बठ ताई हसर बाबाकी बाल्या— थणी फरक को पढ़ ती।

राणा सरमायर जुब हुबन्धा। राज्या नाहर खाखा। पाणी पीया।
गुद्धा म सोनगन चन्या गया। याडी ताळ म नानानी नरी जीद म चन्या
गया। राणी चित उठघोडी सो पसनाडो गरेखी रथी। रच्छ ई पननी दीख
ही नगई परिवराणी। जा दोना र बीच चित आत हुबोडी सो राप्त मासी रात पूनतो रखी। बाबानी वेगा ई उठर पूजा नरण खातर बगदी चाना गया। दिनुत तोई सामी बाळस मरोहती रयो। तावडी सामीडी चडायो जण त्यार हुयर बाडी कानी चाष्ट पढ़ना। बारत मं सूचना मिला न रिवारी लूट मार करता सम्मबाटी ताई आयम्या है। राषो रो आग जावण रो मतो उन्त चूक हुवज लावच्यो। पण किया हो बाढी तो गयो परो पण बठ भी कोनी लाज्यो। हारल गाव गया।

गांव म घर पून्या जच उच ज पठा चास्या क धनकी र बीकरों हुयों है। राचों राजी हुयों। पच्च लेक नृतीसमस्या उच र सामन आगमी। राजवात रत्यो। वितृत पाखे। दुर पडव्या। लाख दिन पोहर रास ताई चासती राज चौकी पूर हासकार पड्ड्या जच्च विडाच्या री सूचना मिली। मिलकपूर पकी

चोडो पूरार हालचार ज्वच्या ज्वा चिडारिया रो सूचना शिक्षो । विक्रमपुर पर । मूचना त्यर सनेता भेगणा जब्दरी हा। हुतर निव पदम आदमी मूचना लेपर आयग्दी। ज्या राजो टोठो बचायर विश्वपुर वानी चाल पडणो। विज्ञमपुर आयर ओ सनेशो राजाजी वन पुरायो जिंत तो पिंडारी

सरदार रो न्को ई गुगमो। राजाओं केई निना ताई सोच विचार करघी। पछ अपगुर र सेठा र नाव हुड्या तिसार विडारी मरदार कन भेजी। सेण येण रा मामको बेगा मुळस्वा मेनी। उत्तर पहतर खाबता आवता रवा। ये महीना दण म ई निकळ्या। हार न पिडारी हुई। अपर शेलावाटी नू ही पाछा द्राया। जा नावर राज न चन वड्या। यत न पतो चास्यो क सार साव रा सात आदमी पठानशेट सू पाछा आवती वेळा विजयपुर उरमा हा अर राजाओं वा मू मदद मागी है।

पणिस म व मरोसी विरायर गया है क लाट साथ सू बात करण पह तर भेजनू । इत म पिदारी सरकार रो आवभी हुडी री क्षोठमी सेवर पाछा सामगी। जयपुर म एण नाव रा कोई सठ ६ कोनी हा । हुडी कोठो ही। पण साव र भरोम रो नमाचार सुवन सा रातारात है पाछी मिक्रमपुर पू पत्यों गये। साठ साव र भरोम नाव भाग कृष दिक्रमपुर रो आपना टळगी। दा तीन महीना म घटनावा इती तबी सू घटी क की पत्ती ही कानी पात हां क आग काई हुखी? ना राण म सोचण री फुरमत मिन ही। रात दिन पररो कर सो प्रमुत्ती रजान का पावो मारण री स्वारी म लाग्या रज्या। उठ सामन लाग्या। हो।

अतहीन अत

जेठ में विरस्ता हुयगी हो। इळ वाग दिया हा। साम म पणपीर घटावा तो कोनी ही। पण सोर चाल हा जिना कठ कठ कुँ मुदाबरी कर हा। वाजरी ता कोनी ही। पण सोर चाल हा जिना कठ कठ मुदाबरी कर हा। वाजरी ता कोने साम मुदाब हा। केई प्वार मान हा सर केई योगा ई उह हा। कुँ ह में गोड सुना पालर पाणी ही जिक में भीड का कूँ हा। भी बीग मीया जिनावर पाणी माप उव हा। बाबानी सोच हा को भीड का मा जोरदार जिनावर है जिको पाणी री बूदा मिलता ही जीवती हुय जाव। पाणी मुक्ता ई समाधी लगावर सेवर व्यूक्त जाव। उपणी मामा लगा है। कणई तावको बोर सू निकळ हो। मापा मापा हुमोडी कळाया। साल हुवती जाव ही पण जण पाणी री पुहारा पह ही व पाछी माय बडक साम जाव ही। घोडी ताळ म बावजा रा लार चालता चालता साफ हुवल लाम मा। आभी सेवरण जासमानी हुयर चमरण नामाथी। बावानी उठर गुका से जायर लुटी माय दिनय इकतार न जतार सियों अर कारी पे पर ती दिया में आसण नाम दिनय दिनय र कतार न

इण ता आंगणिय हेसली । केई नर खेल्या नेई खेलसी नेई नर खेल सिद्याया सली ।

दून री लरा र साम इक्तार री आवाज क्यारा कानी गूजण लागगी। सारी निदरीही जीवण री वस्थिरता म शिवान करण लागगी। वाबाजी मगन हमर आख्या मीक्या गावता जाव हा। पडपा चढ़त मिनलार पणार सहव मूबाबाजी री मसती हूटी। आस्था सोकर देस्सो ता राणो मोनी मे टावर छिमा होळ-होळ चड हो, जिया भाव सूबट पालणो सील हो। नक सायर राण डीकरैन कन वठावता उडोत करी। बावाजी इचरज मूछोर रामख कपर हाय फैरन आसीस सी अर राण कानी देखर बोध्या— द्या काई?'

धोलो देवनी ।' बमनया काटतो बोल्यो ।

काई ? श्रीरज देवता वादाजो बोत्या— जालती रयो ? जो ससार रो नंम है। नाम हुयो, गयो । डल मंडुल री नाई बात है ? थीरज धार। उण री निसारी न पाठ। घारा काम कर। बा आपरो काम करशी। पण बाबळा पत्नी बता हो सरी। काई बीमारी हुयी ?' बाबाजी री आच्या म ई पाणी आयायो हो।

रोवता रोवतो राणो योत्यो— है पिकारमा र वचर म पज्योदों हो। तीन च्यार महीना इण सन्दर्भ है लाग्या हा। इण्यु, पत्री अठीन जावतो आपन त्वाळा समाधार अगतावयो हा। एक मन की पत्रो कोना हो लाग्या हा। एक मन की पत्रो कोना हो लाग्या हो। हा विकमपुर सोनी तेयर चर्यो प्यो हो। हा विकमपुर सोनी तेयर चर्यो प्यो हो। हा विकमपुर सोनी तेयर चर्यो प्यो हो। वठ ही मन वह लाट लाव र आवगी रो सोनी मरीस रो मिन्या हो। वठ ही मन वह लाट लाव र आवगी रो साने सो प्यो हो। वठ ही मन वह लाट लाव र आवगी रो साने सो प्यो हो। वठ ही मन वह लाट लाव के वार वार लाव हो। राजाजी देवणो तो चाव हा, पण माम जूठी ही जिल्हो पूरी कोनी करी लाय सक ही। सोवी पटावण में बलत बोहळी लाग्यों। सलावादी ताई ज्याप साम साम ही उळायो।

गाव कानी बयो जल गाव र बार है मेडी बन गीन याज हा। हा भारत छोडर रुठ गंगल साक गयो। म्हारा तो करण ईपट्टमा। यठ पत्तनी न मेडी गाम नाग रानी ही। भोषां छिया म आयोडो हो। दोल जोर जोर स् बाल हा। भोषी सान्छा री जोर खोर सु माथ माथ माथ पाव हो। महारो भोयछी अर उजरी परवर्षणराणी छोग न त्रिया बठा बठा रोग हा। गांव राग दो जार

अतहीन अत

> इण तो क्षायणिय हेसकी ¹ केई नर खेल्या नेई खेलसा केई नर खेल सिषाया सकी ¹

पून री ल्रा र साग ग्वतार री आवाज ज्यारा कानी गूजण लागगे। सारी दिरोही जीवण री अस्थिरता म सिनान करण लागगे। बाबाजी मणन हुयर आस्या मींच्या गावता जाव हा। पडमा चढत मिनलार पमार खडन सूबाबाजी रीमसती दूटी। हासा सोकर देरमो ताराणों मोदी मंटाबर किया हाळ-होळ चढ़ हो, जिया इस बुठर चाकणो सीस हो। कन आयर राज डोकरन कन बठाबता इसत करी। बाबाजी इचरज सूछोर र माण ऊपर हाम फैरन आसीस दी र राज काली देखर बोल्या— इया बाई ?'

धोखो देयगी ।' बमनवा फाटतो बोन्यो ।

का है ? धीरल देवता बाबाओं बोल्या— चाल डी रयी ? आं सक्षार ो नेम हैं। काम हुयों गयों। इल में दुख री वाई बात है ? धीरल धार। लारी निकालीन पाळ। धारा वाम कर। बा आपरों वाझ करती। पण बाळा पत्नी बतातों सारी काई बीमारी हुयी ?' बाबाजी री आच्या मंई गणी आययों हां।

रोमता रोजतो राजो नोत्यो— 'हूं पिकारपार चनर में पत्योड़ी हो।

गित च्यार महीना इण सजट में ई लागच्या हा। इज्जमू पत्ती अठीन जावतो

गापत सागळा समाचार मुत्ततावण्यो हो। एछ नन की पत्ती कीनी हो जार

गाई हुयों ' छोरो इस पनर दिना रो हुयम्यो हो। हूं विज्ञमपुर सनेतो लेयर

स्त्यो गयी हो। मळ ही मन बढ़ लाट साव र आदमी रो छनेतो भरीत रो

मिस्सा हो। पिणारपा रो भूठी हुबी रा तगादो बार बार आप हो। राजाजी

देवजी ता चाव हा पण माग नुठी ही जिको पूरी कीनी करी जात सक ही।

सीदो पटावण म बखत बोहुनो लागम्यो। सलावाटी वाई जायर सगळा गाछा

आब हा जग ह सर्जुनोनोट जावज साक मारण माय ही टळायो।

गाव कानी गयी जण गाव र चार ^{है} मेढी कन टोल बाज हा। हु मारग ऐडेर बठ ³राण सारू गयी। म्हारा तो करम ई फूटम्या। वठ घननी न मेडी गाम नार रानी ही। भोषा द्विया म आयोग हो। । डोल और जोर सु बाज हा। भोषी सानठा री जोर जोर सु माथ माय माय दाव हो। म्हारा भायकी अर उणरी घरधणिराणी छोर न विचा बठा बठा रोव हा। बाब रा दो च्यार

अतहीन अत

जेठ में विरसा हुगगी हो। हुळ वाय दिया हा। आम मे पणपोर पटावा तो कोती ही पण लोर पाल हा जिला कठडे कठडे बूदावादी कर हा। बाजरी न नदी विरसा ई पणी। गुका र सामन वायाजी वठा हा। छोर सार्में का हा। केद कुतार नाल हा बर केदे घोवा ई उठ हा। कु म नाइसुणो पालर पाणी हो जिक म मीडका कुद हा। मीवा मीया जिनामर पाणी माथ उठ हा। वायाजी सोच हा जो मीडको भी जोरदार जिनावर है जिको पाणी री बूदा मिलता हो जीवतो हुन जाव। पाणी मुकता ई समाधी कनामर खेलर प्यू सुक जाव। जगरी माया जयार है। कणई ताबडो जोर मू निकळ हो। मरात माय हुयोडी अळावा लाल हुवती जाव ही पण जण पाणी री पुहारा पड ही व पाछी माय बठण लाग जाव ही। योडी ताळ मे बादळा रा सार चालता चालता साक हुवण लागमा। आभो अक्टम आसमानी हुवर पमकण लागम्या। वायाजी उठर गुरम से जायर जुटी माय टिगय इस्तार न जजावण लागम्या। इकतार द वाद साम जेव राण कादवी—

> इण ता आगणिय हे ससी । केई नर सेल्या, वई सेलसी वेई नर सेल सिघाया सली ।

पून री लरा र साग न्यसार री आवाज च्यारा नानी गूजण लागगी। सारी निदरोही जीवण री अस्म्य्रता म सिनान करण लागमी। वावाजी मगन हुमर आस्या मीच्या गावता जाव हा। पडया चढत मिनलार पणार सडद सूबावाओं से मसती दूटी। आरवा सोलर देरवो ता राणो गोदी में टावर किया होळ होळ चढ हो, जिया भाव सूउढर चालको सील हो। वन आयर राण डीकरन कन बठावता उद्योत करो। बाबाओं इचरज मूछोर साथ उपर हाय फैरन आसीस दी अर राण कारी देलर बोल्या— इसा काई?

'घोलो देयगी ।' बसक्या फाटतो बोन्यो ।

नाई? धीरल देवता वाबाजो बो या— वालती रयी? आ ससार रो नंम है। नाम हुयो गयो। इस में दुख री नाई बात है? घीरल घार। उस री निसाली ने पाछ। घारा काम कर। वा आपरो काम करती। एस बाबळा पत्नी बता हो मरी काई बीमारी हुयी?' बाबाजी री आस्या मई पाणी आसमो हा।

गाव काती गयो जण मात र बार ई मेडी कत तीन बाज हा। ह मारण छोडर बठ देलण साक गयो। म्हारा तो करम ईफ्ट्रम्या । वठ चनकी न मेडी साम नाल रात्वी ही। भोगो खिया म आवाडी हो। ढोल जोर जोर सू बाज हा। भागो सांजळा री जोर जोर सू गाथ माय माव लाव हो। हारो भायको अर उणरी घरषणिराणी छोर न नियां वठा वठा रोज हा। गाय रा दो ज्यार ज्या नन सहसा थावस बधाव हा। भोगो लून जूत जूतर जून हो। जर हाती साई चढरयो हो। बठ सूनीच स्तर हो नोनी हो। मन देलता ई समळा रोवण सामस्या। यननीन होस आव हा जाव हो। म्हारो नाव मुणता ई यनकी न होम वावक्यो। गुचळतो सावती नेति — आदम्या ? होर बानी नेतर बोसी — नमळ सिवा पारी मनाची न ! पेर हिचकी आयथी। सोम सावस्य बोसी — ईप म्हारी आवन अर इन् म्हार भाई म्हारी सफळी इहावो तूरी वर दो। च्या न स्वई मत जूल्या। सस्का आपनी मदस्या हा जिन रोवण सामस्या पेर महार कार्ति वेलर

मैं गोदी म उठायी जगर साम ई वा आपरा प्राण त्याम निया।

बाबाजी मैं सगळा कारज वरसा यण महारी वाळको मन छोड वियो, जिनो पाछी कोनी आयो। गळगळो हुयद राणी बोल्यो—'हु अब काई करू वाबाजी की समक्ष सभी आवती।

धावम वपावता वाबाजी बोह्याः— धनशी री शेक ई तमना ही मा वणग री अर वा पूरी गरनी। तु स्वारय सु भरपोबो है। वा लुगाई ही, अर जुगाई है रवणी चाव हो। आ इछात पूरी गरी। वणरी मातूम एळ धार सामन है। इणन धार टावरा साम बेटो कवर वाळ। बानी रो भारम कततीन है।

'ओ ही करसू। राण पडूतर दियो।

बोली-इतो जाय हा अंगर

सिक्या पडण लागगी ही। बाबाजी उठर वनकी कानी आरती करण न चल्या गया। षोडी ताळ पछ जिस्सोही से दूर दूर ताई टासी री आवाज सुणीजण लागगी ही।

